भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 296 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज गुरूवार 21 अक्टूबर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

'समाजवाद' से 'परिवारवाद' के रास्ते पर आ गई है सपा : पीएम मोदी

कुशीनगर (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी पर तंज करते हुए बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि वे राम मनोहर लोहिया की 'समाजवाद' की विचार धारा से काफी दूर हो गए हैं और 'परिवारवाद' के रास्ते पर आ गए हैं।

कुशीनगर में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन, राजकीय मेडिकल कॉलेज समेत कई परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने एक रैली को संबोधित किया। पीएम मोदी ने कहा कि उत्तर प्रदेश की पहचान केवल सबसे ज्यादा प्रधानमंत्री देने वाले राज्य के रूप में सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि भगवान राम, भगवान कृष्ण और कई अन्य महत्तवपूर्ण लोगों की जन्म और निर्वाण स्थल के रूप में इसकी पुरानी और प्राचीन पहचान और निखरनी चाहिए। प्रदेश में 'डबल इंजन' वाली सरकार की बात करते हुए उन्होंने कहा, राज्य में अब तक किसानों के बैंक खातों में 80,000 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि ट्रांसफर की गई है। उन्होंने अपराधियों और जमीन पर अवैध कब्जा करने वाले

> 'समाजवाद' की विचार धारा से काफी दूर हो गए हैं और 'परिवारवाद' के रास्ते पर आ गए हैं।

भूमाफियाओं के खिलाफ सख्ती और अब तक 12 करोड़ से अधिक लोगों के कोविड-19 टीकाकरण को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तारीफ की।

इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कुशीनगर में करीब 281 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले राजकीय मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास किया। उन्होंने करीब 181 करोड़ रुपये की लागत वाली 12 विकास परियोजनाओं का भी शिलान्यास व लोकार्पण किया। इनमें गंडक नदी पर बाढ़ सुरक्षा से जुड़ी आठ परियोजनाएं, स्वदेश दर्शन स्कीम में बौद्ध सर्किट योजनांतर्गत पर्यटन विकास, राजकीय महाविद्यालय सुकरौली का निर्माण, नवीन संकेत मूक बधिर राजकीय बालिका आवासीय विद्यालय का निर्माण, कसया-रामकोला व रामपुर खुर्द, कोटवा, घुघली मार्ग का चौड़ीकरण तथा सुदृढ़ीकरण का कार्य शामिल है।

दुनिया के लिए मिसाल

आज वैक्सीन की 100 करोड़ डोज लगाने के अहम पड़ाव को पार कर इतिहास रचेगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस के खिलाफ नौ महीने पहले शुरू हुए टीकाकरण अभियान में भारत इतिहास बनाने के कगार पर खड़ा है। भारत गुरुवार को 100 करोड़ डोज लगाने के आंकड़े को पार करने के साथ ही दुनिया के सामने मिसाल पेश करेगा। कोरोना महामारी के शुरू होने के बाद भारत को लेकर तमाम तरह की आशंकाएं जताई गई थीं। 130 करोड़ से ज्यादा की आबादी में सभी पात्र लोगों को टीका लगाने के मैराथन काम को लेकर भारत की क्षमता पर सवाल खड़े किए गए थे। टीके की उपलब्धता को लेकर भी आशंका जताई गई थी। गुजरते वक्त के साथ भारत ने न सिर्फ इन सभी आशंकाओं झुठलाते और सवालों को गलत ठहराते हुए अपने नागरिकों को टीके का सुरक्षा कवच उपलब्ध कराने की राह पर तेजी से आगे बढ़ता रहा बल्कि अब एक अरब डोज लगाने के मील के पत्थर को पार करने की दहलीज पर खड़ा है। भारत का टीकाकरण अभियान इस साल 16 जनवरी को शुरू हुआ था। पहले चरण में तीन करोड़ डाक्टरों, स्वास्थ्यकमिर्यों और फ्रंटलाइन वर्कर्स का टीकाकरण शुरू किया गया था। आक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका द्वारा विकसित और सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा उत्पादित कोविशील्ड और भारत बायोटेक द्वारा विकसित और उत्पादित कोवैक्सीन के साथ टीकाकरण का सफर शुरू हुआ। जैसे टीके का उत्पादन बढ़ता गया, टीकाकरण के सफर में विभिनन्न समूह जुड़ते गए। एक मार्च से 60 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों और 45-60 वर्ष के बीच पहले से गंभीर बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों का टीकाकरण शुरू किया गया था। इनमें शुगर और उच्च रक्तचाप जैसी 20 गंभीर बीमारियां शामिल थीं।

होमवर्क नहीं किया तो टीचर ने ली जानःप्राइवेट स्कूल में 7वीं के स्टूडेंट को पीटकर मार डाला

टीचर अरेस्ट, स्कूल की मान्यता रद्द

चूरू (एजेंसी)। राजस्थान के चूरू में एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। जिले के सालासर थाना क्षेत्र के गांव कोलासर में बुधवार दोपहर टीचर की पिटाई से 7वीं क्लास के बच्चे की मौत हो गई। 13 साल का बच्चा होमवर्क करके नहीं गया था। टीचर ने उसे जमीन पर पटक-पटकर लात-घूसों से इतना मारा कि उसके नाक से खून बहने लगा। बच्चा बेहोश हो गया। कुछ देर तक होश नहीं आने पर आरोपी टीचर ही उसे अस्पताल लेकर गया। वहां डॉक्टरों ने बच्चे को मृत घोषित कर दिया। बच्चे के पिता की शिकायत पर आरोपी टीचर को गिरफ्तार कर लिया गया है।

इस्लाम में शादी कॉन्ट्रैक्टः कर्नाटक हाईकोर्ट ने कहा-

इस्लाम में हिंदू धर्म जैसा विवाह संस्कार नहीं, लेकिन पत्नी को गुजारा भत्ता देना होगा

बेंगलुरु (एजेंसी)। हाईकोर्ट बेंगलुरु के भुवनेश्वरी नगर में रहने वाले 52 साल के एजाज-उर-रहमान की याचिका पर सुनवाई कर रहा था। रहमान ने हाईकोर्ट से फैमिली कोर्ट के 12 अगस्त 2011 को दिए गए आदेश को रद्द करने की अपील की थी। रहमान ने 25 नवंबर 1991 को शादी के कुछ महीनों बाद 5 हजार रुपए की मेहर पर पतनी सायरा बानो को 3 तलाक दे दिया था। कुछ दिनों बाद ही रहमान ने दूसरी महिला से शादी की और एक बच्चे का पिता बन गया। सायरा ने 24 अगस्त 2002 को भरण-पोषण के लिए हर्जाने की मांग करते हुए केस दायर किया था।

फैमिली कोर्ट ने रहमान को हर महीने सायरा को भरण पोषण के लिए 3 हजार रुपए देने का आदेश दिया था। कोर्ट ने कहा था कि सायरा हर महीने पैसे पाने की हकदार है। उसकी दोबारा शादी

तलाक के बाद दायित्व नहीं भूले जा सकते, पूर्व पत्नी को दूसरी शादी या मौत होने तक गुजारा भत्त पाने का हक है।

होने या मौत होने तक उसे यह तय रकम मिलनी चाहिए। रहमान की याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस कृष्णा एस दीक्षित ने उस पर 25 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया।

जस्टिस दीक्षित ने कहा- इस्लाम में शादी संस्कार नहीं है, लेकिन तलाक होने पर दायित्वों से पीछे नहीं हटा जा सकता। उन्होंने कहा कि तलाक के बाद कर्तव्य भूले नहीं जा सकते। बेसहारा पतनी को तलाक दिए जाने पर गुजारा भत्ता देने का कानून है। कोर्ट ने कुरान की आयतों का हवाला देते हुए कहा कि मुस्लिम व्यक्ति को अपनी बेसहारा पूर्व पतनी को नैतिक और धार्मिक कर्तव्य का पालन करते हुए भरण-पोषण के लिए भत्ता देना चाहिए। कोर्ट ने कहा कि इस्लामी कानून के मुताबिक, मेहर को एक तरह से लड़की को मिलने वाला दहेज माना जा सकता है। इसे शादी के पहले लड़की को देना होता है।

बिहारी मजदूरों की जान लेने वाले लश्कर के 2 आतंकी ढेर, 12 घंटे में 4 को मार गिराया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में निहत्थे आम नागरिकों और गैर-कश्मीरी गरीब मजदूरों की हत्या करने वाले आतंकवादियों के दिन अब लद गए हैं। सुरक्षाबलों ने बुधवार को कश्मीर घाटी में 4 दहशतगर्दों को मार गिराया, जिन्होंने हाल ही में बिहारी और उत्तर प्रदेश के मजदूरों की हत्या की थी। दिन में शोपियां में लश्कर-ए-तैयबा के मुखौटा संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) के दो आतंकी मारे गए तो शाम को लश्कर-ए-तैयबा के दो और आतंकियों को जहन्नुम पहुंचा दिया गया। कुलगाम में मारे गए लश्कर के दहशतगर्दों ने ही 17 अक्टूबर को वानपोह में दो बिहारी मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी थी, जबकि तीसरा घायल हो गया था। आईजीपी कश्मीर ने बताया कि इनमें से एक लश्कर का कमांडर गुलजार अहमद रेशी भी शामिल है। पुलिस ने कहा कि पुख्ता जानकारी के आधार पर आतंकियों की मौजूदगी की जानकारी मिली थी। इसके बाद पुलिस और सेना ने इलाके को घेरकर सर्च ऑपरेशन शुरू किया। इस दौरान आतंकियों ने फायरिंग की तो एनकाउंटर शुरू हो गया। इससे पहले शोपियां में हुई मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा के दो आतंकवादी मारे गए और सेना का एक जवान शहीद हो गया। अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में दो अन्य सुरक्षाकर्मी घायल हो गए। अधिकारियों के अनुसार, मारे गए आतंकवादियों में से एक हाल में हुई उस व्यक्ति की हत्या में शामिल था जो उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले का रहने वाला था। क्षेत्र में आतंकवादियों की उपस्थिति की सूचना मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने शोपियां जिले के दरगड़ इलाके में घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया।

कैप्टन की ओर से नई पार्टी के ऐलान पर कांग्रेस बोली- अमरिंदर को मुख्यमंत्री पद से हटाने का फैसला पूरी तरह सही था

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की ओर से नई पार्टी के गठन और बीजेपी के साथ गंठबंधन की संभावना पर पलटवार किया है।

कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि अमरिंदर सिंह के इस कदम से साबित हो गया है कि उनको मुख्यमंत्री पद से हटाने का पार्टी का फैसला पूरी तरह से सही था। पार्टी प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने यह सवाल भी किया कि क्या कृषि से संबंधित तीनों काले कानून लाने को लेकर भाजपा और अमरिंदर सिंह के बीच कोई जुगलबंदी थीपंजाब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू के साथ विवाद और पार्टी में अंदरूनी कलह के बाद पंजाब के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने वाले अमरिंदर सिंह ने मंगलवार को कहा कि वह जल्द ही अपनी खुद की राजनीतिक पार्टी बनाएंगे।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि किसानों के मुद्दे को उनके हित में सुलझाया जाता है तो उन्हें भाजपा के साथ सीट बंटवारे की व्यवस्था की उम्मीद है। अमरिंदर सिंह के इस बयान पर कांग्रेस ने कहा है क्या इन तीनों काले कानूनों को लेकर भाजपा और अमरिंदर सिंह जी की कोई जुगलबंदी थी?

गौरव वल्लभ ने कहा, 99 प्रतिशत विधायक तो इस बारे में पहले ही समझ गए थे। आज कैप्टन साहब अपने कदमों से कांग्रेस के निणन्य को शत प्रतिशत सही ठहरा रहे हैं। उन्होंने आगे ने कहा, मैं पार्टी और पंजाब के लिए उनके योगदान को कमतर नहीं कर रहा हूं। लेकिन सवाल यह है कि उस पार्टी के साथ जाने में कैप्टन साहब को गुरेज क्यों नहीं है जिसने तीन काले कानून थोप दिएवहीं, कांग्रेस महासचिव हरीश रावत ने कहा कि विधायक पहले से ही कह रहे थे कि अमरिंदर सिंह भाजपा और अकालियों के साथ मिले हुए हैं और अब यह बात साबित हो गई है। उन्होंने कहा, वह कांग्रेस का वोट काटेंगे और भाजपा को फायदा पहुंचाएंगे। लेकिन पंजाब के लोग अब सबकुछ समझ चुके हैं।

चीन को मिलेगा करारा जवाब! सेना ने अरुणाचल प्रदेश मे एलएसी के पास तैनात किये बोफोर्स तोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन को मिलेगा करारा जवाब! सेना ने अरुणाचल प्रदेश में थ्रँ्ण् के पास तैनात किये बोफोर्स तोप; करगिल युद्ध में इसी हथियार से पाक को किया था चित भारत ने अरुणाचल प्रदेश में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) के पास बोफोर्स तोपें तैनात कर दी हैं। भारत ने अरुणाचल के सीमावर्ती इलाकों में बोफोर्स तोप को तैनात करने का यह कदम ऐसे समय में उठाया है जब पूर्वी लद्दाख के इलाके में चीन के साथ पिछले कई महीनों से गतिरोध जारी है। बताया जा रहा है कि यह बोफोर्स तोप अरुणाचल प्रदेश में चीन से लगे अग्रिम चौकियों पर तैनात किये गये हैं। ए न्यूज एजेंसी ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि भारतीय सेना ने अरुणाचल प्रदेश में चीन से लगी सीमा पर अपनी निगरानी बढ़ा दी है। चीन की किसी भी चालबाजी का किसी भी समय मुंहतोड़ जवाब देने के लिए भारतीय सेना ने अपनी पूरी तैयारी कर ली है। इसके तहत एलएसी पर अग्रिम इलाकों में बोफोर्स तोपों की तैनाती की गई है। न्यूज एजेंसी आएएनएस ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि सेना ने विमानन विंग के एयर फायर पावर को भी मजबूत किया है। बोफोर्स तोपों के बारे में याद दिला दें कि यह वही तोपें हैं जिन्होंने करगिल युद्ध में पाकिस्तान को धूल चटाया था। बोफोर्स तोपें 27 किलोमीटर की दूरी तक गोले दाग सकती हैं। बोफोर्स तोप की गिनती दुनिया के सबसे घातक तोपों में होती है। हल्के वजन के कारण इसे युद्धभूमि में कही भी तैनात करना और यहां-वहां ले जाना आसान होता है। 155 स्स् लंबी बैरल वाली यह तोप एक मिनट में 10 गोले दागने की ताकत रखती है।

वॉट्सऐप चैट ने रोकी जमानत

कोर्ट ने माना आर्यन ड्रग एक्टिविटी में शामिल, पैडलर-सप्लायर से भी गठजोड़

मुंबई (एजेंसी)। आर्यन खान को जमानत न मिलने के पीछे उसकी वॉट्सऐप चैट सबसे अहम सबूत बनी है। मुंबई की स्पेशल ऱ्रुझ्ए कोर्ट ने माना है कि आर्यन लंबे समय से अवैध ड्रग एक्टिविटी में शामिल था। चैट से यह भी पता चलता है कि आर्यन के ड्रग पैडलर्स और सप्लायर के साथ ताल्लुकात हैं। मुंबई की स्पेशन ऱ्रुझ्ए कोर्ट ने बुधवार को आर्यन के साथ अरबाज मर्चेंट और मुनमुन धमीचा को भी जमानत देने से इनकार कर दिया।

> आर्यन को अरबाज के पास ड्रग्स होने के बारे में पता था। लंबे समय से ड्रग्स ले रहा था, आगे भी ऐसा कर सकता है।

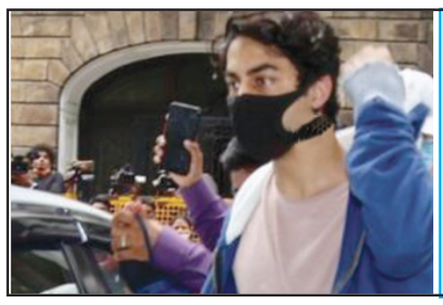

स्पेशल जज वीवी पाटिल ने अपने ऑर्डर में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (ॅँ) की इस दलील को माना कि भले ही आरोपी का पिछला इतिहास नहीं रहा है, लेकिन उसकी वॉट्सऐप चैट से पता चलता है कि वह लंबे अरसे से अवैध ड्रग एक्टिविटी में शामिल है। कोर्ट ने कहा कि भले ही आर्यन के पास कोई अवैध ड्रग नहीं मिला, लेकिन अरबाज मर्चेंट के पास से 6 ग्राम चरस मिला था। हालात को देखने से पता चलता है कि आर्यन को अरबाज के पास ड्रग्स होने की पूरी जानकारी थी। जजमेंट में बताया गया है कि आर्यन और अरबाज दोनों लंबे समय से दोस्त हैं। दोनों इंटरनेशनल क्रूज टर्मिनल पर साथ ही आए थे। दोनों ने बयान दिया है कि वे अपने उपयोग और आनंद के लिए यह अवैध ड्रग्स साथ लेकर आए थे। आर्यन को यह भी पता था कि अरबाज ने अपने जूतों में ड्रग्स छिपाई है।

कोर्ट ने कहा कि आर्यन जमानत पर रिहा होने के बाद इस तरह की एक्टिविटी फिर नहीं करेगा, यह मानने की कोई वजह नहीं है।

यानी, जमानत पर बाहर आने के बाद वह फिर से ड्रग्स लेना शुरू कर सकता है। जजमेंट में बताया गया है कि 3 अक्टूबर को ॅँ ने ड्रग्स की सूचना पर क्रूज में चल रही पार्टी पर छापा मारा था। इसी दौरान आर्यन समेत 7 लोगो को गिरफ्तार किया गया था। इनमें से कुछ लोगों से अवैध ड्रग्स की बरामदगी की गई थी। पूछताछ में आरोपियों ने यह भी बताया था कि उन्हें ड्रग्स किसने सप्लाई की है। यह सब देखने से पता चलता है कि सबने साथ मिलकर साजिश रची थी। सेक्शन 29 के मुताबिक इसे साजिश करार दिया जा सकता है।

येदियुरप्पा का कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष को नसीहत, राहुल गांधी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने से बचें

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी एस येदियुरप्पा ने बुधवार को अपनी पार्टी भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष नलिन कुमार कतील को कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने से बचने के लिए कहा। आगामी विधानसभा उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार के लिए प्रचार करने पहुंचे येदियुरप्पा ने सिंदगी में कहा, किसी को भी ऐसा नहीं बोलना चाहिए। मैं उनसे बात करूंगा और पूछूंगा कि इस तरह के बयान के पीछे क्या पृष्ठभूमि थी। इस तरह से बोलने की कोई जरूरत नहीं थी।

सत्यपाल मलिक को महबूबा मुफ्ती की चेतावनी, बयान वापस लो या फिर केस के लिए रहो तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक से रोशनी ऐक्ट का फायदा उठाने वाले बयान को लेकर माफी की मांग की है। मुफ्ती ने कहा कि सत्यपाल मलिक अपने बयान को वापस लें अन्यथा वह उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेंगी। दरअसल सत्यपाल मलिक ने अपने एक बयान में कहा था कि 2001 में आए रोशनी ऐक्ट का फायदा महबूबा मुफ्ती ने भी लिया था। इस कानून के तहत सरकारी जमीन पर कब्जा रखने वाले लोगों को उसका मालिकाना हक दिया गया था। सत्यपाल मलिक ने कहा था कि इस कानून का फायदा उठाते हुए महबूबा मुफ्ती ने भी अपने नाम पर जमीन ट्रांसफर करा ली थी।

अब महबूबा मुफ्ती ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा है कि सत्यपाल मलिक का बयान बेहद गैरजिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि मेरी लीगल टीम सत्यपाल मलिक के खिलाफ मुकदमा करने की तैयारी कर रही है। वह या तो अपने बयान को वापस लें लें अन्यथा उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। महबूबा मुफ्ती ने सत्यपाल मलिक के बयान का वीडियो शेयर करते हुए यह बात कही है। इस वीडियो में सत्यपाल मलिक यह कहते हुए दिख रहे हैं कि रोशनी ऐक्ट के तहत राज्य के पूर्व सीएम फारुक अब्दुल्ला, उनके बेटे उमर

अब्दुल्ला और पीडीपी की मुखिया महबूबा मुफ्ती ने अपने नाम प्लॉट करा लिए थे। यह कानून 2001 में फारूक अब्दुल्ला के सीएम कार्यकाल के दौरान ही लाया गया था। इस कानून के तहत सरकारी जमीन पर कब्जाधारकों को कुछ रकम के बदले जमीन का अधिकार दिए जाने का प्रावधान किया गया था। जमीन आवंटन से मिली राशि का इस्तेमाल राज्य में हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर प्लांट्स की स्थापना के लिए किया गया था।

खबर संक्षेप

पुलिस पर जबरन घर में घुस कर तोड़ फोड़ का आरोप

कोरांव। थाना कोरांव के बड़ोखर पुलिस चौकी के इंचार्ज पे एक महिला द्वारा घर में जबरन पुलिस कर्मियों पर बिना किसी पुरुष वर्ग के मौजूदगी में घर में घुस कर तोड़ फोड़ करने का आरोप है। और पुलिस विभाग के उच्च अधिकारियों को सूचित कर कार्यवाही की मांग की है। बता दें कि ग्राम बरोखरा निवासी रविंद्र कुमार सिंह की पत्नी प्रभावती देवी ने आरोप लगाया है की 19 अक्तूबर की रात करीब आठ बजे बड़ोखर चौकी की पुलिस घर के मर्दों की अनुपस्थिति में घुस आए और पुंछ तान्छ के बहाने घर के सामानों को तोड़ फोड़ दिया। और मार पीट किया। बुरा भला कहा धमकियां दी। जिसकी शिकायत मुख्यमंत्री से लेकर उच्च अधिकारियों को दी।

सांड से भरी कंटेनर ट्रक पलटी, 15 की मौत 13 घायल

अखंड भारत संदेश

उतरांव। उतराव थाना क्षेत्र के रहीम पट्टी धँसीपुर हाईवे पर वाराणसी की तरफ जा रही कंटेनर ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गई। जिसमें लदे 15 साड़ो मौत हो गई। वही 13 घायल हो गये। बुधवार सुबह वाराणसी की तरफ जा रही कंटेनर रहीम पट्टी धनपुर हाईवे पर अनियंत्रित होकर पलट गई। वही कंटेनर ट्रक पलटते ही चालक खलासी फरार हो गए।तेज आवाज सुन स्थानीय लोगों की भीड़ जुटी तो कंटेनर में जानवरों की आवाज सुन चीख पुकार सुन 112 नंबर पर सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने जांच किया तो अंदर सांड़ हुए थे। पिआरवी पुलिस ने फौरन थानाध्यक्ष उतराव को सूचना दी।थानाध्यक्ष उतराव धीरेंद्र सिंह अपनी पुलिस टीम के साथ पहुंचकर बहुत ही मशक्कत के साथ जेसीबी से कंटेनर के चादर को कटवाते हुए पुलिस टीम ने ग्रामीणों की मदद से एक एक कर सांड को बाहर निकाला। वहीं पुलिस की मेहनत व सक्रियता से 13 बेजुबानों की जान बच गई।

सांड से भरी कंटेनर ट्रक अनियंत्रित होकर पलटी व राहत व बचाव कार्य में जुटी उतरांव पुलिस व ग्रामीणों की भीड़

लेकिन वही 15 बेजुबानो की दर्दनाक मौत हो गई। थानाध्यक्ष ने जिसकी जानकारी पशु मुख्य चिकित्सा अधिकारी को दी। पशुपालन विभाग के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने टीम के साथ पहुंचकर घायल बेजुबानो को इलाज किया। वहीं 15 बेजुबानों का पंचनामा भर दफन करा दिया। पुलिस ने ट्रक कंटेनर के मालिक पर मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच गंभीरता से कर रही है।

सुबह से शाम तक अंदर फंसे बेजुबानों को बचाने में जुटी रही पुलिस

कंटेनर पलटने के बाद अंदर फंसे बेजुबान जो जीवित थे।उतरांव थाना अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह बीट इंचार्ज विनोद कुमार दिनकर सुजीत सिपाही अजय आदि ने सुबह से लेकर शाम तक लगातार ग्रामीणों के साथ मिलकर खुद अंदर फंसे बेजुबानो को निकालने में जुटे रहे।पुलिस की सक्रियता व लगातार मेहनत से ही 13 बेजुबान को नया जीवन प्राप्त हुआ। पुलिस की इस सराहनीय कार्य को देखते हुए स्थानीय लोगों ने जमकर प्रशंसा की।

साहसी सिपाही संजीत व अजय के हिम्मत का कोई जवाब नही...

उत्तराव थाने में नियुक्त सिपाही संजीत व अजय सिंह जिसकी हिम्मत का कोई जवाब नहीं रहा।पलटी हुई कंटेनर में फंसे बेजुबानो को लगातार हिम्मत दिखाते हुए सुरक्षित बाहर निकाला। वही अंदर मरे हुए बेजुबानो को भी ग्रामीणों की सहायता से लगातार बिना खरोच के बाहर निकालकर ही राहत की सांस ली।ऐसे ही सिपाही को हर थाने में जरूरत है जो सराहनीय कार्यों में आगे आकर मदद में जुट जाए।

न्यूज झरोखा

मांसेवा संस्थान के सौजन्य से गरीब विधवा के घर पर लगा हैंडपम्प

करछना। विकास खंड के ग्राम पंचायत कोलाही डीहा की गरीब महिला विगत कयी वर्षो से पेय जल की सुविधा के लिए भटक रही थी उसके मुहल्ले में पानी की सुविधा न होने के कारण काफी दूर से पानी लाने को मजबूर थी । जिस पर माँ सेवा संस्थान रोकडी ने हैंडपंप लगवाकर दिलायी निजात।गांव निवासी रीता देवी पत्नी स्व राजाराम 25 वर्षो से महिला परेशान थी पानी के लिए दूर जाना पड़ता था महिला ने अपनी समस्याओं को माँ सेवा संस्थान को बतायी जिसपर माँ सेवा संस्थान ने आश्वासन दिया था । जो हैंडपम्प लगवा कर गरीब महिला को पेय जल उपलब्ध कराया, लोगों नें संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया है ।

मांडा में धूमधाम से मनाई गई बाल्मीकि जयंती

मेजा रोड। विकास खण्ड मांडा क्षेत्र के पयागपुर स्थित श्रीमती इन्द्रकली पटेल जूनियर हाईस्कूल में प्रधानाचार्य राज नारायण पटेल के नेतृत्व बुधवार को बाल्मीकि जयंती स्कूली छात्रों के साथ धूमधाम से मनाई गई। इस दौरान सर्वप्रथम महर्षि बाल्मीकि के चित्रण पर माल्यार्पण किया गया और उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। विद्यालय के छात्रों को महर्षि ऋषि के वैद्य पर चर्चा करते हुए नमन किया गया। वहीं उक्त जयंती पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमे स्कूल के सभी छात्र-छात्राओं में दिव्यांशी सिंह प्रथम स्थान पर रहीं। विद्यालय के प्रबंधक शिव प्रताप पटेल द्वारा छात्रा को सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यालय के सभी छात्रों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रति प्रेरित किया गया। जबकि खो खो प्रतियोगिता में भी दर्जनों छात्र छात्राओं ने अच्छा प्रदर्शन दिखाया,जहां शिक्षकों ने साबासी दी। इस अवसर पर शिक्षक गौरी प्रसाद सिंह, चन्द्र प्रताप पटेल(एडवोकेट), सूर्य प्रकाश पटेल, ओम प्रकाश, राम बाबू, अजय पटेल, रूपा सहित तमाम अभिभावक उपस्थित रहे। वहीं निबंध प्रतियोगिता एवम खो खो प्रतियोगिता को लेकर अभिभावकों ने भी छात्रों के प्रदर्शन पर खुशी जाहिर किया है।

धूमधाम से मनाया गया महर्षि वाल्मीकि जयंती

नैनी। ओमकार शिक्षा सदन हाई स्कूल नैनी में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि जयंती पर, विद्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम में सैकड़ों छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में रचना प्रथम, अलीजबा द्वितीय, क्विज (प्रश्नोत्तरी) में शिवांश प्रथम, संस्कार द्वितीय व संबोधन में नंदिनी प्रथम रही, जिन्हे विद्यालय प्रधानाचार्य और प्रबंधक ने प्रमाणपत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

जमीनी विवाद को लेकर पूरे कुनबे पर लाठियों से हमला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। थाना पूरामुफ्ती क्षेत्र के कुसुवा गांव में जमीनी विवाद के चलते पूरे कुनबे पर दबंगों ने लाठियों से प्राणघातक हमला किया है दौड़ा-दौड़ा कर लाठियों से पीटा गया है इस हमले में कई लोग लहूलुहान हैं लेकिन पुलिस ने शांति भंग का मुकदमा दर्ज कर हमलावरों का बचाव किया है पूरा मुफ़्ती पुलिस बड़ी घटनाओं में भी आरोपियों से सांठगांठ कर धना दोहन करने के बाद आंकड़ों में अपराध कम करने में महारत हासिल रखती है। बताते चलें कि निरंजन लाल पासी पुत्र स्वर्गीय रामदुलारे के घर के सामने पुश्तैनी जमीन है उसी जमीन से कुछ दूरी पर रह रहे दबंगों ने जमीन पर जबरन बालू रख दिया, जब निरंजन लाल ने बालू रखने से मना किया तो दबंग लड़ाई झगड़ा पर अमदा हो गए, झगड़े का आसार देख निरंजन लाल ने 112 नंबर डायल कर के पुलिस से शिकायत किया पुलिस को सूचना देने के बाद मौके पर पुलिस नहीं पहुंची और एकजुट हो कर दबंग हमलावरों ने पूरे कुनबे पर लाठियों से हमला बोल दिया निरंजन लाल के परिवार की महिला पुरुष बच्चे को दौड़ा दौड़ा कर लाठियों से पीटा गया है जिसने भी इस हमले को देखा उसकी रूह कांप गई है लहूलुहान निरंजन लाल का परिवार फरियाद लेकर थाने पहुंचा यहां उस पर पुलिस बिफर पड़ी आरोपी पक्ष ने पहले ही पुलिस से संपर्क कर उनकी आवभगत कर दी थी जिससे पुलिस आरोपियों की भाषा बोलने लगी और लहूलुहान लोगों के साथ हमलावरों को शांतिभंग में पाबंद कर दिया इस प्राणघातक हमले के मामले में पुलिस ने आरोपियों से सांठगांठ कर जहां मोटी रकम वसूल ली है वहीं अपराधों के अभिलेखीय आंकड़े को कम कर अधिकारियों से वाहवाही लूट ली है थाना पुलिस द्वारा अपराधियों को संरक्षण देने और अपराधों को न दर्ज करने के मामले में यदि आला अधिकारियों ने जांच कराई तो थाना पुलिस पर गाज गिरना तय है।

अधिवक्ता गण एसडीएम पर भड़के

बार एसोसिएशन कोरांव ने एस डी एम एवं तहसीलदार की कार्य प्रणाली से खिन्न वकीलों ने कार्यालयों पर लगाया ताला,बंद कराए सभी कार्यालय

एस डी एम ने खुलवाया ताला, वकीलों ने एसडीएम मुदार्बाद के लगाए नारे, भ्रष्ट्राचार का वकीलों ने लगाया आरोप

अखंड भारत संदेश

कोरांव। तहसील कोरांव में अधिकारियों की कार्य शैली मनमानी तथा भ्रष्ट्राचार कोर्ट में न बैठने आवास पर वादकारियों को बुला कर डीलिंग करने आदि का आरोप लगा है। जिस कारण वकीलों ने पूर्व सूचना के अनुसार ताला बंदी की। और हंगामा हुआ भारी संख्या में फोर्स डटी रही।

बता दें कि उप जिलाधिकारी अभिनव कनौजिया विकास मेला कोरांव से करीब ढाई बजे तहसील पहुंचे तो कार्यालयों के ताले बंद मिले। जिससे उप जिलाधिकारी नाराजगी जाहिर कर ताला खोलवा दिए। तभी वकीलों ने आक्रोषित हो कर मुदार्बाद के नारे लगाए। वकीलों का आरोप है कि एस डी एम और तहसीलदार कोरांव न्यायालय न बैठ कर आवास पे बैठते हैं और वहीं से दलालों आदि को बुला कर डिलिंग करते हैं। जिससे दूर दराज से आने वाले वादकारी परेशान हो रहे हैं। जिससे नाराजगी जाहिर कर महीनों से अफसरों की रवैया देख रहे थे और परेशान हुए। जिस कारण वकील अक्रोशित्त हुए। वकील संघ का कथन है कि जब तक जिलाधिकारी नहीं आते संघर्ष जारी रहेगा। उप जिलाधिकारी से वार्ता का प्रयास किया गया जिन नहीं लगा।

उप जिलाधिकारी कोरांव से वकीलों की नोक झोंक के दृश्य।

बोले तहसीलदार...

मैं इस समय लखनऊ में हूं, वैसे भी हम लोग लोगों का काम बखूबी करते हैं, वकील साहबान खुद काम नहीं करने देना चाहते। हम तो कलम खोल कर आदेश करने के लिए बैठे रहते हैं। यह दबाव बनाने के लिए हो रहा है।

विशाल कुमार शर्मा
तहसीलदार कोरांव, प्रयागराज

पुलिस की सह पर भूमाफिया गोशाला की भूमि पर कर रहे जबरन नवनिर्माण कार्य

अखंड भारत संदेश

एसडीएम का आदेश दरकिनार

भुक्तभोगी केशवलाल तिवारी के परिजनों को दी जा रही है हत्या करने की धमकियां

मौके पर दोनों पक्षों में तनाव की स्थिति बरकरार

मेजा। एसडीएम के आदेश के बाद भी पुलिस की मिली भगत से कथित भूमाफियाओं द्वारा एक व्यिक्त के गोशाला की भूमि पर नवनिर्माण कर जबरन कब्जा किये जाने का मामला प्रकाश में आया है। प्रकरण मेजा थाना क्षेत्र के भईया गॉव का है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के भइयां गॉव निवासी केशव लाल तिवारी पुत्र स्व0 महाराजदीन ने बीते 18 अक्टूबर को एसडीएममेजा को दिये गये शिाकयत प्रार्थना पत्र में इस बात का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वह अरसा पूर्व बने पुस्तैनी मकान की भूमि के कुछ अंश पर गौशाला हेतु दो कमरा, नांद चरही भुसौल आदि बनाकर काबीज दखील है तथा उपयोग एवं उपभोग करता चला आ रहा है और शेष भूमि पर टिनशेड लगा रखा है इतना ही नहीं गोशाले में रोशनी तथा हवा आने-जाने के लिए गोशाला के दक्षिण व पश्चिम दिशा में उसने स्वयं के द्वारा छोड़ी गयी 3 फिट भूमि के बाद बनी दीवाल में रोशनदान भी लगाया है। प्रकरण के बावत केशव लाल की बातों को सच माना जाय तो उनका आरोप है कि उसके पड़ोसी अभिषेक मिश्रा आदि जो दबंग, शोरेपुस्त, अपराधी एवं भूमाफिया किस्म के है अपनी-अपनी गुंडई तथा दबंगई के बल पर पुलिस की मिली भगत से जबरन उसके द्वारा छोड़ी गई 3 फिट भूमि को अवैध ढंग से हड़प कर उसके दीवाल से सटाकर नवनिर्माण कार्रू कर रोशनदान बंद करना चाहते है। बताते है कि केशवलाल के परिजनों द्वारा मना करने पर भूमाफियाओं द्वारा मारपीट करने के साथ-साथ हत्या करने की धमकियॉ दी जा रही है। जबकि इस सम्बन्ध भुक्तभोगी का कहना है कि उसके बनाये गये गोशाला की दीवाल के बगल छोड़ी गयी भूमि से उक्त भूमाफियाओं का कोई वास्ता सरोकार नहीं है और न ही कोई विधिक अधिकार है हलाकिं पीड़ित केशवलाल के प्रार्थना पत्र पर त्वरित कार्यवाही करते हुए एसडीएम मेजा ने विपक्षीगणों द्वारा जरबन किये जा रहे नवनिर्माण कार्य को रोकने के लिए मेजा पुलिस को स्पष्ट आदेश अवश्य दिया है लेकिन एसडीएम के आदेश के बाद भी दबंग भूमाफियाओं द्वारा चोरी छिपे निर्माण कार्य जारी है जिसको लेकर मौके पर दोनों पक्षों में काफी तनाव बना हुआ है।

कमान सर्विस सेंटर में लगाया गया कैम्प

एसडीओ और बाबू कैम्प में नहीं आने से उपभोक्ता परेशान

लालापुर। क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए लालापुर स्थित सीएससी पर लगे कैम्प पर बिजली विभाग के अधिकारियों के ना आने से उपभोक्ताओं को खाफी मुसीबतों का सामना करना पड़ा । विभाग के बाबू और एसडीओ के मौजूद ना रहने पर उपभोक्ताओं में काफी रोष देखा गया । लालापुर स्थित सीएससी पर बुधवार के दिन बिजली उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए बिल जमा करने के लिए कैम्प का आयोजन किया गया था। कैम्प में उपभोक्ताओं की भारी भीड़ लगी लेकिन विभाग के बड़ेबाबू व एसडीओ के मौजूद ना रहने बिल सुधार नहीं हो पाया। मौके पर जेई आशीष कुमार के अलावा क्षेत्रीय कर्मी अतुल तिवारी,धर्मेन्द्र पटेल, मनोज मौर्या, सूर्य प्रकाश ओझा, मीटर रीडर देवी शंकर शुक्ला, योगेश त्रिपाठी, शशांक शुक्ला मौजूद थे । बड़े अधिकारियों के ना होने से बिजली उपभोक्ताओं को काफी दिक्कत हुई जिससे लोगों में रोष भी था ।

सबका साथ सबका विकास के मूलमंत्र पर फिर से भाजपा की बनेगी सरकार : सुभाष सिंह

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। भाजपा ही एक ऐसी पार्टी है जो बिना किसी भेद भाव के सभी वर्गो को साथ लेते हुए विकास के पथ पर चलती है ।उक्त बातें भाजपा पिछड़ा मोर्चा यमुनापार के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल ने नारीबारी मे नारीबारी मंडल की कार्य समित की बैठक में कार्यकताओं के बीच कहीं।आगे उन्होंने कहा कि देश और प्रदेश में कोरोना आपदा के बीच भी जिस तरह का विकास हुआ उससे विरोधियों के सपनों पर पानी फेर दिया है। पिछली सरकारों में केवल भ्रष्टाचार व्याप्त था ,मंत्री से लेकर विधायक तक लूट खसोट में शामिल थे ।लेकिन जब से प्रदेश और केंद्र मे भाजपा की सरकार आई तब से सड़क से लेकर बिजली ,पानी आदि की समस्याएं दूर हो गई ।अब इसी तरह आने वाले विधान सभा के चुनाव में सबका साथ सबका विकास के मूल मंत्र से ही दुबारा फिर से प्रदेश में योगी की सरकार बनेगी । विशिष्ट अतिथि सूर्य प्रताप सिंह उर्फ सुधाकर ने कहा कि प्रदेश का हर वर्ग एक जुट होकर फिर से कमल खिलाने के लिए बेचैन है चुनाव में फिर से पिछली बार से ज्यादा सीटें आएंगी जिसमे पिछड़ा वर्ग की विशेष भूमिका रहेगी। अध्यक्षता नारीबारी मंडल अध्यक्ष अतर सिंह कुशवाहा ने अतिथियों का स्वागत कर धन्यवाद व आभार प्रकट किया।मण्डल प्रभारी अनुपम सिंह पटेल, मण्डल उपाध्यक्ष रमेशचंद कुशवाहा ,मण्डल महामंत्री दुबेश कुमार माझी ,लालबहादुर सिंह मंत्री ,राजीव सिंह, सदस्य बृजभान सिंह, रजनीश सिंह, पंचम लाल गुप्ता, कुंजबिहारी सिंह,सैलेश कुमार चौहान, भी अपने अपने विचार व्यक्त किए। बैठक में पिछड़ा वर्ग मोर्चा के दर्जनो कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भाजपा जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल कार्य कताओं को सम्मानित करते हुए

कोरांव विकास मेला : हर विभाग के लगे शिविर

विकलांगों को वितरित की गई ट्राईसाइकिल

अखंड भारत संदेश

कोरांव। कोरांव ब्लाक परिसर में सरकार द्वारा आयोजित विकास मेला का अयोजन हुआ। जिसमें विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार किया गया और योजनाओं के लाभ हेतु लोगों ने आवेदन किए। विकास मेले में मुख्य अतिथि विधायक राजमणि कोल ने विकलांगों को ट्राई साइकिल, कुछ को राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, किसानों को यंत्र खरीद का छूट अनुदान का प्रमाण पत्र वितरित किया। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक ने कहा कि मोदी योगी की सरकार किसानों गरीबों के कल्याण हेतु कृत संकल्प है। उन्होंने कहा कि जितना भाजपा की सरकार ने विकास किया किसी की सरकार ने नहीं किया। विधायक राजमणि ने प्रत्येक विभाग के अफसरों को जन कल्याण कारी योजनाओं को लाभार्थियों तक ईमानदारी से पहुंचाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि श्रमिक,किसान,पेंशन आदि योजनाओं के लाभार्थी अपना आवश्यक प्रमाण पत्र के साथ पंजीकरण कराएं जिससे उन्हें लाभ मिल सके। इसी तरह उप जिलाधिकारी कोरांव अभिनव कनोजिया, डी सी मनरेगा,खंड विकास अधिकारी कोरांव रमा शंकर सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी प्रयागराज, दिव्यांग जन विकास अधिकारी जिला कृषि अधिकारी, समाज कल्याण अधिकारी, अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डाक्टर जे के सोनकर सहायक विकास अधिकारी पंचायत कोरांव, अधिकारी आदि सहित भाग लिए और जनता को विकास कार्यों की जानकारी देते हुए संबंधित कर्मचारियों को लाभार्थियों का लाभ दिलाने उनके समस्याओं के निदान हेतु निर्देशित किया। शिविर में वैकसीन भी लगी दवाएं भी निःशुल्क बंटी। अयोजन में भोला सिंह पटेल किसान संघ नेता,संतरा देवी,शशि दुवेदी,राम आसरे शुक्ल पिआरो विधायक,आदि संभ्रांत जन,ग्राम प्रधान,बिडिसी मेंबर्स,ब्लॉक के कर्मचारी आदि आदि प्रतिभाग किए। कार्यक्रम के संचालन बबुआन दुवेदी ने किया।

विकास मेला कोरांव में मंच पर बैठे विधायक व अधिकारी तथा दिव्यांग जनों को ट्राई साइकिल आदि का वितरण करते विधायक तथा अधिकारी गण

बच्चों में शारीरिक और मानसिक विकास केलिए खेलकूद आवश्यक है : कमलेश द्विवेदी

अखंड भारत संदेश

पनासा में महात्मा पुण्यदेव स्मारक स्थल व मनरेगा पार्क का उप जिलाधिकारी ने किया शिलान्यास

करछना। विकास खंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत पनासा गांव में बुधवार को 15 लाख रुपए की लागत से महात्मा पूण्यदेव स्मारक स्थल व मनरेगा पार्क निर्माण के लिए उप जिलाधिकारी विनोद कुमार पांडे, खंड विकास अधिकारी जितेंद्र कुमार ,ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि करछना कमलेश कुमार द्विवेदी ने शिलान्यास एवं भूमि पूजन किया। जिसके पूर्व तमसा नदी पर स्थित प्राचीन मंदिर पर जाकर महात्मा पुण्यदेव का दर्शन कर पूजा अर्चना किया। प्रमुख प्रतिनिधि ने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में शारीरिक व मानसिक विकास के लिए खेलकूद अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जो व्यवस्थाएं शहर में है वह हम गांव में लाने का प्रयास करेंगे। यह मनरेगा पार्क तैयार होने के बाद पार्क में ओपन जिम भी खोला जाएगा। जिससे यहां के बच्चों को उनकी सेहत के साथ मानसिक विकास में भी अहम भूमिका निभाएंगा। कार्यक्रम के दौरान आयोजक नागेन्द्र कुमार पांडे ने अतिथियों को फूल माला पहनाकर स्वागत किया। जिस मौके पर सचिव संजीव श्रीवास्तव, जिला पंचायत सदस्य कुलदीप त्रिपाठी, संतोष पांडे, सुरेश चंद्र शर्मा, कृष्ण बिहारी पांडे, मुन्ना टिकैट, सभाजीत, रेवती रमण पांडे आदि।

मनरेगा पार्क का शिलान्यास एवं भूमि पूजन करते एसडीएम विनोद कुमार पांडेय

खबर संक्षेप

वायु सेना गैस एजेंसी के एकाउंटेंट ने साढ़े छह लाख का किया घपला, रिपोर्ट

प्रयागराज। वायु सेना बम्हरौली स्थित गैस एजेंसी के एकाउंटेंट ने छह साल में करीब साढ़े छह लाख का घपला कर दिया। इसकी जांच हुई तो मामला सामने आया। वायु सेना अफसर ने एकाउंटेंट के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। वायु सेना बम्हरौली के फ्लाइंग ऑफिसर प्रदीप माने ने रिपोर्ट लिखाई है कि गैस एजेंसी में चायल के मेधापुर का रहने वाला सिद्धार्थ पटेल 2015 से लेकर मई 2021 तक एकाउंटेंट के पद पर कार्यरत था। वायु सेना की ओर से इस दौरान छह लाख 37 हजार 548 रुपये के चेक आईओसी के नाम से जारी किए गए थे। सिद्धार्थ ने धोखाधड़ी करके उन्हें अपने एकाउंट में ट्रांसफर कर दिए। इस मामले में वायुसेना की तरफ से जांच की गई। जांच में धोखाधड़ी का तथ्य सही पाए जाने पर 16 अक्टूबर को सिद्धार्थ के खिलाफ पूरामुफ्ती थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई।

दिन-दहाड़े गोली लगने से युवक की मौत, हड़कंप

नामजद अभियुक्त पिस्टल सहित गिरफ़्तार तीन अन्य भी गिरफ़्तार

अखंड भारत संदेश

मृतक की फाइल फोटो व घटना के बाद मृतक के रोते-बिलखते परिजन

नैनी। दिन-दहाड़े हत्या से नैनी में हड़कम्प मच गया ।प्राप्त जानकारी के मुताबिक अभिलाष पाण्डेय पाण्डेय 28 वर्ष पुत्र दीनानाथ पाण्डेय निवासी सच्चा बाबा नगर अरैल थाना नैनी अपने घर पर ही था कि उसके मुहल्ले के ही जानने वाले विवेक तिवारी पुत्र अशोक तिवारी , मुनीम तिवारी पुत्र राम अभिलाष तिवारी, नितिन पाण्डेय पुत्र कुलभूषण पाण्डेय एवं सुरेन्द्र शुक्ला पुत्र अज्ञात निवासी मध्य प्रदेश जिसकी ससुराल अरैल मे है।

अभिलाष के घर पर उपस्थिति थे कि अचानक गोली की आवाज सुनाई पड़ी तो वहाँ घर के लोगो के साथ पड़ोसी पहुँचे तो लहुलुहान अभिलाष तड़प रहा था , जिसे आनन फानन मे जीवन ज्योति अस्पताल ले गऐ जहाँ डाक्टरों ने जवाब देदिया तो एस आर एन ले गये जहाँ डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के पिता दीनानाथ पाण्डेय की तहरीर पर पुलिस ने विवेक तिवारी के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया तथा हत्या में प्रयुक्त पिस्टल एवं आरोपी विवेक तिवारी की गिरफ़्तारी के साथ 3 अन्य को भी गिरफ़्तार करने में कामयाबी हासिल की है । इंस्पेक्टर नैनी ने बताया कि तीन अन्य को भी पूछताछ के लिए गिरफ़्तार कर लिया है। बताया जाता है कि मृतक अभिलाष पाण्डेय जमीन और मकान की दलाली का काम करता था उसी को लेकर विवेक से कुछ तनातनी का मामला सामने आ रहा है आगे पुलिस विवेचना में स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

आजाद पार्क में अवैध कब्जों पर चला बुलडोजर

22 आवासों सहित कई अवैध निर्माण ध्वस्त

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। चंद्रशेखर आजाद पार्क में बुधवार को फिर बुलडोजर गरजा। प्रशासनिक अफसरों और फोर्स की मौजूदगी में 22 आवासों के अलावा कई अन्य अवैध निर्माण भी ध्वस्त किए गए। इस वजह से वहां दिन भर अफरातफरी का माहौल बना रहा।

पार्क में बने अवैध निर्माण के खिलाफ सात अक्तूबर को भी अभियान चला था। उस दौरान धार्मिक स्थल समेत कई अन्य निर्माण गिराए गए थे। इस कार्रवाई के बाद भी कई जगह अवैध कब्जे बरकरार रहे। सोमवार को प्रशासन और प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) के अफसरों ने निरीक्षण किया था। साथ ही अवैध निर्माण कराने वालों को नोटिस दिया गया था। इसी क्रम में बुधवार को पीडीए की टीम जेसीबी के साथ आजाद पार्क पहुंची और विभिन्न संस्थानों के 22 कर्मचारियों द्वारा कराए गए सभी अवैध निमार्णों को ध्वस्त करा दिया। प्रयाग संगीत समिति के सात, संग्रहालय के पांच, गंगानाथ झा संस्कृत संस्थान के दो, हिंदुस्तानी एकेडमी के दो, लेडीज क्लब के तीन अवैध निमार्णों को जमींदोज कर दिया गया। इसके अलावा मदन मोहन मालवीय स्टेडियम के पास बने टिकट घर को भी गिरा दिया गया। कई अन्य निर्माण भी गिराए गए। कार्रवाई के दौरान एसीएम प्रथम एवं द्वितीय, पीडीए के अफसर, सीओ, उद्यान अधीक्षक समेत अनेक अफसर फोर्स के साथ मौजूद रहे।

किराए पर दे दिया था कमरा

लेडीज क्लब के एक कर्मचारी ने अवैध निर्माण कराने के साथ एक कमरा किराए पर भी दे दिया था। वहां दो नए निर्माण भी कराए जा रहे थे। कार्रवाई के दौरान ये तीनों निर्माण ढहा दिए गए।

50 हजार का इनामी जाली नोटों का तस्कर गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। एसटीएफ ने मंगलवार को रामबाग बस अड्डे के पास से जाली नोटों के तस्कर रामू साहू को गिरफ्तार कर लिया। उस पर 50 हजार रुपये का इनाम था। अंतर्राष्ट्रीय तस्कर दीपक मंडल के साथ मिलकर रामू ने शहर में लाखों रुपये के नकली नोट खपा डाले थे। जून में रामू के साथी की गिरफ्तारी के बाद से उसकी तलाश की जा रही थी। उस पर 50 हजार रुपये का इनाम था। राम साहू चेक क्लोनिंग और नोट दूना करने की जालसाजी में भी पकड़ा जा चुका है। नवाबगंज के कौड़िहार बाजार का रहने वाला रामू साहू पर शासन ने 50 हजार रुपये का इनाम रखा था। जून 2021 में एसटीएफ ने रामू के साथ रुपेश कुमार को जाली नोटों के साथ पकड़ा था। उस मामले में रामू को फरार घोषित किया गया था। एसटीएफ के डिप्टी एसपी नवेंदु सिंह ने बताया कि रामू साहू, अपने साथियों अलीम अंसारी , योगेंद्र प्रताप और राहुल निशीद के 2014 में चेक क्लोनिंग के मामले में पकड़ा गया था। बाद में उसे लखनऊ से नैनी जेल में ट्रांसफर कर दिया गया था। यहीं उसकी मुलाकात अंतर्राष्ट्रीय तस्कर दीपक मंडल से हुई। इसके बाद वह दीपक से नोट लेकर धीरे धीरे प्रयागराज के बाजारों में खपत करता रहा। उसने अपने साथ श्रवण केसरवानी, और रूपेश कुमार को भी जोड़ा। दोनों दीपक से नोट लाकर बाजार में खपाने लगे थे। जून में एसटीएफ ने रूपेश को जाली नोटों के साथ गिरफ्तार किया था। जाली नोटों के अलावा रामू साहू नोटों को दूना करने का भी धंधा करता था। इस धंधे में भी रामू और उसके साथ करीब 20 लाख रुपये तमाम लोगों से हड़प चुके हैं। रामू साहू के खिलाफ कीडगंज में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। उसके खिलाफ और कहां कहां मुकदमे हैं, इसका पता लगाया जा रहा है।

बिना पढ़ाई ट्रेनिंग के धन बल पर बांटी जा रही है आईटीआई की फर्जी डिग्री

समाजवादी पार्टी के नेता के स्कूल में अप्रशिक्षित छात्रों को फर्जी डिग्री देकर शिक्षा माफिया प्रति वर्ष अर्जित कर रहे हैं करोड़ों रुपए

पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के गंगा किनारे एक गांव में शिक्षा माफिया के खेल से अनजान बनने का प्रयास कर रहे हैं शिक्षा अधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कभी शिक्षा का केंद्र प्रयागराज माना जाता था लेकिन शिक्षा अधिकारियों के तालमेल से इन दिनों शिक्षा की फर्जी डिग्री बांटने का केंद्र प्रयागराज क्षेत्र बन गया है। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के गंगा किनारे के एक गांव में फर्जी तरीके से बिना पढ़ाई और ट्रेनिंग के आईटीआई की डिग्री बाट कर शिक्षा माफिया करोड़ों कमाने में जुटे हैं। शिक्षा माफिया समाजवादी पार्टी का नेता बताया जाता है और इस नेता के कारनामे पर योगी सरकार के अधिकारियों ने चुप्पी साध रखी है।

एक समय ऐसा था जब छात्रों को अच्छे अंक लाने के लिए दिन - रात जागकर अध्ययन करना पड़ता था फिर उनकी मेहनत के स्वरूप शिक्षकों के द्वारा उन्हें अंक दिए जाते थे लेकिन अब ऐसा बिल्कुल ही नहीं है। अब शिक्षा माफियाओं द्वारा घर बैठे बिना अध्ययन किए छात्रों से रुपए लेकर हाई मार्क की फर्जी डिग्री थमा दी जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में गधे की श्रेणी के अनपढ़ छात्र भी अब घर बैठे बिना अध्ययन किए हाई मार्क की डिग्री प्राप्त कर रहे हैं। प्रयागराज जनपद में शिक्षा माफियाओं का बोलबाला है। प्रयागराज जनपद जैसे बड़े शहर में शिक्षा माफिया पूरी तरह से पाव पसार चुके हैं जिन्हे रोक पाने में उच्चाधिकारी असफल होते दिख रहे हैं। शिक्षा माफिया खंडहरनुमा भवन में स्कूल, कालेज व आईटीआई संस्थान की जुगाड़ लगाकर मान्यता लेने के बाद फर्जी डिग्री बाटने में मशगूल हैं। आईटीआई के नाम पर पच्चीस से तीस हजार रुपए लेकर अप्रशिक्षित छात्रों को फर्जी डिग्री दिए जाने का यह खेल बेखौफ तरीके से चल रहा है जिससे शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन निम्न स्तर पर पहुंच रहा है। प्रयागराज जनपद जैसे बड़े शहर में कई कालेज ऐसे हैं जिनके गेट पर साल भर ताला लटकता है और छात्र उक्त कालेज में बिल्कुल आते - जाते नही हैं फिर भी साल के अंत में अप्रशिक्षित शिक्षा के क्षेत्र में गधे की श्रेणी के छात्रों को हाई मार्क की फर्जी डिग्री शिक्षा माफिया मोटी रकम लेकर थमा देते हैं। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के गंगा किनारे के एक गांव में समाजवादी पार्टी के एक नेता के आईटीआई कालेज में फर्जी शिक्षा डिग्री बांटने का खेल बीते कई वर्षों से बेखौफ तरीके से संचालित हो रहा है। इस कालेज में छात्रों का एडमिशन अभिलेखों तक सीमित रहता है और साल भर कालेज के गेट में ताला लगा रहता है लेकिन साल के अंत में अप्रशिक्षित छात्रों से रुपए लेकर इलेक्ट्रिसियन, मैकेनिकल, फिटर व टर्नर सहित कई महत्वपूर्ण ट्रेड की हाई मार्क की फर्जी डिग्री थमा दिया जाता है जिससे शिक्षा व्यवस्था से जुड़े अधिकारियों के कारनामों पर बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है कि यह फर्जी डिग्री कहां से और किसके इशारे पर बनकर तैयार होती है। छात्रों को बिना प्रशिक्षित कराए फर्जी डिग्री बाटने वाले आईटीआई कालेज के ऊपर जिम्मेदार शिक्षा अधिकारियों की नजर कब पड़ेगी। फर्जी शिक्षा डिग्री बांटने वाले शिक्षा माफियाओं के कारनामों पर योगी सरकार ने जांच कराई तो आईटीआई की फर्जी डिग्री बांटने वाले शिक्षा माफिया उसके प्रबंधक और प्रधानाचार्य पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज हो सकता है। इतना ही नहीं फर्जी डिग्री बांटने वाले इस आईटीआई संस्थान की मान्यता रद्द होने के साथ-साथ प्रबंधक प्रधानाचार्य और शिक्षा माफियाओं को हवालात की हवा भी खानी पड़ सकती है।

लोकनृत्य और माटी के गीतों ने मंच पर बांधी समां

महोत्सव के तीसरे दिन बाल कलाकारों ने गीत और लोकनृत्य से बांधी समां, प्रवाचको ने बखानी प्रेम की महिमा

अखंड भारत संदेस

महोत्सव में बाल कलाकारों ने लोक नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया तथा महोत्सव में स्वामी विनोदानंद जी ने भक्ति व प्रेम की महिमा का बखान करते

करछना। रामपुर स्थित बृजमंगल सिंह इंटर कालेज के परिसर में आयोजित 24वें पांच दिवसीय जमुनापार महोत्सव के तीसरे दिन बुधवार को मंच माटी का लोकरंग विखरा। जमुनापार के कई विद्यालयों से आई बाल प्रतिभाओं ने लोकनृत्य और माटी के गीतों का जलवा विखेरा।प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि रहे समाजसेवी कृष्ण प्रकाश तिवारी ने कलाकारों की जमकर सराहना की।सुमन विद्या निकेतन नैनी की छात्रा पलल्वी मिश्रा और आशी ने झूमर लोकनृत्य की प्रस्तुतियों से समां बांधी तो वही श्रेया,पलक,श्रद्धा और मानसी द्वारा प्रस्तुत सोहर गीत भी सराहे गये।आरूष सिंह गहरवार ने राणा प्रताप की भूमिका में तलवार बाजी का प्रदर्शन कर दर्शको को रोमांचित कर दिया।राधारमण इंटर कालेज नैनी की छात्रा सिमरन चौरसिया, आरती, आंचल, ममता, गौरी, माही और गारगी द्वारा प्रस्तुत डेढिया और पुरबिया लोकनृत्य खूब सराहा गया। श्रीकृष्ण इंटर कालेज अमिलो से आई छात्रा श्रेया त्रिपाठी, स्नेहा, दिव्या, भावना जायसवाल ने अपनी नृत्य प्रस्तुतियों पर सभी को भाव विभोर कर दिया। आयोजक कालेज की मानसी विश्वकर्मा, काजल मिश्रा और नेहा तिवारी ने मत छेड़ बलम मेरे घूघंट को जैसे हरियाणवी लोकनृत्य दर्शक झूम उठे।मदन मोहन मालवीय इंटर कालेज के दिव्यांशू तिवारी की मिजार्पुरी कजरी ने भी खूब रंग जमाया।इसके बाद दूसरे सत्र में मंच पर मंच पर पधारी साक्षी देवी ने,रामहि केवल प्रेम पियारा और प्रेम है सारे जगत का सार जैसे चौपाई, भजनों की प्रस्तुतियों पर प्रेम की महिमा का बखान करते हुए खूब तालियां बटोरी। स्वामी विनोदानंद जी महाराज ने भक्ति और प्रेम की महिमा का बखान करते हुए कहा कि भरत सरिस को राम सनेही,जग,जप राम,राम जप जेही। उन्होने भगवान राम के चरणों में अनुरक्त भरत के प्रेम और भक्ति को संसार में सबसे अनूठा उदाहरण बताते हुए इसे प्रेम की पराकाष्ठा बताया।गोपाल जी महाराज ने ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंड़ित होय जैसे दोहे के माध्यम से प्रेम का गुणगान किया तो वही आचार्य पंकज जी महाराज ने प्रेम को जगत का सार और मूल तत्व बताते हुए कहा कि सामाजिक समरसता के लिए प्रेमरस का प्याला पीना बहुत जरूरी है। संयोजक डॉ.भगवत पाण्डेय ने बाल प्रतिभाओं की सराहना करते हुए संतो और अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से हास्य कवि अशोक बेशरम और राजेन्द्र शुक्ल ने किया।इस मौके पर त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय, योगेन्द्र शुक्ला, ओंमकार नाथ द्विवेदी, श्रीराम शुक्ला, छितिज तिवारी, सबरेज अहमद, सुनील प्रजापति, विशल चौबे, संजय पाण्डेय सरस, बालकृष्ण पाण्डेय, राजेश शुक्ल सहित बडी. संख्या मे लोग मौजूद रहे। समेत बड़ी संख्या में श्रोतागण मौजूद रहे।

त्योहार के मद्देनजर प्रयागराज के रास्ते दिल्ली से पटना के बीच चलेगी विशेष ट्रेन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज ' त्योहार को ध्यान में रखते हुए दिल्ली से पटना के बीच विशेष ट्रेन चलाई जाएगी। यह ट्रेन प्रयागराज जंक्शन से होते हुए जाएगी। नई दिल्ली से ट्रेन 23 अक्तूबर से 20 नवंबर के बीच प्रत्येक शनिवार, मंगलवार एवं बृहस्पतिवार को रात 11.15 बजे चलेगी। ट्रेन अगले दिन शाम 5.30 बजे पटना पहुंचेगी। प्रयागराज में ट्रेन सुबह 9.30 बजे आएगी। पटना से ट्रेन 24 अक्तूबर से 21 नवंबर के बीच प्रत्येक रविवार, बुधवार एवं शुक्रवार को रात 10.30 बजे चलेगी और अगले दिन अपराह्न 3.15 बजे दिल्ली पहुंचेगी। प्रयागराज जंक्शन पर ट्रेन सुबह 5.10 बजे आएगी।

प्रयाग पहुंची चार धाम यात्रा पर निकली स्पेशल ट्रेन

चारधाम की यात्रा पर निकली आईआरसीटीसी की स्पेशल ट्रेन बुधवार की दोपहर प्रयाग जंक्शन पहुंची। खास बात यह रही कि ट्रेन में लगे सभी कोच बौद्धिस्ट सर्किट रेक के रहे। ट्रेन से कुल 121 यात्री प्रयागराज उतरे। यहां से सभी को एसी बस द्वारा त्रिवेणी संगम और बांध स्थित लेटे हुए हनुमान जी मंदिर ले आया गया। देर शाम सभी यात्री अपने अगले पड़ाव वाराणसी के लिए रवाना हो गए। चारधाम यात्रा स्पेशल ट्रेन 17 अक्तूबर को ही दिल्ली से चली थी। ट्रेन वहां से हरिद्वार पहुंची। इस दौरान हरिद्वार से बस एवं टैक्सी द्वारा यात्रियों को बद्रीनाथ ले जाने की योजना थी, लेकिन उत्तराखंड में खराब मौसम की वजह से वहां नहीं ले जाया जा सका। यात्रियों को हरिद्वार, ऋषिकेश एवं आसपास के इलाकों का भ्रमण करवाने के बाद ट्रेन मंगलवार की रात प्रयागराज के लिए रवाना हुई। दिन में ढाई बजे ट्रेन प्रयाग जंक्शन पहुंची। इस ट्रेन से आए आईआरसीटीसी के कर्मचारियों ने बताया कि ट्रेन पुरी, रामेश्वरम और द्वारिका होते हुए एक नवंबर को दिल्ली पहुंच जाएगी।

जिला न्यायालय के वकीलों ने नहीं किया न्यायिक कार्य

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज ' जिला न्यायालय के अधिवक्ताओं ने शाहजहांपुर कचहरी में हुई अधिवक्ता की हत्या के विरोध में न्यायिक कार्य नहीं किया। आम सभा में अधिवक्ताओं ने कहा कि अदालत में भी अधिवक्ता सुरक्षित नहीं हैं। अधिवक्ताओं ने उत्तर प्रदेश सरकार से मृतक अधिवक्ता के परिवार को 50 लाख की आर्थिक सहायता और परिवार के एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी देने की मांग का प्रस्ताव पारित किया और इस संबंध में जिलाधिकारी को ज्ञापन भी सौंपा।शाहजहांपुर कचहरी के अधिवक्ता भूपेंद्र सिंह की हत्या के विरोध में जिला अधिवक्ता संघ की आम सभा बुधवार को सुबह 11 बजे आयोजित की गई, जिसका संचालन संघ के मंत्री प्रमोद सिंह नीरज और विद्याभूषण द्विवेदी ने किया। अध्यक्षता वरिष्ठ उपाध्यक्ष रणजीत यादव ने की। इस दौरान अधिवक्ताओं ने कहा कि कोर्ट परिसर में न्यायिक कार्य के दौरान अधिवक्ताओं की हो रही हत्याएं चिंता का विषय हैं। अधिवक्ता अदालत में भी सुरक्षित नहीं हैं। बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के आह्वान पर अधिवक्ताओं ने विरोध जताते हुए न्यायिक कार्य में भाग नहीं लिया। आम सभा में प्रस्ताव पारित किया गया कि पीड़ित परिवार को 50 लाख की आर्थिक सहायता और एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी दी जाए। बाद में अधिवक्ता जुलूस की शक्ल में जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे और मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। आम सभा में संघ की उपाध्यक्ष शिमला पांडे, संयुक्त मंत्री नरेंद्र कुमार मिश्र पिंटू, कोषाध्यक्ष अनिरुद्ध प्रसाद मिश्र, लाइब्रेरियन राम मणि शुक्ला, ऑडिटर अमरीश त्रिपाठी रवि, कार्यकारिणी सदस्य अजातशत्रु, नवीन त्रिपाठी , भावना पांडे, अभय कुमार द्विवेदी, अजय कुमार पांडे, आशीष मिश्र, पूर्व अध्यक्ष राकेश तिवारी, पूर्व मंत्री राजेंद्र मिश्र रज्जू समेत बड़ी संख्या में अधिवक्ता उपस्थित रहे।

भाजपा अपनादल सांसद के अमर्यादित टिप्पणी पर हंगामा

अखंड भारत संदेश

भाजपा अपना दल के सोनभद्र के सांसद द्वारा अमर्यादित टिप्पणी पर नगर पंचायत कोरांव में पुतला दहन करते व उपजिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते

रत्योरा। भाजपा अपनादल के सोनभद्र से सांसद पकौड़ी लाल कोल द्वारा गत दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे जाति विशेष के लोगो पर अमर्यादित टिप्पणी के वीडियो को लेकर प्रदेश भर में संबंधित जाति के लोगो में आक्रोश देखा जा रहा है। जिसके कारण लोग जगह जगह निंदा करते हुए धरना प्रदर्शन कर रहे है। इसी क्रम में दिन गुरुवार को थाना कोरांव अंतर्गत नगर पंचायत कोरांव चौराहे पर पिंटू चौबे जिला पंचायत सदस्य प्रयागराज के नेतृत्व में सवर्ण आर्मी एवम अन्य लोगो द्वारा जबरदस्त धरना प्रदर्शन करते हुए भाजपा अपना दल सांसद पकौड़ी लाल कोल का पुतला फूक उपजिलाधिकारी कोरांव को ज्ञापन सौंपा। मौके पर पिंटू चौबे ने कहा की जो पार्टी जाति के नाम की ही राजनीति करती है उस पार्टी के सांसद से सम्मान की अपेक्षा तो वैसे भी नहीं किया जा सकता किंतु जिस तरह से खुलेआम मंच से ब्राह्मण क्षत्रिय समाज पर अशोभनीय बयान दिया है वह कत्तई बर्दाश्त नही किया जायेगा और यदि शासन प्रशासन ऐसे कुंठित मानसिकता के लोगो पर कड़ी कार्यवाही नही करती है तो इससे इनका मनोबल और ऊंचा होगा और आने वाले दिनों में यह देश की एकता और अखंडता के लिए घातक सिद्ध होंगे। उक्त मौके पर उपस्थित गोपाल जी पांडे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सवर्ण आर्मी ने लोगो को संबोधित करते हुए कहा की जिस तरह से भाजपा अपनादल के सांसद द्वारा किए गए टिप्पणी को लेकर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं किया गया है उससे यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है की दोनो ही पार्टियां सिर्फ वोट बैंक की राजनीति कर रही है और उनका संबंधित जाति के लोगो के सम्मान से कोई सरोकार नहीं है और यदि इस गंभीर मामले को लेकर इनकी चिरनिंद्रा न टूटी तो आने वाले आगामी विधानसभा के चुनाव खामियाजा भुगतने को तैयार रहे। चर्चित किसान नेता राजेश पांडे ने सांसद पकौड़ी लाल कोल के बयान की निंदा करते हुए सरकार से कड़ी कार्यवाही की मांग किया।

इस मौके पर मुख्य रूप से प्रमोद मिश्र पयासी बबलू शुक्ला अनूप तिवारी अरविंद तिवारी राजेश पांडे अनुज दुबे आलोक शुक्ला ओम प्रकाश शुक्ला दिनेश कुमार पांडेय सुशील तिवारी अश्वनी तिवारी देवराज मिश्रा चंद्रेश पांडे लक्ष्मी कांत पांडे शुभम शुक्ला आदि लोग उपस्थित रहे।

आज प्रयागराज से पहली बार चलेगी ज्योर्तिलिंग दर्शन यात्रा ट्रेन

प्रयागराज। संगम से गुरुवार को पहली बार ज्योर्तिलिंग दर्शन यात्रा ट्रेन रवाना होगी। स्टेशन प्रबंधक अवधेश मणि पाठक सुबह छह बजे हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को रवाना करेंगे। बुधवार की शाम छह बजे तक इस ट्रेन में कुल 720 यात्रियों ने अपनी बर्थ आरक्षित करवा ली थी। आईआरसीटीसी के मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक अजीत कुमार सिन्हा ने बताया कि इस ट्रेन का प्रति यात्री किराया 10395 रुपये निर्धारित किया गया है।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश हाई स्कूल प्रमाण पत्र सह अंकपत्र वर्ष 2012अनुक्रमांक 2182071 एवं इंटर मिडियेट प्रमाण पत्र सह अंक पत्र वर्ष 2014 अनुक्रमांक 1531602 वास्तव में खो गया है।

मंगला प्रसाद पुत्र अमरजीत
ग्राम दशवार मांडा प्रयागराज

महर्षि बाल्मीकि कि जयंती पर आयोजित हुई सद्भावना भोज

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के रेडीगारापुर स्थित सारिनाथ इंटरमीडिएट कॉलेज में महर्षि वाल्मीकि की जयंती पर सद्भावना भोज का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक पुत्र समाजसेवी महर्षि पांडे ने महर्षि वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला और होनहार विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी और खेल प्रेमियों वा खिलाड़ियों के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट के आयोजन पर विचार विमर्श किया। इस अवसर पर भाष्कर पाण्डेय संतोष शुक्ला, जितेंद्र पाण्डेय, रवि शंकर पाण्डेय प्रशांत पाण्डेय नागेंद्र आदर्श पाण्डेय सौरभ पाण्डेय कमलेश पाण्डेय आनन्द अंगद पाण्डेय एवं इंटर कॉलेज के प्रबंधक वरिष्ठ अधिवक्ता महेंद्र पांडेय एवं विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

वाल्मीकि जयंती पर बेल्हा देवी में हुआ रामायण पाठ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के बेल्हा देवी मंदिर परिसर में बुधवार को नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी व कर्मचारियों ने वाल्मीकि रामायण के रचयिता महर्षि रामायण की विधि विधान से पूजा अर्चना की और वाल्मीकि रामायण का पाठ किया।

इसके पूर्व नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी व कर्मचारियों ने वाल्मीकि जी के चित्र पर फूल माला चढ़ाने के बाद उनकी पूजा अर्चना की। बताया जाता है कि बुधवार को अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह प्रातः नौ बजे बेल्हा देवी मंदिर पहुंचकर महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का पाठ शुरु कराया। इस मौके पर आए राम मिलन शुक्ला, अनिरुद्ध प्रसाद पाण्डेय व संस्कृत विद्यालय के शिक्षकों ने पाठ में हिस्सा लिया। इस अवसर पर नगर पालिका के सभासद दीपक, अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, आरआई राजेश बिंद व लाल बहादुर सिंह, स्वच्छ भारत मिशन के डीपी वरुण सिंह, डीसी आशीष मिश्रा, प्रशांत सिंह, मिथिलेश सिंह एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह ने नगरवासियों तथा कर्मचारियों को वाल्मीकि जयंती की बधाई दी। इसी प्रकार टक्करगंज मोहल्ले में पूर्व सभासद राजेश वाल्मीकि की अध्यक्षता में वाल्मीकि जयंती मनाई गई जिसमें देश में समानता व समरसता कायम करने में वाल्मीकि जी की रामायण सहायक रही है। कार्यक्रम में आकाश, राम रतन, गौरी शंकर, अभिषेक, मुनन, दयाशंकर, गणेश आदि ने सहभागिता की। रामजानकी एवं हनुमान मंदिरों में दीप प्रज्जवलन तथा माल्यार्पण के साथ ही रामायण का पाठ हुआ। महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर जनपद के रामजानकी मन्दिर बेल्हा देवी धाम, श्रीराम शिव मन्दिर अमरगढ़, नगर पंचायत कोहड़ौर स्थित रामजानकी मन्दिर, नगर पंचायत प्रतापगढ़ सिटी स्थित शिव मन्दिर, बाराही देवी धाम स्थित राम मन्दिर, सहित अन्य मंदिरों में रामायण पाठ, भजन कीर्तन एवं दीपदान किया गया। जनपद में महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के कार्यक्रम को भव्यता पूर्ण रूप से सम्पन कराये जाने हेतु जिलाधिकारी ने मन्दिरों में नोडल अधिकारियों की तैनाती की थी।

शराब गोदाम मैनेजर से दिनदहाडे़ तमंचे के बल पर साढे आठ लाख की लूट

अखंड भारत संदेश

बैंक में पैसा जमा करने जा रहा था मैनेजर

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली के चिलबिला ओवरब्रिज के पास बेखौफ बदमाशों ने प्रयागराज-अयोध्या हाइवे पर शराब गोदाम के मैनेजर से पिस्टल के बल पर 8 लाख 50 हजार की लूटकर फरार हो गये। तीन बाइक से आए आधा दर्जन लुटेरों ने वारदात को अंजाम दिया। दिनदहाडे़ हुई इस वारदात से शहर में सनसनी फैल गई। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। बता दें कि पॉन्टी चड्ढा के एफएल-2 शराब गोदाम के मैनेजर अनिल मिश्र बुधवार की दोपहर गोदाम से बाइक से बैंक में 8 लाख 50 लाख रुपये जमा करने जा रहा था। मैनेजर सारा पैसा बाइक की डिग्गी में रखा हुआ था। इसी दौरान प्रयागराज-अयोध्या हाइवे पर नगर कोतवाली के चिलबिला ओवरब्रिज के पास तीन बाइक से आए आधा दर्जन लुटेरों ने मैनेजर पर पिस्टल सटा दिया और उसकी बाइक की डिग्गी में रखा 8 लाख 50 हजार रुपये लूटकर फरार हो गये। सभी लुटेरे नकाबपोश में थे जिससे उनकी पहचान नहीं हो सकी। दिनदहाडे़ हुई लूट से शहर में सनसनी फैल गई। इस दौरान पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने घटना स्थल का निरीक्षण किया और पुलिस कर्मियों को खुलासे का निर्देश दिया। हर चौराहों पर पुलिस चेकिंग तेज कर दी गई। पुलिस लुटेरों की सुराग में लगी हुई है। उधर मैनेजर से हुई इस लूट को लेकर व्यापारियों में भी आक्रोश दिखा। व्यापारियों ने पुलिस से इसके जल्द खुलासे की मांग की है।

ट्रांसफार्मर जलने से पांच झुलसे, चार हुये रेफर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नेशनल हाइवे लखनऊ-वाराणसी पर स्थित ट्रामा सेंटर के सामने अचानक ट्रांसफार्मर जलने से पांच लोग झुलस गये। इनमें से चार की हालत गंभीर होने पर इन्हें एसआरएन प्रयागराज रेफर कर दिया गया है। झुलसे चार लोग यहां कोरोना वैक्सीन लगवाने आये थे। ट्रांसफार्मर जलने को लेकर जहां ट्रामा सेंटर मे आये मरीजों मे दहशत देखी गई। वहीं नेशनल हाइवे पर भी कुछ समय के लिए अफरातफरी मच गयी।

बुधवार को दोपहर बाद ट्रामा सेंटर के सामने लगा ट्रांसफार्मर अचानक जल उठा। इससे निकली आग से कैम्पस मे कोरोना वैक्सीन लगवाने आये भदारीकला के जगदीशचंद्र के पुत्र सूर्यभान सिंह 35 तथा अभिमान सिंह का पुरवा इटौरी निवासी हरिकिशोर की पतने कृष्णा कुमारी 60 व जलेशरगंज निवासी श्रीराम निर्मल के पुत्र दीपक 36 एवं महेशगंज थाना के सरैया निवासी शंकरलाल के पुत्र अंकुर कुमार 25 तथा लालगंज निवासी सत्य नारायण के पुत्र इंद्रपाल वर्मा 37 गंभीर रूप से झुलस गये। घटना मे झुलसे मरीजो को आननफानन मे ट्रामा सेंटर के अंदर ले जाया गया। यहां अधीक्षक डा. अरविंद गुप्ता की देखरेख मे झुलसे मरीजों का उपचार किया गया। हालांकि कृष्णाकुमारी के आंशिक झुलसने के कारण प्रारंभिक उपचार के बाद इन्हें घर भेज दिया गया। झुलसे लोगों मे दीपक तथा अंकुर कुमार की स्थिति गंभीर बताई गई है। दीपक तथा अंकुर व सूर्यभान एवं इंद्रपाल को प्रारंभिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने प्रयागराज एसआरएन रेफर कर दिया गया।

शाहजहांपुर में वकील की हत्या पर रुलर्स बार एसोसिएशन ने जताया आक्रोश

कलेक्ट्रेट परिसर में बैठक कर मृतक परिवार को 50 लाख व नौकरी की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। ऑल इंडिया रुलर्स बार एसोसिएशन की बैठक कलेक्ट्रेट परिसर स्थित संकट मोचन धाम में हुई। बैठक में शाहजहांपुर कोर्ट परिसर में अधिवक्ता भूपेंद्र सिंह की हत्या के लिए विरोध जताया गया तथा पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाते हुए अधिवक्ताओं ने अपना आक्रोश जताया।

बैठक में यह मांग किया गया कि मृतक अधिवक्ता के परिवार को 50 लाख मदद तथा एक आश्रित को नौकरी दिया जाए तथा साथ ही साथ यह भी मांग किया गया कि प्रदेश सरकार जल्द से जल्द एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट लागू करें तथा जिलाधिकारी से यह मांग किया गया कि जिला कलेक्ट्रेट परिसर के सभी गेटों पर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई जाए तथा सीसीटीवी कैमरा लगवाया जाए। वह बिना तलाशी के कोई भी अंदर प्रवेश न करने पाए। कचहरी परिसर में किसी भी प्रकार के असलहो के आने-जाने पर प्रतिबंध लगे। इस दौरान जिलाधिकारी को संबंधित ज्ञापन भी भेजा गया। बैठक में मुख्य रूप से पूर्व अध्यक्ष रोहित शुक्ला, पूर्व महामंत्री जेपी मिश्र, वीपेंद्र सिंह, अंजनी सिंह, बाबा मनीष सिंह, दिवाकर सिंह, दिव्यत सिंह, विनय सिंह, बीके श्रीवास्तव, संतोष नारायण मिश्र, प्रशांत सिंह बंटी, विकास सिंह, राघवेंद्र प्रताप सिंह, मनोज कुमार, शक्ति सिंह, जितेंद्र, भोले, अरुण सिंह, राजू आसिफ सिद्दीकी, राहुल श्याम गुप्ता, सचिन्द्र सिंह, विनोद गुप्ता मनीष नंदन श्रीवास्तव, सद्दाम अली, राहुल वैश्य, विजय कांत मिश्र, अजय सिंह, रामेंद्र पाण्डेय, धनंजय सिंह, प्रवीण चतुर्वेदी आदि अधिवक्ता गण उपस्थित थे।

वकील की हत्या पर साथियों ने नारेबाजी कर सौंपा ज्ञापन

लालगंज, प्रतापगढ़। कोर्ट रूम मे दिनदहाड़े साथी अधिवक्ता की हत्या की घटना को लेकर बुधवार को यहां भी वकीलों मे आक्रोश दिखा। शाहजहांपुर मे अधिवक्ता भूपेन्द्र सिंह की दिनदहाड़े कोर्ट रूम मे जघन्य हत्या को लेकर वकील सुबह से ही आक्रोशित दिखे। वकीलों ने संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष राममोहन सिंह के नेतृत्व मे तहसील गेट पर बिगड़ती कानून व्यवस्था के खिलाफ घण्टो जमकर नारेबाजी की। इसके बाद वकीलों ने एसडीएम राहुल यादव को राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के जरिए मृतक अधिवक्ता के परिजनो को पचास लाख मुआवजा तथा हत्यारोपियों को कडी सजा दिलाये जाने एवं अधिवक्ता सुरक्षा अधिनियम की मांग रखी। एसडीएम ने अधिवक्ताओं को समझाबुझाकर माहौल को शांत कराया। इसके पूर्व आमसभा में वकील हत्याकांड के विरोध मे न्यायिक कार्य से विरत रहने का प्रस्ताव पारित किया गया। सभा का संयोजन उपाध्यक्ष संतोष पाण्डेय व संचालन महामंत्री प्रवीण यादव ने किया। इस मौके पर टीपी यादव, अनिल महेश, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विकास मिश्र, राव वीरेन्द्र सिंह, जयप्रकाश शुक्ल, शैलेंद्र सिंह, हरिशंकर द्विवेदी, शिवाकांत उपाध्याय, सुरेंद्र सिंह, दिनेश सिंह, संजय सिंह, मिथलेश त्रिपाठी, सुरेश मिश्र आदि अधिवक्ता रहे।

व्यापारियों की समस्याओं को लेकर एसपी से मिला व्यापार मण्डल

उद्योग व्यापार मण्डल ने एसपी के सामने रखी अपनी मांगें

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी के नेतृत्व में पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल से व्यापारी प्रतिनिधि मंडल मिला और अपनी मांगों को पुलिस अधीक्षक के सामने रखा जिस पर एसपी ने आश्वासन दिया।

जिलाध्यक्ष राजेन्द्र केसरवानी ने कहा कि ठंड के दिनों में चोरियों की समस्याओं से बचने हेतु, प्रातःकालीन इंटरसिटी ट्रेन से जाने वाले व्यवसायियों को सुरक्षा के लिए प्रातः तीन बजे से पुलिस चौकसी इंतजाम हेतु, प्रतापगढ़ जनपद में अपराध पर अंकुश लगाने के लिए नशीली मादक पदार्थों के आपूर्ति पर रोक लगाने के संबंध में तथा जनपद में दबंगों द्वारा वर्षों से रह रहे जमीनों पर काबिज लोगों को डरा धमका कर तोड़फोड़ करके भगा कर कब्जा करने के रोकथाम हेतु बातों पर गहनता से विचार करने के लिए एसपी से कहा किया जिस पर एसपी ने आश्वासन दिया है। इस दौरान पुलिस अधीक्षक को सभी त्योहारों को सकुशल सम्पनन कराने पर भी उनका आभार जताया गया। इस मौके पर प्रां. उपाध्यक्ष राम शंकर जायसवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखन बाबा, जिला महामंत्री संजय सोनी, जिला उपाध्यक्ष श्याम लाल जायसवाल व सुरेश चंद्र केसरवानी, जिला संगठन मंत्री सरदार कुलविंदर सिंह व राहुल केसरवानी, सतीश सोनी नगर कोषाध्यक्ष मो.शकील अख्तर आदि मौजूद रहे।

त्योहार पर पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था के लिए जताया आभार

प्रतापगढ़ - कुंडा प्रतापगढ़। व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने त्योहार पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने के लिए बुधवार को पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल का आभार जताया। साथ ही सर्दी में होने वाली चोरी की घटनाएं रोकने का प्रयास करने की अपील की। व्यापार मंडल के प्रांतीय उपाध्यक्ष राम शंकर जायसवाल, लखन बाबा, संजय सोनी आदि के साथ व्यापारियों का प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक के पास पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल ने जन्माष्टमी, मोहर्रम, नवरात्र, विजयदशमी, बारावफात आदि त्योहार कुशलता से संपनन कराने पर एसपी की सराहना की। व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष राजेंद्र केसरवानी ने ठंड के मौसम में होने वाली चोरी की घटनाओं का जिक्र किया। साथ ही नशे का अवैध कारोबार करने वालों पर रोक लगाने की अपील की। इस दौरान संजय सोनी, श्याम लाल जयसवाल, सुरेश चंद्र केसरवानी, सरदार कुलविंदर सिंह, राहुल केसरवानी आदि मौजूद रहे।

बांग्लादेश में हिन्दुओं के साथ हुए अमानवीय व्यवहार पर विहिप ने जताई नाराजगी

राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से भेजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बांग्लादेश में हुए हिंदुओं के साथ अमानवीय व्यवहार एवं दुर्गा पूजा पंडाल को तहस नहस करने के संदर्भ में बुधवार को विश्व हिंदू परिषद प्रतापगढ़ द्वारा जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा गया।

इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि बांग्लादेश में हिन्दुओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है। दुर्गा पूजा पण्डाल को तहस-नहस करने के बाद हिन्दू परिवारों पर आक्रमण हो रहा है। इसको देखते हुए विहिप बांग्लादेश सरकार से मांग करती है कि हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिये कडे. कदम उठाए और भारत सरकार बांग्लादेश सरकार पर इन घटनाओं को रोकने के लिये बातचीत करे। इस मौके पर विभाग मंत्री रजनीश तिवारी, जिलाध्यक्ष अमरेश सिंह, जिला उपाध्यक्ष अंजनी जायसवाल, जिला मंत्री संदीप तिवारी (राजन), जिला सहमंत्री विमल सिंह, जिला विशेष संपर्क प्रमुख प्रदीप सिंह, जिला समरसता प्रमुख अजय सिंह, जिला गौरक्षा प्रमुख विजय सोलंकी, प्रखंड उपाध्यक्ष दिलीप सिंह,खंड संयोजक शुभम मिश्रा, अशोक पांडे आदि मौजूद रहे।

सरकार घोंट रही लोकतंत्र का गलाः व्यास गोंड

लखपेड़ा भवानीगंज में बोले सपा के एससी/एसटी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष

0अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की समाजवादी एससी/एसटी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष ब्यास गोड द्वारा आज बाबागंज बिधानसभा के लखपेड़ा भवानीगंज सराय छत्ता में आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

इस दौरान ब्यास गोंड ने संबिधान बचाओ यात्रा के दौरान कहा कि संबिधान की देश और प्रदेश सरकार द्वारा धज्जियां उड़ाई जा रही है और लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव ने कहा कि 2022 में समाजवादी पार्टी प्रदेश में सरकार बनाने जा रही है और राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। इस मौके पर जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, प्रदीप सरोज, रमेश सरोज, आशा सरोज, कमलेश सरोज जिला पंचायत सदस्य, राम आसरे सरोज जिला पंचायत सदस्य, सुषमा पाल, राम अवध यादव, विनीत यादव, तनबीर मिल्की, इस्तियाक अहमद, छोटे लाल कुरील, अभिषेक यादव, राजू यादव, ओम पीकेश यादव, ऋषभ यादव, हरिश्चन्द सरोज, आर के भीम, बिजय पाल, अरविंद सरोज जिला सचिव, पितई लाल मौर्य आदि लोग मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। महेशगंज थाना क्षेत्र के राजापुर बिंधन गांव में बीती रात गोपी सरोज पुत्र रामदुलारे सरोज (37) वर्षीय की घर के बाहर स्थित नीम के पेड से लटकती हुई शव मिलने से हड़कम्प मच गया। परिजनों में चीख पुकार मच गई। सूचना पर पहुची महेश गंज पुलिस ने शव को ग्रामीणों की मदद से पेड़ से नीचे उतरवाया और लिखा पढ़ी करके पोस्टमार्टम के लिए भेजा। घटना का कारण पता नही चल सका पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद हत्या का कारण पता चलेगा।

परियावां, प्रतापगढ़। महेशगंज थाना क्षेत्र में आये दिन हो रही चोरियों से लोगों में आक्रोश पनपने लगा है। चोरों को पुलिस का जरा भी खौफ नहीं है जिससे आए घटना को अंजाम दे रहे हैं। मालूम हो कि महेशगंज थाना क्षेत्र के झींगुर तिराहे पर चोरों ने बीती रात को बृजभूषण मिश्र की पान की लकड़ी की गुमटी का ताला तोड़कर किनारे लगी खिड़की को खोलकर अंदर रखा दो हजार रुपया नकदी व सामान चुरा ले गये। बता दें कि इसी गुमटी में दो दिन पहले भी चोरी की वारदात को चोरों ने अंजाम दिया था, जिसकी तहरीर पीड़ित ने महेशगंज थाने में दी लेकिन पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई जिससे दुस्साहस चोरो ने घटना फिर अंजाम दे दिया।

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने किशोरी के साथ छेडछाड तथा पास्को एक्ट का केस दर्ज किया है। अगई के लल्लन वर्मा पुत्र रामकुमार ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती सत्रह अक्टूबर को शाम छह बजे गांव के जीतलाल गुप्ता पुत्र रामसुमेर ने पीड़ित की भतीजी के साथ छेडछाड की। तहरीर मे कहा गया है कि फूलचंद्र वर्मा नौगीर थाना सांगीपुर की पुत्री इन दिनों बुआ के घर आयी थी। घटना के दिन आरोपी ने आटे के कारखाने के पास अकेली देखकर उसके साथ बदसलूकी की। शोर मचाने पर आरोपी भाग निकला। किशोरी ने रोते बिलखते घर पहुंचकर आपबीती सुनाई। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है।

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने महिला की पिटाई को लेकर चार आरोपियो के खिलाफ मारपीट तथा गालीगलौज व धमकी का केस दर्ज किया है। कोतवाली के हिरऊ का पुरवा बेलहा निवासी प्रेमचंद्र गौतम की पतने रीता देवी ने दी गई तहरीर मे कहा है कि अठारह अक्टूबर की शाम छः बजे आरोपी गांव के अभय सरोज नन्हें लाल, अनुज तथा अंकुश ने एकराय होकर उसे लाठी डंडे से मारापीटा। आरोपियो ने शोर मचाने पर गाली देते हुए पीड़िता को जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपियो के खिलाफ मंगलवार की रात केस दर्ज किया है। लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के बेलहा गांव में हो रही श्रीमदभागवत कथा ज्ञानयज्ञ मे बुधवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ जुटी दिखी। कथाव्यास स्वामी अशोकानंद महाराज ने श्रद्धालुओं को श्रीकृष्ण भगवान के छप्पन भोग गोवर्धन पूजा के महत्व को बताया। वहीं श्रद्धालुओं द्वारा कथा श्रवण के बीच भगवान गोवर्धन का पूजन भी किया गया। कथाव्यास जी ने कहा कि भगवान की कृपा से ही संसार का संचालन हुआ करता है। उन्होनें कहा कि भगवान् श्रीकृष्ण जी की आराधना मे ही मनुष्य को दुःख और संताप से मुक्ति मिला करती है। उन्होनें कहा कि भगवान ने मानव पीड़ा हरने के लिए अपने लोकावतार मे लीला के जरिए मनुष्य को सत्य

खबर संक्षेप

दो दिन होगा ग्राम पंचायत सदस्यों का प्रशिक्षण

कौशांबी। राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत विकास योजना निर्माण हेतु ग्राम पंचायत के निर्वाचित वार्ड सदस्यों का दो दिवसीय अनावासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 अक्टूबर और 22 अक्टूबर को जनपद मुख्यालय मंझनपुर के विकास भवन स्थित सरस हाल में आयोजित किया गया है इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्राम सदस्यों को विकास से संबंधित कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा उक्त जानकारी एडीओ पंचायत कमला कांत मिश्र ने दी है।

शिवपाल सिंह का आगमन आज

कौशांबी। प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के नेता पूर्व काबीना मंत्री शिवपाल सिंह यादव का आगमन 21 अक्टूबर को मंझनपुर के ओसा रोड में हो रहा है शिवपाल सिंह यादव के आगमन को लेकर पार्टी पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम स्थल पर तैयारी की जा रही है।

सराय अकिल नगर में फिर अराजकता फैलाने की कोशिश

देर रात आक्रोशित हजारों लोगों ने थाना पहुंचकर की नारेबाजी सवालों के घेरे में है सराय अकिल थाना पुलिस की कार्यशैली, दोषी पुलिस जनों पर नहीं हुई कार्यवाही

विवाद के बाद सराय अकिल थाने में मौजूद विधायक चायल संजय गुप्ता और पूर्व विधायक शिवदानी व अन्य

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल नगर में फिर अराजकता फैलाने की कोशिश की गई है थाना पुलिस अराजकता फैलाने वालों का साथ देने पर लगी थी जिससे आक्रोश और बढ़ गया मामले की जानकारी मिलते ही सराय अकिल कस्बे के हजारों लोग थाने पर एकत्रित हो कर नारेबाजी करने लग गए बात बढ़ने की जानकारी मिलने पर चायल विधायक संजय गुप्ता भी सराय अकिल पहुंचे और उत्तेजित लोगों को समझा-बुझाकर शांत कराया लेकिन घटना को 20 घंटे बीत जाने के बाद भी दोषी पुलिसकर्मियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर आला अधिकारियों ने उन्हें निलंबित नहीं किया है आखिर दोषी पुलिसकर्मियों पर कठोर कार्यवाही करने में आला अधिकारियों को इतना संकोच क्यों है बीते विधानसभा चुनाव के पहले भी सराय अकिल कस्बे में अराजकता फैलाने की कोशिश की गई थी सराय अकिल कस्बा बेहद संवेदनशील है और यहां पर जाति धर्म के नाम पर अराजकता फैलाने का बार बार प्रयास होता है इस मामले में पुलिस को भी ईमानदारी से निष्पक्ष कार्यवाही करने का प्रयास करना होगा लेकिन थाना पुलिस ने बारा वफात के मौके पर निष्पक्ष कार्यवाही ना कर पक्षपाती होने का संदेश दे दिया है जो योगी सरकार की पुलिसिया व्यवस्था पर बड़ा सवाल है।

मंगलवार को सरायअकिल नगर में बारावफात का जुलूस परंपरागत मार्ग से हटकर चावल मंडी में चल रहे रामलीला मंच के पास पहुंच गया और रामलीला मंच के सामने ही प्रदर्शन करना शुरू कर दिया इसी प्रदर्शन के बीच सराय अकिल थाने के सिपाही ने मंच पर पहुंचकर रामलीला मंचन में व्यवधान डालने की कोशिश करते हुए मंच की साउंड और बिजली की तार को काटकर मंचन में भी व्यवधान डाल दिया चायल विधायक संजय गुप्ता का कहना है कि बारावफात में शामिल कुछ व्यक्ति रामलीला के मंच पर चढ़कर इस्लामिक झंडा फहराते हुए रामलीला का साउंड बन्द कर दिया जिससे पूरे कस्बे में तनाव फैल गया और कस्बे के हजारों लोग कोतवाली पहुंच गए विधायक ने सरायअकिल नगर में तत्काल पहुंच कर थाने में बड़ी संख्या में एकत्रित लोगों सहित रामलीला कमेटी के अध्यक्ष गोपाल केशरवानी की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए थाने के त्योहार रजिस्टर में बारावफात के जुलूस का ब्यौरा चेक किया तो उन्होंने पाया कि पूर्व के वर्षों में कभी भी जुलूस चावल मंडी रामलीला मंचन स्थल से नही गुजरा था परंतु इस बार आयोजकों ने जानबूझ कर चावल मंडी में चल रहे रामलीला मंच के सामने जुलूस ले जाकर बीस मिनट तक प्रदर्शन कर कस्बे में सांप्रदायिक तनाव व दंगा कराने का प्रयास किया दूसरे रास्ते से जुलूस निकालने के मामले में भी पुलिस जानबूझकर अनजान बनी रही यह पुलिस की बड़ी भूल है तथ्यों के सामने आने के पश्चात रामलीला कमेटी के अध्यक्ष गोपाल केशरवानी की तहरीर पर जुलूस के आयोजक सहित एक हजार लोगों पर साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने व दंगा कराने के प्रयास का मुकदमा पंजीकृत कराते हुए कस्बे वासियों को विधायक ने आश्वस्त किया कि किसी भी कीमत पर सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वालो को बख्शा नही जायेगा उपस्थित सभी नगर वासियों ने आरोप भी लगाया कि दंगा करने की पूरी साजिश थी नगर वासियों का कहना है कि आपसी सौहार्द ना बिगड़े इस लिए विधायक को भी अवगत कराया विधायक श्री गुप्ता के सूचना के बाद उप जिलाधिकारी चायल सहित क्षेत्राधिकारी चायल व कई थानों की फोर्स मौके पर पहुँच गयी विधायक ने मौजूद सभी नगर वासियों को शांत कराते हुए घर जाने की अपील किया कहा की आपसी सौहार्द बनाए रखना हैं किसी तरह का विवाद ना उत्पन्न होने पाए विवाद शांत होने के बाद नगर वासियों ने संजय गुप्ता जिंदाबाद के नारे लगाये 1000 लोगों को नामजद किए जाने के बाद पुलिस किसी को गिरफ्तार नहीं कर सकी है वहीं मंच पर लाइट के तार काटने वाले दोषी पुलिस जनों पर भी कार्यवाही नहीं हो सकी है।

धरना प्रदर्शन सभा कर अधिवक्ताओं ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

विरोध प्रदर्शन करते अधिवक्ता

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। शाहजहांपुर जनपद में दिनदहाड़े अधिवक्ता भूपेंद्र सिंह की कचहरी परिसर में 19 अक्टूबर को हत्या किए जाने के विरोध में कौशांबी जनपद के अधिवक्ताओं ने कचहरी परिसर में धरना प्रदर्शन सभा कर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा है अधिवक्ताओं ने कहा कि दिनदहाड़े जिस दुस्साहस से अधिवक्ता भूपेंद्र सिंह की हत्या की गई है यह घोर निंदनीय है अधिवक्ताओं ने कहा कि मृतक आश्रित परिवार को सुरक्षा प्रदान की जाए सरकारी नौकरी दी जाए और हत्यारों की गिरफ्तारी कर उन्हें फांसी की सजा दिलाई जाए इस मौके पर मॉडल डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के पूर्व जिला अध्यक्ष नर नारायण मिश्रा वर्तमान अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी महामंत्री तुषार तिवारी केडी द्विवेदी नरेंद्र त्रिपाठी अनुराग तिवारी अरविंद सिंह अजय पांडेय राकेश पांडेय अवनीश त्रिपाठी सहित तमाम अधिवक्ता उपस्थित रहे।

मनौरी में आतंकवाद का फूंका गया पुतला

मनौरी कौशाम्बी। विश्व हिंदू परिषद के तत्वाधान में चायल प्रखंड के अध्यक्ष प्रदीप कुमार व कौशाम्बी जिला संगठन मंत्री विनय कुमार की अगुवाई में मनौरी कस्बे में जिहादियों का पुतला फूंका गया है बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार, धार्मिक स्थलों ,पूजा पंडालों में तोड़फोड़ के विरोध में आज मनौरी बाजार में बांग्लादेश का पुतला फूंका गया , विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के लोगों के अंदर आतंकवाद के खिलाफ बड़ा आक्रोश देखा गया और पाकिस्तान मुदार्बाद, बांग्लादेश मुदार्बाद, आतंकवाद मुदार्बाद का नारा लगाया गया, आतंकवाद के पुतला दहन में शम्भू लाल केशरवानी, सुधीर कुमार केशरवानी, राधे श्याम केशरवानी, रतन केशरवानी, नीरज केशरवानी, हिमांशु केशरवानी, योगेश कुमार, रवि कुमार, गौतम गुप्ता रिंकू केशरवानी, मनीष गुप्ता,कुबेर चंद्र केशरवानी धीरेंद्र कुमार पप्पू,टीकम चौरसिया, शिवम केशरवानी आदि सैकड़ो लोग मौजूद रहे पिपरी थाना के चायल चौकी इंचार्ज आलोक कुमार अपने दल बल के साथ मौके पर मौजूद रहे।

जिहादियों का पुतला फूंकते विश्व हिंदू परिषद नेता

विहिप ने धरना प्रदर्शन कर फूंका पुतला

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। बांग्लादेश में लगातार हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के मामले को लेकर विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारियों ने जनपद मुख्यालय मंझनपुर में जेहादियों का पुतला फूंक कर विरोध प्रदर्शन किया है विश्व हिंदू परिषद के नेताओं ने कहा कि हिंदुओं पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार किया जा रहा है हिन्दुओ पर अत्याचार को बंद किया जाए जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन में विहिप के नेताओं ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर जिहादियों द्वारा अत्याचार किया जा रहा है मंदिर और देवी देवताओं की मूर्तिया तोड़े जा रहे हैं पूजा स्थल को नष्ट किया जा रहा है हिंदुओं की हत्या की जा रही है उन्होंने कहा कि बांग्लादेश की सरकार जिहादियों पर कठोर कार्रवाई करें वरना विश्व हिंदू परिषद जिहादियों को सबक सिखाना जानता है।

विशेष संचारी रोग अभियान शुरू सीएमओ ने दिखाई हरी झंडी

कौशाम्बी। जनपद में मंगलवार को विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरूआत हुई है मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ के.सी राय ने हरी झंडी दिखाकर इस अभियान का शुभारंभ किया। 17 नवंबर तक चलने वाले इस अभियान का उद्देश्य जनपद में संचारी रोगों के संक्रमण पर नियंत्रण एवं लोगों को जागरूक करना है। स्वास्थ विभाग एवं कर्मचारियों ने संचारी रोग जागरूकता हेतु पी.एच.सी मंझनपुर से मंझनपुर चौराहे से वापस पी.एच.सी मंझनपुर तक पैदल मार्च कर रैली निकालीमुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ के.सी राय ने बताया कि मच्छर जनित बीमारियों पर नियंत्रण पाने के लिए सरकारी विभागों के साथ-साथ जनता में भी जागरूकता होने की बहुत जरूरत है। घरों से निकलने वाले कूड़े निस्तारण न करना, जलभराव (जल संचय) संचारी रोगों को बढ़ाता है। उन्होंने आशाओं को संबोधित करते हुए उनके कठिन परिश्रम की सराहना की एवं स्वास्थ्य विभाग के समस्त कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा आश्वस्त किया कि आशाओं का समस्त मानदेय का समय पर भुगतान किया जायेगा। जिला मलेरिया अधिकारी अनुपमा मिश्रा ने कहा कि शासन से मिले हुए दिशानिदेर्शों पर हम सजगता से काम करेंगे। स्वास्थ्य विभाग की टीमें व फ्रन्ट लाइन वर्कर्स (आशा एवं आंगनबाड़ी) घर-घर दस्तक देकर बुखार, खांसी, आई0एल0आई (इन्फ्लूएंजा लाइक इलनेस), टीबी, कोरोना आदि बीमारियों के संभावित मरीजों को चिन्हित करेंगी। इसके साथ ही वह कुपोषित बच्चों का सर्वे कर इसकी सूचना विभाग को देंगी। आशा को आंगनबाड़ी के साथ मिलकर गांव में लोगों को संचारी से बचाव के उपाय बताने के निर्देश दिए हैं जिला मलेरिया अधिकारी अनुपम मिश्रा ने कहा कि कूलर टंकी अनुपयोगी पात्रों में पानी इकट्ठा ना होने दें फुल आस्तीन के कपड़े पहने एवं मच्छरदानी का प्रयोग करें साफ सफाई का खास ख्याल रखें।

सफाई व कोविड-19 प्रोटोकॉल के प्रति करेंगे जागरूक

प्रभारी चिकित्सा अधिकारी मंझनपुर डॉक्टर अरुण पटेल ने उपस्थित आशा, आशा संगनी एवं टीम को संचारी रोग नियंत्रण अभियान की विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान 10 सम्बंधित विभाग आपसी समन्वय के माध्यम से कार्य का निर्वहन करेंगे। इसके अंतर्गत कचरा निस्तारण, साफ-सफाई, जल भराव को रोकने व शुद्ध पेयजल की उपलब्धता आदि पर जोर देते हुए विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इस दौरान साफ-सफाई व कोविड-19 को लेकर मास्क व उचित दूरी बनाए रखने के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा।

मुख्य चिकित्साधिकारी ने कहा कि फ्रन्ट लाइन वर्कर्स आशा एवं आंगनबाड़ी घर घर देंगी दस्तक

जिला मलेरिया अधिकारी ने कहा कि हमारा पहला प्रयास जनता को जागरूक करना

गृहमंत्री अमित शाह ने मोदी वैन को दिखाई हरी झंडी

कौशाम्बी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में 20 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में मंगलवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में 'मोदी वैन' को हरी झंडी दिखाई। भारतीय जनता पार्टी के सेवा ही संगठन कार्यक्रम के तहत यह वैन कौशांम्बी विकास परिषद के द्वारा संचालित की जा रही है। भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री व कौशांबी से लोकसभा सांसद विनोद सोनकर ने अपने संसदीय क्षेत्र के लिए इस वैन की शुरूआत की हैं। कौशांबी संसदीय क्षेत्र के पांच विधानसभाओं में पांच वैन घूमेंगी। जिसमें कौशाम्बी जिले के सिराथू, चायल एवं मंझनपुर एवं प्रतापगढ़ जिले के कुण्डा एवं बाबागंज विधानसभाओं में एक-एक वैन रहेगी। सांसद विनोद सोनकर ने इस वैन की खासियत के बारे में बात करते हुए कहा कि इनमें 32 इंच का टेलीवीजन लगा है और यह पूरी तरह हाईस्पीड इंटरनेट सर्विस से लैस हैं। जगह-जगह ये वैन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का प्रसारण करेंगी, साथ ही उनकी रैलियां व भाषणों को भी जनता को दिखाएंगी। भाजपा नेता ने बताया कि यह वैन ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना के प्रति लोगों को जागरूक और टीकाकरण के लिए प्रेरित करेगी। इसके अलावा वैन जहां भी जाएगी गांवों को स्वच्छ रखने, जल संचय करने के लिए भी लोगों को प्रेरित करेंगी।इतना ही नहीं वैन के जरिए केंद्र की विभिन्न योजनाओं के लिए लोगों का पंजीकरण भी किया जाएगा।उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी सांसद राजेन्द्र पांडेय ने दी है।

रामलीला मंचन देखते ग्रामीण

रामलीला मंचन में कलाकारों ने प्रभु श्री राम जन्म कार्यक्रम प्रस्तुत किया

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा गांधी चबूतरे मैदान में चल रही रामलीला में सोमवार को रावण दिग्विजय और रावण के अत्याचार से सभी देवता और पृथ्वी वासियों के दुःखी होने का मंचन रामलीला कलाकारो द्वारा किया गया आकाशवाणी द्वारा भगवान के जन्म लेने की जानकारी मिली इससे देव -मानव अत्यंत प्रसन्न हुए मंगलवार की रात भगवान श्री राम के जन्म का अति सुंदर मंचन रामलीला कलाकारों द्वारा किया गया रामलीला कार्यक्रम में मौजूद सैकड़ों रामलीला प्रेमियों ने इस प्रसंग को देखकर भगवान श्री राम को नमन किया प्रदर्शन में राजा दशरथ का दरबार गीत संगीत के मधुर स्वर में सरोबोर हो गया श्री राम के जन्म की खुशी में गीत का मंचन किया गया। माता कौशल्या को भगवान विष्णु द्वारा दिये गए वरदान कि माता कौशल्या ने भगवान विष्णु जैसा पुत्र मांगा था उस वरदान को चरितार्थ करने के लिए भगवान विष्णु ने राम के रूप में अवतार लिया इसके बाद लक्ष्मण,भरत,शत्रुघ्न का जन्म होता है प्रभु के जन्म की खुशी में नृत्य संगीत होता है! मुनि विश्वमित्र राजा दशरथ के दरबार पहुंचकर राक्षसों से यज्ञ रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण की याचना करते हैं जिसका सजीव प्रस्तुति दी गयी इस अवसर पर सैकड़ों रामलीला प्रेमी मौजूद रहकर रामजन्म का अभिनय देख मंत्रमुग्ध हुए।

संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारंभ निकाली गई जागरूकता रैली

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा के अधीक्षक डॉ नीरज सिंह ने संचारी रोग नियंत्रण अभियान का शुभारंभ करते हुए विभागीय बैठक का आयोजन किया जिसमें सभी लोगों को संचारी रोग अभियान को सफल बनाने के लिए विभाग वार कार्य करने के निर्देश दिए गए अधीक्षक डॉ नीरज सिंह के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा से जन जागरूकता रैली निकाली गई और गांव गांव जाकर एंटी लारवा टेमीफोस का स्प्रे कराया गया जिससे कि मलेरिया, फाइलेरिया, डेंगू ,चिकनगुनिया आदि रोगों की रोकथाम हो सके साथ ही साथ लोगों को अभियान के बारे में जागरूक करते हुए उन्होंने अनुरोध किया कि घर के सामने जलभराव ना होने दें ,कूलर के पानी को बदलते रहें ,टायर, ट्यूब, गमलों के पानी को खाली कर दें, गड्ढों को मिट्टी से ढक दिया जाए, पूरे बॉह वाले कपड़े ,पैंट और मोजे पहने ,मच्छरदानी का उपयोग करें। कार्यक्रम के दौरान डॉ नीरज सिंह ने कहा कि खुले में शौच न करें शौचालय का उपयोग करें चूहे और छछूंदर से बचाव के उपाय उपयोग करें उन्होंने कहा कि खाने के पहले और शौच के बाद हाथ धोएं खुले में शौच ना जाएं और शौचालय का सदुपयोग करें खाना बनाने के लिए और पीने के लिए इंडिया मार्क 2 हैंड पंप के जल का उपयोग करें साथ ही साथ स्वच्छता के नियमों का पालन करते हुए बीमारियों से बचने के निर्देश उन्होंने दिए। संचारी रोग नियंत्रण अभियान की शुरूआत करते हुए डॉ नीरज सिंह ने कहा कि मास्क का उपयोग करें और 2 गज की दूरी बना कर रहे हैं इस क्रम में छिड़काव का कार्य स्माइलपुर, कमालपुर, देवीगंज बसवारी सौरई बुजुर्ग सैनी में किया गया । संचारी रोग नियंत्रण अभियान 19 अक्टूबर से 17 नवंबर तक चलाया जाएगा साथ ही साथ दस्तक अभियान 19 अक्टूबर से 1 नवंबर तक चलाया जाएगा अधीक्षक डॉ नीरज सिंह ने टेमीफोस छिड़काव के कार्य के लिए सुपरवाइजर सुजान लाल को नोडल नामित किया है जो प्रतिदिन छिड़काव का कार्य फूलचंद के सहयोग से करवा रहे हैं जिससे जनमानस को संचारी रोगों से मुक्ति दिलाया जा सके।इस अभियान में डॉ वंदना सिंह, डॉ सुभाष प्रदीप सिंह, प्रभाकर सिंह, सुशील सिंह ,रोहिणी त्रिपाठी ,सीडीपीओ ज्ञानमती ,सुजान लाल रवि पांडे ,सुमन शुक्ला, मनोज देवी सहित तमाम कर्मचारी एवं आशा बहुएं मौजूद थी।

राज्यमंत्री ने स्वच्छता की दिलायी शपथ

कौशाम्बी। प्रदेश के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) खेल, युवा कल्याण एवं पंचायतीराज विभाग उपेन्द्र तिवारी जनपद भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम फरीदपुर, समदा में स्थित शहीद स्मारक पर शहीद सोहन लाल यादव की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस अवसर पर अध्यक्ष, जिला पंचायत कल्पना सोनकर विधायक शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, भाजपा जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी एवं जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किया।राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने नवीन मण्डी समिति, ओसा में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित स्वच्छ भारत संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आजादी के 75वीं वर्षगाठ के अवसर पर देश भर में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत विभिन्न कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उन्होनें कहा कि अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत 01 अक्टूबर 2021 से 31 अक्टूबर 2021 तक स्वच्छ भारत एवं प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान चलाया जा रहा है, इस अभियान की शुरूआत प्रयागराज से हुई है। उन्होनें कहा कि प्रधानमन्त्री ने चौरी चौरा शताब्दी के अवसर पर वीर शहीदों की याद में सभी शहीद स्मारकों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाने का सराहनीय निर्णय लिया था, जिसके तहत देश भर में वीर शहीदों की याद में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है तथा अमृत महोत्सव के तहत भी वीर शहीदों की याद में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। उन्होनें कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा वीर शहीदों के सपनों को साकार करने का कार्य किया जा रहा है। उन्होनें कहा कि अमृत महोत्सव के अन्तर्गत केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को घर-घर तक पहुचाने का कार्य किया जा रहा है। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने कहा कि प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त 2014 को स्वच्छ भारत अभियान को जनआन्दोलन के रूप में चलाये जाने का आवाह्न किया था। स्वच्छ भारत अभियान का ही परिणाम है कि आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढी है। उन्होनें कहा कि गन्दगी से डेगू व मलेरिया सहित अन्य विभिन्न प्रकार की बीमारियॉ फैलती है। उन्होनें सभी लोगों से 01 अक्टूबर 2021 से 31 अक्टूबर 2021 तक संचालित स्वच्छ भारत अभियान के तहत अपने घर, गली, मोहल्ला, शहर, जनपद, प्रदेश एवं देश को स्वच्छ बनाने में योगदान देने का आग्रह तथा स्वच्छता के प्रति सभी को घर-घर जाकर जागरूक कर स्वच्छता की अलख को जलाने का आवाह्न किया। संगोष्ठी को अध्यक्ष कल्पना सोनकर विधायक शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, भाजपा जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने भी सम्बोधित किया राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने उपस्थित सभी लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलायी। तत्पश्चात मण्डी परिसर में प्लास्टिक एकत्र कर आमजन को प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

अजय सोनी ने किया नवनीत डिफेंस एकेडमी का उद्घाटन

अजय सोनी ने कहा कि युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए एक बेहतर मंच साबित होगा एनडीए

करारी कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने मंगलवार को उदहिन बुजुर्ग चौराहे पर युवाओं के रक्षा क्षेत्र में नौकरी के लिए प्रशिक्षण देने वाले एक निजी संस्थान नवनीत डिफेंस एकेडमी का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस मौके पर मां सरस्वती के प्रतिमा के सामने धूप दीप एवं पुष्प चढ़ाकर उनकी पूजा की और मौजूद रहे लोगों का मुंह मीठा कराया गया। इस अवसर पर उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित रहे लोगों से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने कहा कि इस पिछड़े इलाके में ऐसे प्रशिक्षण संस्थान खुलने से बेरोजगार युवाओं को निश्चित रूप से फायदा होगा और युवाओं को रक्षा क्षेत्र में नौकरी करने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने आगे कहा कि समुचित प्रशिक्षण के अभाव में आजकल युवाओं को रोजगार मिलने में काफी दिक्कत हो रही है। ऐसे में नवनीत डिफेंस एके-डमी खुलने से स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण प्राप्त करने में मदद मिलेगी और प्रशिक्षण के बाद उन्हें आसानी से रोजगार मिल सकेगा। संस्थान के निदेशक एडवोकेट नवनीत यादव ने कहा कि कम शुल्क में ग्रामीण इलाकों के बेरोजगार युवाओं के लिए यह संस्थान खोला गया है। इस संस्थान के खुलने से युवाओं को अब प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए दूर नगरों या शहरों की ओर नहीं भागना पड़ेगा। इसी के साथ नवनीत यादव ने आए हुए अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया और उनके संस्थान के उद्घाटन समारोह में शामिल होने पर आभार जताया। संस्थान के प्रभारी राम बदन यादव ने आए हुए अतिथियों को माल्यार्पण कर उनका उनको संस्थान के तमाम कार्यों एवं प्रशिक्षण के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर भानू प्रताप यादव, सुरजीत वर्मा, रामा शंकर यादव, सुशील सोनी, राम मनोहर सरोज सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

विकास कार्यों में धांधली के चलते मूलभूत सुविधाओं से उपेक्षित हो रहे हैं ग्रामीण

ग्राम सभा हरदुआ के विकास कार्यों में बड़े घोटाला की शिकायत की जांच के नाम पर हुई लीपापोती

कौशांबी। चायल बिकास खण्ड क्षेत्र के ग्राम सभा हरदुआ में धांधली की जांच के नाम पर जांच अधिकारियों ने आरोपियों को क्लीन चिट दे दी है गांव के भ्रष्टाचार की रकम में जांच अधिकारियों ने हिस्सा वसूल लिया है जिससे एक नई जांच शुरू कराए जाने की जरूरत है योगी सरकार में ग्राम पंचायतों में जमकर धांधली हो रही है ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव मालामाल हो रहे हैं ब्लॉक से लेकर विकास भवन के अधिकारी कमीशन खोरी कर अपना हिस्सा वसूल रहे हैं जिससे योगी सरकार में ग्राम पंचायतों के विकास हकीकत में नहीं हो सके हैं विकास कार्यों में धांधली के चलते ग्रामीण मूलभूत सुविधाओं से उपेक्षित हो रहे हैं जिसका खामियाजा आने वाले विधानसभा चुनाव में योगी सरकार के प्रतिनिधियों को भुगतना पड़ेगा लेकिन फिर भी योगी सरकार के प्रतिनिधि सरकारी विकास कार्यों की धांधली में लगे जिम्मेदारों के कारनामों पर गंभीरता लेकर उन्हें दंडित कराने में तत्परता नहीं दिखाते हैं। गौरतलब है कि विकास कार्यों के लिए मिलने वाली सरकारी रकम ग्राम सभा के जिम्मेदारों की कमाई का साधन बनकर रह गयी है गांव से लेकर विकास भवन तक 30% से अधिक रकम कमीशन खोरी में बट रही है नाली खड़ंजा सीसी रोड शौचालय आवास हैंड पंम्प रिबोर मरम्मत सहित विभिन्न योजनाओं में मिली लाखों की रकम में कमीशन खोरी कर योजनाओ को जिम्मेदारों ने जमकर पलीता लगाया है ग्राम सभा हरदुआ के दर्जनों ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान के इस कृत्य की शिकायत भी खंड विकास अधिकारी से लेकर जिला स्तर तक की लेकिन जांच के नाम पर बार-बार ग्राम प्रधान के भ्रष्टाचार पर पर्दा डालकर उसे बचाने का भरसक प्रयास जांच अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है जिससे दोषी दंडित होने से बच जाते हैं। ग्राम सभा हरदुआ में प्रधानमंत्री आवास योजना में भी पात्रों को आवास देने के मामले में बनाई जाने वाली सूची में कई अपात्रों का नाम शामिल कर उन्हें आवास योजना का लाभ जिम्मेदारों ने पहुंचाया है जो ब्यवस्था पर एक बड़ा सवाल है हरदुआ ग्राम सभा में सरकारी रकम की धांधली में यदि आला अधिकारियों ने जांच कराई तो इस ग्राम सभा में बड़ा घोटाला उजागर होगा निष्पक्ष जांच के बाद ग्राम प्रधान ग्राम विकास अधिकारी पर आला अधिकारियों की गाज गिरना तय है लेकिन क्या भ्रष्ट प्रधान के कारनामों पर उच्च स्तरीय निष्पक्ष जांच हो पाएगी यह व्यवस्था पर बड़ा सवाल है।

दंपत्ति को दबंगों ने बेरहमी से पीटा

कौशांबी। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के पूरब शरीरा गांव के मजरा दुर्गा सिंह का डेरा निवासी गौरा देवी पत्नी वीरेंद्र लोधी ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर बताया है कि 15 अक्टूबर की रात्रि पति पत्नी घर पर थे और किसी बात पर आपसी विवाद हो रहा था इसी बीच गांव के दबंग पप्पू सिंह उर्फ शंकर दयाल सिंह उनके लड़कों ने घर में घुसकर मेरे पति वीरेंद्र लोधी को बेरहमी से पीटने लगे महिला गौरा देवी का कहना है कि वह बीच-बचाव करने गई तो दबंग हमलावरों ने मुझे भी जमकर मारा पीटा है महिला का कहना है कि उसने मामले की शिकायत स्थानीय पुलिस से की जिस पर आरोपियों को गिरफ्तार कर कार्यवाही करने के बजाय पुलिस ने उसके पति वीरेंद्र लोधी को गिरफ्तार कर लिया और तीन दिनों तक बेवजह बिना कसूर मेरे पति वीरेंद्र लोधी को पुलिस ने हवालात में डाल कर प्रताड़ित किया है महिला का कहना है कि तीन दिनों बाद पुलिस ने वीरेंद्र लोधी को शांति भंग की धारा में चालान कर दिया है थाना पुलिस के अत्याचार से पीड़ित गौरा देवी ने संपूर्ण प्रकरण की जांच कराते हुए आरोपियों पर मुकदमा दर्ज कराने और दोषी पर कार्रवाई की मांग पुलिस अधीक्षक से की है।

महर्षि वाल्मीकि जयंती पर हुआ वाल्मीकि रामायण पाठ का आयोजन

अझुवा कौशाम्बी। योगी सरकार के निदेर्शानुसार महर्षि वाल्मीकि जयंती पर नगर पंचायत अझुवा के चेयरमैन अनिल कुमार ने वार्ड नंबर 2 अंबेडकर नगर मंदिर में बाल्मीकि रामायण से सुंदरकांड का पाठ संगीत के माध्यम से करवाया है योगी सरकार के निर्देश पर जिला प्रशासन ने पूरे जिले के अधिकारियों सरकारी कार्यालयों को निर्देशित कर बाल्मीकि जयंती धूमधाम से मनाये जाने का निर्देश दिया है इसी क्रम में नगर पंचायत अझुवा द्वारा बाल्मीकि जयंती का आयोजन किया गया है जहां रामायण पाठ का आयोजन हुआ है जिसमें मंदिर में पूजन हवन करने के बाद रामायण पाठ का गायन किया गया इस अवसर पर नगर अध्यक्ष अनिल कुमार वरिष्ठलेखा लिपिक साकेत चन्द्र श्रीवास्तव राजेंद्र सिंह राजाराम ,राम प्रताप सहित नगर पंचायत के तमाम कर्मचारी मौजूद रहे।

डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन सम्पन्न

कौशाम्बी। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के दिशा निदेर्श तथा जनपद न्यायाधीश ब्रजेश कुमार मिश्र के निर्देशन पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तगर्त 55 ग्राम सभा में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से 55 ग्राम सभाओं में घर-घर जाकर विधिक सहायता हेतू जागरूक किया गया, जिसमें 08 ब्लॉक के सीडीपीओ एवं आगनबाड़ी कायर्कत्रीया, आशा बहुयें, एनजीओ व समाज सेवी द्वारा सहयोग प्रदान की गयी।

मृतक परिजनों से मिलकर हत्यारों की गिरफ्तारी का विधायक ने दिलाया भरोसा

कौशाम्बी। नगरपालिका परिषद भरवारी के अंबेडकर नगर बिसारा के वार्ड नंबर 1 निवासी राजकुमार प्रजापति और उनके चाचा की हत्या कर दिए जाने की जानकारी मिलने के बाद चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता मृतक परिजनों से मिले मृतक परिजनों से मिलने के बाद विधायक संजय गुप्ता ने कहा कि यह बेहद दुखद घटना है मैं इस घटना की कड़े शब्दों में निंदा करता हूँ और मृतक परिजनों को उन्होंने भरोसा दिलाया है कि हत्यारों की तत्काल गिरफ्तारी कराई जाएगी और हत्यारो को कठोर दंड दिलाया जाएगा उन्होंने कहा कि घटना में लिप्त किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और उसे कठोर दंड जरूर दिलाया जाएगा।

भाजपा अनुसूचित मोर्चा का सम्मेलन कोखराज में सम्पन्न

कौशाम्बी। सिराथू विधानसभा के कसिया मंडल में ग्राम सभा कोखराज में मंगलवार को सूबे के उपमुख्यमंत्री के पुत्र योगेश कुमार मौर्य ने अनुसूचित मोर्चा के सम्मेलन में शिरकत करते हुए उपस्थित लोगों को संबोधित किया और भाजपा की योजनाओं का बखान करते हुए सरकार द्वारा अनुसूचित वर्ग के लिए किए गए कार्यों की विस्तार से चर्चा की इस दौरान योगेश मौर्या ने कहा कि अनुसूचित जाति के लोगों के उत्थान के लिए भाजपा सरकार ने तमाम योजनाएं संचालित की है उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति के लोगों का विकास भाजपा सरकार में ही हो सकता है कार्यक्रम में अध्यक्ष ज्ञान सरोज पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश पासी सुनील मिश्रा युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष रिंकू मौर्या सहित सभी मंडल अध्यक्ष और क्षेत्र के गणमान्य लोग पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया गया मूरतगंज में ईद मिलादुन्नबी का पर्व

इमामगंज कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के मूरतगंज सहित विभिन्न स्थानों पर ईद मिलादुन्नबी बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया है इस मौके पर शांतिपूर्ण तरीके से जुलूस भी निकाले गए हैं। ईद मिलादुन्नबी धूमधाम हर्षोल्लास से मनाए जाने में कोविड महामारी और कोरोनावायरस के चलते जुलूस में भीड़ कम मौजूद थी लेकिन पूरे जिले में शानो शौकत हर्षोल्लास के साथ 12 रबी उल अव्वल के पर्व को धूमधाम से मनाया गया है बारह रबी उल अव्वल के पर्व और जुलूस को देखने के लिए समुदाय की जनता उमड़ पड़ी है क्षेत्र के महंगाव सैयद सरावा कशिया पूर्व बड़ा गांव सल्लाह पुर भरवारी चायल खास सराय अकिल पुरखास इमामगंज रोही लोहरा आदि स्थानों पर शानो शौकत के साथ बारह रबी उल अव्वल का पर्व मनाया गया है सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सुबह से ही प्रशासन ने भारी पुलिस फोर्स की तैनाती चौराहों और नगरों में कर दी है चप्पे चप्पे पर पुलिस के जवान व्यवस्था पर बनाए रखे थे। चायल क्षेत्र के मूरतगंज में कोविड-19 का पालन करते हुए बड़े शांतिपूर्ण तरीके से जुलूसे मोहम्मदी निकला गया मस्जिद से जुलूस का इनकाद किया गया जुलूस में मोहम्मद सल्ललाहुअलैहिवसल्लम की शान में नात खानी हुई और सलाम पढ़ कर सिरिनी बाट कर एहतेमाम किया गया है ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर इलाके के तमाम गणमान्य लोगों के साथ-साथ मौलवी और गांव के तमाम लोग मौजूद रहे।

सम्पादकीय

चीन के खिलाफ तैयारी

ध्यान रहे कि अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम से लगी करीब 1350 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर नजर बनाए रखना अपने आप में खासा चुनौतीपूर्ण है। फिलहाल सैन्य तैनाती में खास इजाफा किए बगैर तकनीकी क्षमता बढ़ाते हुए इस कार्य को अंजाम दिया जा रहा है और इसमें यह स्थिति हासिल कर ली गई है कि दुश्मन किसी भी सूरत में हमें चौंका न पाए। चीन की ओर से तात्कालिक और दीर्घकालिक चुनौतियों के मद्देनजर भारतीय सेना अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों में संरचनागत निर्माण का कार्य तेजी से आगे बढ़ा रही है। दरअसल, पिछले साल जून महीने में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद से भारत और चीन के बीच विभिन्न स्तरों पर बातचीत लगातार चल रही है, कुछ बिंदुओं पर सहमति भी बनी, लेकिन इसके बावजूद दोनों पक्षों में तनाव कम नहीं हो पा रहा है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर यथास्थिति बहाल करने को लेकर भी दोनों देशों के बीच विवाद अभी भी बने हुए हैं। इसी वजह से दोनों पक्षों के बीच अविश्वास भी बना हुआ है। 10 अक्टूबर को हुई सैन्य स्तर की 13वें दौर की बातचीत तो गतिरोध टूटने की कोई संभावना दिखाए बगैर ही समाप्त हुई।

इसी बीच चीन ने उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू की अरुणाचल यात्रा पर ऐतराज जताकर यह संकेत भी दे दिया कि पूर्वी लद्दाख स्थित सीमाओं के साथ ही वह अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों पर विवाद खड़ाकर किसी भी समय इसे व्यापक रूप दे सकता है और अपनी सुविधा के हिसाब से जब जहां चाहे तनावपूर्ण हालात बना सकता है। ऐसे में स्वाभाविक ही है कि भारतीय सेना अपने तईं पूरी सावधानी बरतते हुए चल रही है। जहां पूर्वी लद्दाख क्षेत्रों में करीब 50 हजार सैनिकों की तैनाती बरकरार रखी गई है, वहीं अरुणाचल प्रदेश की चीन से लगती सीमा पर निरंतर चौकसी के इंतजाम रखते हुए इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण के काम को भी जोर-शोर से आगे बढ़ाया जा रहा है। ध्यान रहे कि अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम से लगी करीब 1350 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर नजर बनाए रखना अपने आप में खासा चुनौतीपूर्ण है। फिलहाल सैन्य तैनाती में खास इजाफा किए बगैर तकनीकी क्षमता बढ़ाते हुए इस कार्य को अंजाम दिया जा रहा है और इसमें यह स्थिति हासिल कर ली गई है कि दुश्मन किसी भी सूरत में हमें चौंका न पाए। जहां तक इन्फ्रास्ट्रक्चर का सवाल है तो उसमें रातोंरात कोई बड़ा बदलाव तो नहीं हो सकता, लेकिन बिना किसी शोर-शराबे के उस मोर्चे पर भी काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। करीब 20 पुल, बड़ी संख्या में सुरंग और एयरबेस बनाने के अलावा कई महत्वपूर्ण इलाकों को सड़क से जोड़ने की योजना है। इसके अलावा तवांग को रेल से जोड़ने के प्रोजेक्ट पर भी काम हो रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन सबके पीछे रिएक्टिव अप्रोच नहीं है। सेना दीर्घकालिक चुनौतियों के मद्देनजर अपनी जरूरतें समझते हुए तैयार की गई योजनाओं के अनुरूप काम कर रही है। निश्चित रूप से ये तैयारियां जहां हमारी सीमाओं को सुरक्षित बनाकर हमें निश्चिंत करेंगी, वहीं बुरा इरादा रखने वाली ताकतों को भी आगाह करेंगी कि अपनी भलाई को देखते हुए ही सही, पर वे कोई दुस्साहस न करें।

जम्मू-कश्मीर के विलय में पीछे नहीं थे सरदार

अवधेश कुमार

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में जम्मू-कश्मीर से कार्यसमिति के सदस्य तारिक हामिद कर्रा ने जिस तरह सरदार पटेल की आलोचना करते हुए कहा कि कश्मीर पर वह उदासीन थे और यह कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने त्वरित पहल नहीं की होती तो वह पाकिस्तान के कब्जे में चला जाता, उससे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण कुछ नहीं हो सकता। हैरत की बात है कि तारिक हामिद ने जब बोलना शुरू किया तो किसी ने उन्हें टोका तक नहीं। हां, उनके बोलने के बाद कुछ सदस्यों ने जरूर कहा कि ऐसी बात नहीं करनी चाहिए क्योंकि सरदार पटेल हैदराबाद से लेकर जूनागढ़ तक के देसी रियासतों के विलय को अंजाम दे रहे थे। पटेल जैसे व्यक्ति पर कश्मीर के प्रति उदासीन होने का आरोप लगाना उनके संपूर्ण व्यक्तित्व को ही कटघरे में खड़ा करना है। हालांकि लंबे समय से एक तबका यह साबित करने का प्रयास करता रहा है कि पटेल जम्मू-कश्मीर को भारत में रखना ही नहीं चाहते थे। सर्वपल्ली गोपाल ने पं. नेहरू की आत्मकथा पुस्तक में यही साबित करने का प्रयास किया था। राजेंद्र सरीन ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान- द इंडिया फैक्टर' में लिखा है कि पटेल ने पाकिस्तान के मंत्री सरदार अब्दुल रब निश्तार से बात करते हुए कहा कि 'भाई, हैदराबाद और जूनागढ़ पर बातचीत छोड़ोष्ठ। कश्मीर ले लो और मुद्दे को सेटल करो।' सरीन ने पाकिस्तान संविधान सभा के एक सदस्य सरदार शौकत हयात को उद?धृत किया है, जो उनके अनुसार लॉर्ड माउंटबेटन और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली के बीच बातचीत के समय उपस्थित थे। इसके अनुसार माउंटबेटन ने लियाकत अली को पटेल का यह संदेश दिया कि पाकिस्तान हैदराबाद से बाहर हो जाए तो भारत कश्मीर छोड़ देगा। इसके अनुसार जून 1947 में माउंटबेटन ने कश्मीर के महाराजा हरि सिंह से कहा कि अगर वह पाकिस्तान में विलय कर लेते हैं तो भारत इसका विरोध नहीं करेगा, हमें पटेल ने स्वयं इसके लिए आश्वस्त किया है।

गृहमंत्री, सूचना व प्रसारण मंत्री और राज्यों से संबंधित मामलों का मंत्री होने के नाते सरदार पटेल जम्मू-कश्मीर मामले को भी देखते थे। बाद में जम्मू-कश्मीर मामले को प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू स्वयं देखने लगे। जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री पं. रामचंद्र काक को 3 जुलाई, 1947 को लिखे पत्र में पटेल कहते हैं, 'मैं कश्मीर की विशेष कठिनाइयों को समझता हूं, किंतु इतिहास और पारंपरिक रीति-रिवाजों आदि को ध्यान में रखते हुए मेरे विचार से जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प ही नहीं है। भविष्य का ध्यान रखते हुए सरदार पटेल ने महाराजा हरि सिंह के साथ अच्छे संबंध बनाए थे और उन्हीं की सलाह से महाराजा ने पंजाब उच्च न्यायालय के न्यायाधीश मेहरचंद महाजन को रामचंद्र काक की जगह प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। जम्मू-कश्मीर के सामरिक महत्व को देखते हुए सरदार पटेल उसका भारत में विलय चाहते थे।

माउंटबेटन ने जरूर यह आश्वासन दिया कि यदि कश्मीर पाकिस्तान के साथ विलय करना चाहे तो भारत समस्या खड़ी नहीं करेगा। सरदार पटेल ने ऐसा आश्वासन नहीं दिया था। बस, योजनाबद्ध तरीके से वह चुप रहे क्योंकि उस समय यही समयोचित था। आगे स्वयं कांग्रेस के नेताओं ने यह मत प्रकट किया कि सरदार पटेल को कश्मीर समस्या सुलझाने की अनुमति दी जाती तो हैदराबाद की तरह यह समस्या भी स्थायी रूप से सुलझ जाती। सरदार पटेल ने एच.वी. कामत को बताया था कि 'यदि जवाहरलाल नेहरू और गोपालस्वामी आयंगर कश्मीर मुद्दे पर हस्तक्षेप न करते और उसे गृह मंत्रालय से अलग न करते तो मैं हैदराबाद की तरह ही इस मुद्दे को भी देश-हित में सुलझा लेता। जब स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तानी कश्मीर में घुसैपठ करने जा रहे हैं और सेना को भी घुसाने की योजना है तो 27 सितंबर, 1947 को नेहरू जी ने सरदार से कहा, 'मैंने प्रधानमंत्री महाजन को भी परिस्थिति से अवगत करा दिया है, किंतु उनके मन में क्या है इसका पता नहीं चल सका है। महाराजा और महाजन के लिए आपकी सलाह अधिक प्रभावी रहेगी।' सरदार पटेल ने महाराजा हरि सिंह और प्रधानमंत्री महाजन को समझाया कि आपके पास भारतीय संघ में विलय का ही विकल्प है। इस बीच समाचार मिला कि पाकिस्तानी हमलावरों ने कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया है और आगे बढ़ रहे हैं। भारत सरकार ने इस पर सेना को कश्मीर भेजने का निणञ्य लिया। सेना भेजने के निणञ्य में पटेल की भूमिका को नकारा जाता है। एस. गोपाल ने लिखा है कि सेना भेजने का निणञ्य मंत्रिमंडल का था। हालांकि लगभग पूरा मंत्रिमंडल अनिणञ्य की स्थिति में था। बक्शी गुलाम मोहम्मद शेख अब्दुल्ला के सहायक थे और दिल्ली की बैठक में उपस्थित थे। वह लिखते हैं कि 'लॉर्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में हुई बैठक में पंडितजी, सरदार पटेल, रक्षा मंत्री सरदार बलदेव सिंह, ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ सर राय बुकर, कमांडर-इन-चीफ जनरल रसेल, आर्मी कमांडर और मैं उपस्थित थे। जनरल बुकर ने जोर देकर कहा कि उनके पास संसाधन इतने कम हैं कि राज्य को सैनिक सहायता देना संभव नहीं। माउंटबेटन ने निरुत्साहपूर्ण झिझक दर्शाई। पंडितजी ने तीव्र उत्सुकता और शंका प्रकट की। बक्शी के अनुसार पटेल चुपचाप सब कुछ सुन रहे थे। सहसा सरदार हिले और कठोर एवं दृढ़ स्वर में अपना विचार व्यक्त किया, 'जनरल हर कीमत पर कश्मीर की रक्षा करनी होगी। संसाधन हैं या नहीं, आपको यह तुरंत करना चाहिए। सरकार आपकी हर प्रकार की सहायता करेगी। यह अवश्य होना और होना ही चाहिए।' जनरल के चेहरे पर उत्तेजना के भाव दिखाई दिए। जनरल की इच्छा आशंका जताने की रही होगी, किंतु सरदार चुपचाप उठे और बोले, 'हवाई जहाज से सामान पहुंचाने की तैयारी सुबह तक कर ली जाएगी।'इस तरह जम्मू-कश्मीर की रक्षा सरदार पटेल की चारित्रिक दृढ़ता और त्वरित निणञ्य लेने और सबको निणञ्य के साथ रहने के लिए तैयार करने की उनकी क्षमता के कारण संभव हो सकी। वह हर हाल में जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय चाहते थे और प्रधानमंत्री द्वारा इस मामले को अपने हाथों में ले लिए जाने के बावजूद उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

दिग्विजय सिंह : कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना

डॉ. हरिकृष्ण बड़ोदिया

मध्यप्रदेश से राज्यसभा सांसद और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ना केवल मध्यप्रदेश में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर हमेशा विवादित ही रहे हैं। मध्यप्रदेश में 10 साल तक मुख्यमंत्री रहे दिग्विजय सिंह अपने कार्यकाल में हमेशा आलोचना झेलते रहे। बिजली, पानी और सड़क के मुद्दे तब इतने गंभीर थे कि ऐसा कोई समय नहीं रहा जब प्रदेश की जनता उन्हे कोसती ना रही थी। लेकिन इतना तो मानना ही पड़ेगा कि कांग्रेस पार्टी में उनकी विश्वसनीयता और निष्ठा किसी अन्य कांग्रेसी नेता की तुलना में हमेशा उच्च ही रही। यही नहीं ऐसा माना जाता है कि उन्होंने राहुल गांधी को उंगली पकड़कर राजनीति के गलियारों की सैर कराई। हालांकि इस पर लोगों की दो राय हो सकती है कि दिग्विजय के इतना सिखाने के बाद भी राहुल गांधी कांग्रेस के खेवनहार क्यों नहीं बन पा रहे। खैर बात अभी 2 दिन पहले के दिग्गी राजा के बयान की है जिसमें उन्होंने आर एस एस और वर्तमान गृहमंत्री अमित शाह की दिल खोलकर प्रशंसा की है। यूं अगर देखा जाए तो दिग्विजय आरएसएस और भाजपा के कट्टर आलोचक रहे हैं। वह ऐसा कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते जिसमें वे आरएसएस को खरी-खोटी ना सुनाएं। तो आखिर क्यों दिग्गी राजा ने अमित शाह की तारीफ की?

वैसे तो यदि किसी ने किसी के साथ सहयोग किया है तो सहयोग कर्ता के प्रति आभार का कर्तव्य बनता है अन्यथा उसे कृतघन्ता माना जाता है। लेकिन आभार या धन्यवाद सही समय पर व्यक्त किए जाएं तो ज्यादा महत्व रखते हैं। राजनीति में अवसर और समय का बड़ा महत्व है। समझदार राजनेता समय के महत्व को जानते हैं। असल में दिग्गी राजा ने नर्मदा परिक्रमा 2017 में की उसी दौर में जब वह गुजरात से गुजर रहे थे तब अमित शाह ने परिक्रमा के दौरान दिग्गी राजा के अनुसार उनकी विषम परिस्थितियों में मदद की थी। दिग्विजय सिंह ने आरएसएस और अमित शाह की प्रशंसा, नर्मदा यात्रा पर लिखी एक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर की है। दिग्विजय सिंह भाजपा, मोदी, अमित शाह, आरएसएस, शिशु मंदिर / विद्या मंदिर, धारा 370, बाटला हाउस एनकाउंटर और भगवा आतंकवाद की अवधारणा के आधार पर दक्षिणपंथी विचारधारा के हमेशा मुखर आलोचक रहे हैं। यही नहीं उनकी इस बेबाकी और कटु आलोचना की प्रशंसा उनकी पार्टी के लोग तो करते ही हैं साथ ही उनकी प्रशंसा न केवल पाकिस्तान में की जाती है बल्कि भारत का अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज भी उनकी ऐसी धर्मनिरपेक्ष छवि का प्रशंसक है क्योंकि आरएसएस और भाजपा और भाजपाई नेताओं की आलोचना उनके भाषणों का प्रमुख विषय हुआ करता है। इसीलिए वह भाजपा और आरएसएस के निशाने पर भी रहते हैं। शायद अपने राजनीतिक जीवन में पहली बार उन्होंने संघ और अमित शाह की तारीफ की है। वे यह भी कहते हैं कि मैं अमित शाह से आज तक नहीं मिला और उनकी इस प्रशंसा का राजनीति और विचारधारा से कोई लेना देना नहीं है। वे आगे कहते हैं कि वह आरएसएस के कटु आलोचक हैं लेकिन नर्मदा यात्रा के दौरान हर चार आठ दिन में आरएसएस के कार्यकर्ता उनसे मिलते रहते थे। दिग्विजय सिंह के अनुसार ये कार्यकर्ता अमित शाह के निर्देश पर उनकी सहायता कर रहे थे। उन्होंने यात्रा के दौरान भरूच क्षेत्र में माझी समाज की उस धर्मशाला का भी उल्लेख किया जिसमें उन्हें ठहराया गया था और जहां आरएसएस के संस्थापक श्री बलिराम हेडगेवार और गुरु गोलवलकर की तस्वीरें लगी थीं। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय जनता युवा मोर्चा के एक नेता और तीन भाजपा कार्यकर्ता उन की परिक्रमा में शामिल रहे और वे अब उनके नर्मदा परिवार के हिस्सा हैं।वस्तुतः दिग्विजय सिंह ने 6 महीने में 3300 किलोमीटर की यात्रा अपनी पतनी अमृता सिंह के साथ पूरी की थी। दिग्विजय सिंह ने बताया कि उन्होंने उस समय भी उचित माध्यम से अमित शाह का आभार व्यक्त किया था किंतु प्रशन इस बात का है कि आखिर यात्रा के 4 साल बाद ऐसी क्या आवश्यकता थी कि अपनी विचारधारा और प्रतिबद्धता के विपरीत संघ और अमित शाह की सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा की जाती। आज जबकि कांग्रेस पार्टी के राहुल गांधी आरएसएस, भाजपा, मोदी और अमित शाह आदि का पग पग पर विरोध कर रहे हैं, वे जब यह कह रहे हैं कि जो लोग आरएसएस से डरते हैं या जो आरएसएस के लोग हैं उन्हें कांग्रेस छोड़ कर चला जाना चाहिए क्योंकि कांग्रेस को ऐसे डरपोक लोगों की जरूरत नहीं है। कांग्रेस को निडर लोगों की जरूरत है। तब यदि दिग्विजय सिंह अमित शाह और संघ की तारीफ कर रहे हैं तो क्या वे स्वयं की कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा को विवाद में नहीं घसीट रहे हैं। वस्तुतः राजनीति में कोई भी राजनेता जब भी कोई बयान देता है वह उसके परिणाम और समय के बारे में अच्छी तरह विश्लेषण कर लेता है। वह यह भी जानता है कि उसके बयान से किसको लाभ होगा और किसको कितनी हानि होगी। तब ऐसा नहीं माना जा सकता कि दिग्विजय के संघ और अमित शाह पर बयान के राजनीतिक अर्थ न निकाले जाएं। ऐसे वक्त में जब कांग्रेस आंतरिक विवादों में उलझी है, जब उसके वरिष्ठतम और निष्ठावान जी-23 के नेताओं का आलाकमान पर दबाव बढ़ता जा रहा है। जब पंजाब, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस नेताओं में वर्चस्व की जंग जारी हो तब दिग्विजय सिंह का बयान किसी भी दृष्टि से प्रथम परिवार को पसंद नहीं आ सकता लेकिन आश्चर्य तो यह है कि प्रथम परिवार ने अभी तक इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है। लगता है कि कांग्रेस का प्रथम परिवार अपने वरिष्ठ समर्थक सदस्यों से वर्तमान स्थिति में विवाद को तरजीह नहीं देना चाहता क्योंकि वर्तमान स्थिति में कांग्रेस नेताओं के बीच की कलह चारों तरफ आलोचना का कारण बन रही है। एक प्रशन यह भी उठता है कि जब यह घटना 2017-18 की है और जब गुजरात विधानसभा के चुनाव थे तब दिग्विजय सिंह ने इस पर चुप्पी क्यों अपनाई। आज जब पांच राज्यों में चुनाव हैं तब दिग्विजय ने आरएसएस की प्रशंसा क्यों की। इसमें तो कोई शक नहीं कि जो राजनेता आरएसएस की कार्यप्रणाली और सेवा कार्यों की जानकारी रखते हैं भले ही वे विपक्ष में हों मन ही मन संघ की प्रशंसा करते हैं, यह उनकी मजबूरी होती है कि वे सार्वजनिक रूप से इसे व्यक्त करने में असमर्थ होते हैं। लेकिन सवाल इसी बात का है कि दिग्विजय सिंह जिन्हें कांग्रेस ने राष्ट्रीय मुद्दों को जनता के बीच उठाने और इसे लेकर आंदोलन की रणनीतियां बनाने वाली 9 सदस्यीय समिति का अध्यक्ष बनाया है और जिसकी महत्वपूर्ण सदस्य प्रियंका गांधी हैं तब उन्होंने ऐसे समय आरएसएस और अमित शाह की प्रशंसा में कसीदे क्यों पढे यही नहीं इसी के साथ ही कांग्रेस ने असंतुष्टों की नाराजगी दूर करने के लिए मनमोहन सिंह की अध्यक्षता में 11 सदस्यों की कमेटी भी बनाई है तब दिग्विजय का संघ और अमित शाह की प्रशंसा करना कैसे उचित माना जा सकता है। लेकिन राजनीति में जैसा दिखाई देता है वैसा होता नहीं और जैसा होता है वैसा दिखाई नहीं देता। लगता तो ऐसा है कि दिग्विजय सिंह की निगाहें कहीं और पे हैं और निशाना कहीं और पे है।वस्तुतः दिग्विजय सिंह मध्यप्रदेश में कमलनाथ के कारण वह अहमियत नहीं पा सके थे जो नर्मदा यात्रा के बाद मध्यप्रदेश में कांग्रेस की 2018 में जीत में उनके योगदान को मिलना चाहिए था। तो वहीं भाजपा में ज्योतिरादित्य सिंधिया को जो महत्व मिला उतना महत्व वे कांग्रेस में अपने लिए चाहते हैं। स्पष्ट संकेत यही है कि आरएसएस और अमित शाह की प्रशंसा कर कांग्रेस आलाकमान को डरा कर वह मध्यप्रदेश में सर्वोच्च प्राथमिकता चाहते हैं। ऐसा लगता है कि वह जताना चाहते हैं कि यदि उन्हें मध्यप्रदेश में उनके अनुरूप महत्व नहीं मिला तो वे सिंधिया के रास्ते चलने से गुरेज नहीं करेंगे। यही इस बयान के अंतस में छिपा हुआ लगता है। असल में दिग्विजय सिंह की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि कमलनाथ उनकी तुलना में गांधी परिवार के ज्यादा निकट और विश्वसनीय व्यक्ति माने जा रहे हैं। जुलाई 21 मई में कमलनाथ को पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाए जाने की संभावना बताई जा रही थी लेकिन उन्होंने मध्यप्रदेश की राजनीति छोड़कर केंद्र में जाना स्वीकार नहीं किया था जिससे स्पष्ट है कि कमलनाथ के रहते दिग्विजय सिंह मध्यप्रदेश में अपना कद कमतर महसूस करते हैं जिसे उन्हें स्वीकार करना मुश्किल लगता है। यही कारण है कि दिग्विजय ने आरएसएस और अमित शाह की प्रशंसा कर एक तीर से दो निशाने लगाए हैं। तीर आरएसएस की प्रशंसा है और निशाना राहुल गांधी और कमलनाथ हैं।

पर्यावरण संबंधी समस्या को भयावह रूप प्रदान कर रहा है प्लाास्टिक कचरा

किसी से भी अधिक राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में प्रतिबंधित प्लास्टिक को लेकर इसी तरह के नियम लागू हैं लेकिन विड़म्बना ही है कि सख्ती के अभाव में इतना समय बीत जाने के बाद भी दिल्ली तथा देश के अन्य तमाम राज्यों में पॉलीथीन का उपयोग बदस्तूर जारी है। पर्यावरण के लिए प्लास्टिक पूरी दुनिया में बेहद खतरनाक साबित हो रहा है। इसीलिए इसका उपयोग सीमित करने और कई प्रकार के प्लास्टिक पर प्रतिबंध की मांग उठती रही है। भारत में भी ऐसी ही मांग निरन्तर होती रही है और समय-समय पर इसके लिए अदालतों द्वारा सख्त निर्देश भी जारी किए जाते रहे हैं किन्तु इन निर्देशों की पालना कराने में सख्ती का अभाव सदैव स्पष्ट परिलक्षित होता रहा है। यही कारण है कि लाख प्रयासों के बावजूद प्लास्टिक के उपयोग को कम करने में सफलता नहीं मिल पा रही है। इसका अनुमान इन आंकड़ों से भी लगाया जा सकता है कि भारत में 1990 में पॉलीथीन की जो खपत करीब बीस हजार टन थी, वह अगले डेढ़ दशकों में ही कई गुना बढ़कर तीन लाख टन से भी ज्यादा हो गई। 10 अगस्त 2017 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के तत्कालीन चेयरपर्सन स्वतंत्र कुमार की अगुवाई वाली बेंच ने अपने एक अहम फैसले में दिल्ली में 50 माइक्रोन से कम मोटाई वाली नॉन बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक की थैलियों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाते हुए सरकार को एक सप्ताह के भीतर ऐसे प्लास्टिक के सारे भंडार को जब्त करने का आदेश देते हुए कहा था कि दिल्ली में अगर किसी व्यक्ति के पास से प्रतिबंधित प्लास्टिक बरामद होते हैं तो उसे पर्यावरण क्षतिपूर्ति के रूप में 5 हजार रुपये की राशि भरनी होगी। देश के बीस से भी अधिक राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में प्रतिबंधित प्लास्टिक को लेकर इसी तरह के नियम लागू हैं लेकिन विड़म्बना ही है कि सख्ती के अभाव में इतना समय बीत जाने के बाद भी दिल्ली तथा देश के अन्य तमाम राज्यों में पॉलीथीन का उपयोग बदस्तूर जारी है। 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के अनुसार अगर देश में प्रतिबंधित प्लास्टिक के उपयोग में कमी नहीं आ रही है तो इसका सीधा और स्पष्ट अर्थ यही है कि इनके उत्पादन, बिक्री और उपयोग को लेकर संबंधित विभागों का रवैया बेहद गैर-जिम्मेदाराना और लापरवाही भरा रहा है। अक्सर देखा जाता है कि हमारी छोटी-बड़ी लापरवाहियों और कचरा प्रबंधन प्रणालियों की खामियों की वजह से पॉलीथीन या अन्य प्लास्टिक कचरा नालियों में भरा रहता है, जो नालियां, ड्रेनेज और सीवरेज सिस्टम को ठप्प कर देता है। यही कचरा अब नदियों के बहाव को अवरुद्ध करने में भी सहायक बनने लगा है, जो अब थोड़ी-सी ज्यादा बारिश होते ही जगह-जगह बाढ़ जैसी परिस्थितियां उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित अपनी पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने विस्तार से बताया है कि किस प्रकार 1988 और 1998 में बांग्लादेश में आई भयानक बाढ़ का कारण यही प्लास्टिक ही था क्योंकि नालियों या नालों में प्लास्टिक जमा हो जाने से वहां के नाले जाम हो गए थे और इसीलिए इससे सबक लेते हुए बांग्लादेश में 2002 से प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आयरलैंड में प्लास्टिक थैलियों के इस्तेमाल पर 90 फीसदी टैक्स लगा दिया गया, जिसके चलते इनका इस्तेमाल बहुत कम हो गया। आस्ट्रेलिया में सरकार की अपील से ही वहां इन थैलियों के इस्तेमाल में 90 फीसदी कमी आई। अफ्रीका महाद्वीप के देश रवांडा में प्लास्टिक बैग बनाने, खरीदने और इस्तेमाल करने पर जुर्माने का प्रावधान है। फ्रांस ने 2002 में प्लास्टिक पर पाबंदी लगाने का अभियान शुरू किया और 2010 में इसे पूरे देश में पूरी तरह से लागू कर दिया गया। न्यूयॉर्क शहर में रिसाइकल नहीं हो सकने वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा है। चीन, मलेशिया, वियतनाम, थाईलैंड, इटली इत्यादि देशों ने प्लास्टिक कचरे के आयात पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए हैं। चीन विश्व का सबसे बड़ा प्लास्टिक कचरा आयातक देश रहा है लेकिन उसने भी कुछ समय पहले 24 श्रेणियों के ठोस प्लास्टिक कचरे के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया था।

प्लास्टिक पर पाबंदी के लिए चरणबद्ध तरीके से भारत में भी इसी प्रकार के सख्त कदम उठाए जाने की जरूरत है। हालांकि वर्ष 2022 तक

योगेश कुमार गोयल

देश को 'सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त भारत' बनाने की दिशा में केन्द्र सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 1 जुलाई 2022 से सिंगल यूज प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगाए जाने का निणञ्य लिया जा चुका है लेकिन फिलहाल तो भारत न केवल दुनिया के सर्वाधिक प्लास्टिक कचरा आयात करने वाले देशों में शामिल है बल्कि यहां प्रतिदिन बहुत बड़ी मात्रा में प्लास्टिक कचरा भी उत्पन्न होता है। हालांकि भारत द्वारा भी 'खतरनाक अपशिष्टों के प्रबंधन और आयात से जुड़े नियम 2015' में संशोधन करते हुए 1 मार्च 2019 को ठोस प्लास्टिक के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया था किन्तु इन नियमों में कुछ खामियों के चलते अभी भी देश में प्लास्टिक कचरे के आयात को छूट मिल रही है और इसी का फायदा उठाकर प्लास्टिक की खाली बोतलों को महीन कचरे के रूप में आयात किया जा रहा है। दुनियाभर में सर्वाधिक प्लास्टिक स्क्रैप खरीदने वाले देशों पर नजर डालें तो वियतनाम पैकेजिंग के लिए इस्तेमाल होने वाला 'पॉलियोलिफिन' 44716 मीट्रिक टन तथा बॉटलिंग में इस्तेमाल होने वाला 'पीईटी' 18384 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष आयात करता है जबकि भारत प्रतिवर्ष करीब 88155 मीट्रिक टन 'पॉलियोलिफिन' तथा 5101 मीट्रिक टन 'पीईटी' आयात करता है। ऐसे ही अन्य देशों में मलेशिया द्वारा 37778 मीट्रिक टन 'पॉलियोलिफिन' तथा 13551 मीट्रिक टन 'पीईटी', थाईलैंड द्वारा 10153 मीट्रिक टन 'पॉलियोलिफिन' तथा 18384 मीट्रिक टन 'पीईटी', ताइवान द्वारा 16575 मीट्रिक टन 'पॉलियोलिफिन' तथा तुर्की द्वारा 5354 मीट्रिक टन 'पीईटी' आयात किया जाता है। भारत में प्रतिवर्ष एक लाख इक्कीस हजार टन से भी ज्यादा प्लास्टिक कचरा अमेरिका, पश्चिम एशिया तथा यूरोप के 25 से भी ज्यादा देशों से आयात किया जाता है। इंटरनेशनल ट्रेड सेंटर के आंकड़ों के अनुसार 2017 के मुकाबले 2018 में भारत में प्लास्टिक आयात करीब 16 फीसदी बढ़ गया था, जो 15 बिलियन डॉलर को भी पार कर गया था।

देश में प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होने के आंकड़ों पर नजर डालें तो इसमें सबसे बड़ा योगदान दिल्ली का रहता है, जहां पूरा दिन उत्पन्न होने वाले तमाम तरह के कचरे में 10.14 फीसदी हिस्सा प्लास्टिक कचरे का ही होता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा 2015 में एकत्रित किए गए आंकड़ों के आधार पर जारी रिपोर्ट के अनुसार देशभर में प्रतिदिन 25940 टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से देश के कुल 60 शहरों का ही योगदान 4059 टन का रहता है। दिल्ली में सर्वाधिक 689.52 टन, चेनन्ई में 429.36, मुम्बई में 408.27, बेंगलुरू में 313.87, हैदराबाद में 119.33 टन प्लास्टिक कचरा रोजाना पैदा होता है। एक अन्य जानकारी के अनुसार 2017-18 में देशभर में कुल साढ़े छह लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पादित हुआ था। इस प्लास्टिक कचरे में सबसे बड़ा योगदान खाली प्लास्टिक बोतलों का होता है। सीपीसीबी के अनुसार 2015-16 में भारत में लगभग 900 किलो टन प्लास्टिक बोतलों का उत्पादन किया गया था। चिंता की बात यह है कि प्रतिदिन निकलने वाले प्लास्टिक कचरे का लगभग आधा हिस्सा या तो नालों के जरिये जलाशयों में मिल जाता है या गैर-शोधित रूप में किसी भू-भाग पर पड़ा रहकर धरती और वायु को प्रदूषित करता है। देशभर में सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड कार्य कर रहे हैं किन्तु वे अपने कार्य के प्रति कितने संजीदा हैं, यह जानने के लिए इतना जान लेना ही पर्याप्त होगा कि 2017-18 में इनमें से सिर्फ 14 बोर्ड ही ऐसे थे, जिन्होंने अपने यहां प्लास्टिक कचरे के उत्पादन के बारे में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को जानकारी उपलब्ध कराई। स्पष्ट है कि केन्द्र सरकार और एनजीटी दोनों को प्लास्टिक प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए इन सभी बोर्डों की जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए जागरूकता बढ़ाने के साथ अदालती निर्देशों का सख्ती से पालन भी सुनिश्चित करना होगा।

आखिर कब सुधरेंगे पटवारी?

ब्रजकिशोर सिंह

मित्रों, साल तो याद नहीं लेकिन 1980 के दशक की बात है. पिताजी हर महीने प्रसिद्ध पत्रिका कादम्बिनी लाते थे. ऐसे ही किसी साल के दिवाली अंक में चम्बल के पूर्व डाकू मोहर सिंह का साक्षात्कार छपा था. मोहर सिंह से जब पुछा गया कि वो बागी क्यों बने तो उन्होंने कहा था कि अगर पटवारी सुधर जाए तो कोई बागी नहीं बनेगा. मित्रों, उत्तर प्रदेश का तो पता नहीं कि वहां के पटवारी सुधरे कि नहीं लेकिन अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि बिहार के पटवारी नहीं सुधरे हैं. मैं दावे के साथ कहता हूँ कि अभी भी बिहार में एक भी दाखिल ख़ारिज बिना रिश्वत दिए नहीं होता. राजस्व मंत्री की जमीन का भले ही हो गया हो. इतना ही नहीं पैसा देने पर भी दाखिल ख़ारिज में कर्मचारी सालों साल लगा देता है. मित्रों, ईधर सरकार कहती है कि दाखिल ख़ारिज को ऑनलाइन कर दिया गया है लेकिन सच्चाई यही है कि सारे काम ऑफलाइन हो रहे हैं. इस बारे में पूछने पर एक राजस्व कर्मचारी ने दिलचस्प वाकया सुनाया. हुआ यह कि किसी किसान ने दाखिल ख़ारिज के लिए ऑनलाइन आवेदन दिया. फिर वो कर्मचारी से मिलने आया. कर्मचारी ने 2500 रूपये मांगे तो किसान ने कहा कि आप काम करिए मैं रसीद कटवाने आऊंगा तो पैसे दे दूंगा. कर्मचारी ने विश्वास करके काम करवा दिया और उसे ऑनलाइन भी कर दिया. उधर किसान चालाक निकला और कर्मचारी के पास रसीद कटवाने आया ही नहीं. जब कई महीने बीत गए तब कर्मचारी को शक हुआ और उसने चेक किया. कर्मचारी यह देखकर सनन रह गया कि किसान ने ऑनलाइन रसीद कटवा लिया था. कर्मचारी ने बताया कि उसने अपनी जेब से सीओ और सीआई को 1000 रूपये दे रखे थे. इस धोखे के बाद उस कर्मचारी ने बिना पैसे लिए ऑनलाइन दाखिल ख़ारिज करना ही बंद कर दिया. मजबूरन पार्टी को उसके पास जाना ही पड़ता है और बार-बार जाना पड़ता है। मित्रों, हमारे एक परिचित की तो जमीन ही चोरी हो गई. बेचारे की खतियानी जमीन थी. जब वो रसीद कटवाने गया तो पता चला कि जमीन है ही नहीं. बेचारे की पाँव तले की जमीन भी खिसक गई. आजकल बेचारे डीसीएलआर कार्यालय का चक्कर काट रहे हैं। मित्रों, अब सुनिए सरकार तो उसे जहाँ विभाग में पारदर्शिता बढ़ानी चाहिए वहीँ वो पारदर्शिता कम करने में लगी है. संशोधन करके सूचना के अधिकार की जान पहले ही निकाली जा चुकी है. पहले जहाँ बिहार भूमि वेबसाइट पर हरेक मौजा में किस-किस किसान का दाखिल ख़ारिज का आवेदन कितने महीनों या सालों से लंबित है का विवरण उपलब्ध रहता था वहीँ अब अनुपलब्ध है. अब किसान सिर्फ अपने आवेदन की स्थिति देख सकता है. न जाने सरकार ने वेबसाइट में इस तरह का संशोधन क्यों किया जिससे इस महाभ्रष्ट विभाग में और भी ज्यादा भ्रष्टाचार हो जाए। मित्रों, आज ही यह समाचार पढने को मिला कि अब अंचलाधिकारी दाखिल ख़ारिज का काम नहीं देखेंगे लेकिन उससे होगा क्याजो अधिकारी दाखिल ख़ारिज देखेगा क्या वो रिश्वत नहीं लेगाफिर यह कोई सुधार तो हुआ नहीं. यह भी पढ़ा कि कानपुर आईआईटी की टीम ने कोई नया सॉफ्टवेयर बनाया है जिससे बिना रिश्वत के दाखिल ख़ारिज हो सकेगा. देखते है कि आगे होता क्या हैवैसे मुझे नहीं लगता कि अंचलाधिकारी, अंचल निरीक्षक और हलका कर्मचारी के पास इसका तोड़ नहीं होगा. ऐसे में 40 साल बाद वही सवाल उठता है जो चम्बल के कुख्यात डाकू मोहर सिंह ने तब उठाया था कि आखिर कब सुधरेंगे बिहार के पटवारी?

भारत-ऑस्ट्रेलिया वार्म अप मैचःहार्दिक ने छक्का लगाकर टीम को जीत दिलाई, ऑस्ट्रेलिया को 8 विकेट से हराया

दुबई (एजेंसी)। दूसरे वार्म अप मैच में भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया को 8 विकेट से हरा दिया है। टॉस जीतकर पहले खेलते हुए ऑस्ट्रेलिया ने 152/5 का स्कोर बनाया। टीम के लिए स्टीव स्मिथ ने 57 रनों की पारी खेली। वहीं, भारत के लिए आर अश्विन 2 विकेट लेने में सफल रहे। 153 रनों के टारगेट को टीम इंडिया ने शानदार खेल दिखाते हुए 17.5 ओवर में दो विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। हार्दिक पंड्या ने 8 गेंदों पर नाबाद 14 और सूर्यकुमार यादव ने 27 गेंदों पर नाबाद 38 रन बनाए। इससे पहले भारत ने अपने पहले वार्म अप मैच में इंग्लैंड को 7 विकेट से हराया था।

टारगेट का पीछा करते हुए केएल राहुल और रोहित शर्मा ने पहले विकेट के लिए 68 रन जोड़े। एश्टन एगर ने राहुल (39) को आउट कर इस साझेदारी पर ब्रेक लगाया। वार्म अप मैच में रोहित शर्मा ने शानदार खेल दिखाते हुए 41 गेंदों पर 60 रनों की पारी खेली।

उन्होंने 5 चौके और 3 छक्के लगाए। रोहित रिटायर्ड हर्ट होकर पवेलियन लौटे। वर्ल्ड कप के शुरू होने से पहले हिटमैन के लिए यह पारी बहुत जरूरी थी। इससे पहले वे ध्श्थ् फेज-2 में रनों के लिए संघर्ष करते नजर आए थे और 6 पारियों में उनके बल्ले से मात्र 131 रन देखने को मिले थे।पहले बैटिंग करने उतरी ऑस्ट्रेलिया की शुरुआत खराब रही। दूसरे ओवर की पांचवीं और छठी गेंद पर अश्विन ने डेविड वार्नर (1) और मिचेल मार्श (0) को आउट को भारत को दोहरी सफलता दिलाई। इसके बाद रवींद्र जडेजा ने आरोन फिंच (8) को आउट कर कंगारू टीम की कमर तोड़कर रख दी। एक समय कंगारू टीम का स्कोर 11/3 था। चौथे विकेट के लिए स्मिथ और ग्लेन मैक्सवेल ने 53 गेंदों पर 61 रन जोड़कर पारी को संभाला। इस पार्टनरशिप को राहुल चाहर ने मैक्सवेल (37) को आउट कर तोड़ा। वहीं, अंतिम ओवर में भुवनेश्वर कुमार ने स्टीव स्मिथ (57) को आउट कर भारत को 5वीं सफलता दिलाई। तार तीन चौके लगाए। स्टीव स्मिथ ने 48 गेंदों पर 57 रनों की शानदार पारी खेली। 5वें विकेट के लिए स्टीव स्मिथ और मार्कस स्टोइनिस ने 49 गेंदों पर 76 रन जोड़े। मैच में विराट कोहली को भी गेंदबाजी करते देखा गया। कोहली ने दो ओवर की गेंदबाजी में बिना कोई विकेट लिए 12 रन खर्च किए। टीम इंडिया के लिए इस फॉर्मेट में विराट ने 12 पारियों में बॉलिंग करते हुए 4 विकेट भी हासिल किए हैं। मैच में आज विराट कोहली की जगह रोहित शर्मा ने टीम की कप्तानी की। रोहित ने टॉस के बाद कहा- हम इस मैच में छठे गेंदबाजी विकल्प को तलाशेंगे। बैटिंग ऑर्डर में भी हम विकल्प तलाश करेंगे। आज सभी प्रयोग किए जाएंगे। हार्दिक पंड्या ने अब तक गेंदबाजी नहीं की है, लेकिन उन्हें टूर्नामेंट के लिए तैयार रहना चाहिए। हमारे पास बेहतरीन पांच गेंदबाज हैं, लेकिन छठे विकल्प की भी जरूरत पड़ती है।मैदान के बाहर मेंटर एमएस धोनी ऋषभ पंत को कीपिंग की प्रैक्टिस कराते नजर आए। हालांकि आज के मैच में पंत की जगह ईशान किशन ने विकेट कीपिंग की। दोनों वार्म अप मैचों में शानदार प्रदर्शन के बाद अब टूर्नामेंट में टीम इंडिया अपने अभियान की शुरुआत 24 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ खेले जाने वाले मैच से करेगी। इस मुकाबले का इंतजार दुनियाभर के क्रिकेट फैंस और पूर्व दिग्गज बड़ी ही बेसब्री के साथ कर रहे हैं। पिछले कुल समय से डेविड वार्नर लगातार खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वार्म अप मैच में वह पहली ही गेंद पर 0 पर आउट हो गए थे और आज भी उनके बल्ले से सिर्फ 1 ही रन निकला। इससे पहले ध्श्थ् फेज-2 में भी उनके बल्ले से दो मैचों में सिर्फ 2 रन निकले थे।

हार्दिक पांड्या टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में गेंदबाजी करेंगे या नहीं, रोहित शर्मा ने दिया अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय उपकप्तान रोहित शर्मा ने बुधवार को कहा कि टीम जब रविवार को आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में अपने अभियान की शुरुआत करेगी तो उम्मीद है कि ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या गेंदबाजी करने के लिए तैयार रहेंगे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अभ्यास मैच में विराट कोहली को आराम दिए जाने के कारण टीम की अगुवाई कर रहे रोहित ने कहा कि मुख्य टूर्नामेंट के दौरान टीम को छठे गेंदबाज की जरूरत पड़ेगी। रोहित ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अभ्यास मैच में टॉस के दौरान कहा, 'हार्दिक अच्छी प्रगति कर रहा है लेकिन उसके गेंदबाजी करने में अभी कुछ समय लगेगा। उसने गेंदबाजी शुरू नहीं की है, लेकिन उसे टूर्नामेंट की शुरुआत तक गेंदबाजी करने के लिये तैयार होना चाहिए। हमारे मुख्य गेंदबाज बहुत अच्छे हैं, लेकिन आपको छठे गेंदबाज के लिए एक विकल्प की जरूरत पड़ेगी।' टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में भारत रविवार को अपने शुरुआती मैच में पाकिस्तान से

भिड़ेगा। टूर्नामेंट से पहले पांड्या की फिटनेस चिंता का विषय है क्योंकि उन्होंने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2021 में गेंदबाजी नहीं की। टीम मैनेजमेंट लगातार कहता रहा है कि पांड्या की गेंदबाजी टीम संतुलन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। कोहली के अलावा तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी को भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अभ्यास मैच में रेस्ट दिया गया। रोहित ने कहा, 'हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हमें छठा गेंदबाजी विकल्प मिले। बल्लेबाजी में भी हम कुछ विकल्प चाहते हैं। हम आज उन सभी चीजों को आजमाएंगे। हम भी पहले बल्लेबाजी करके बड़ा स्कोर बनाना चाहते थे।'

टीम इंडिया के फील्डिंग कोच पद के लिए आवेदन करेंगे अभय शर्मा, आर श्रीधर की जगह ले सकते है

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-ए, इंडिया अंडर-19 और हाल में महिला क्रिकेट टीम के साथ जुड़े रहे अभय शर्मा टीम इंडिया के फील्डिंग कोच पद के लिए आवेदन करेंगे। बीसीसीआई ने हेड कोच के साथ-साथ बैटिंग, बॉलिंग और फील्डिंग कोच के लिए भी आवेदन मांगे हैं। मुख्य कोच के लिए आवेदन करने की आखिरी तारीख 26 अक्टूबर रखी गई है। वहीं, बाकी पदों के लिए 3 नवंबर तक आवेदन दिए जा सकते हैं। अभय अगर सिलेक्ट होते हैं तो वह मौजूदा फील्डिंग कोच आर श्रीधर की जगह ले सकते हैं। श्रीधर आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के बाद अपना पद छोड़ देंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र अभय शर्मा को लेकर कहा, 'वह जल्द ही टीम इंडिया के फील्डिंग कोच पद के लिए आवेदन करेंगे। 52 साल के अभय दिल्ली, रेलवे और राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और वह 89 प्रथम श्रेणी मैच खेल चुके हैं। वह 2016 में जिम्बाब्वे का दौरा करने वाली भारतीय टीम के फील्डिंग कोच थे। वह अमेरिका और वेस्टइंडीज दौरे पर भी भारतीय टीम के साथ थे। हाल ही में, इंग्लैंड दौरे के दौरान कप्तान हरमनप्रीत कौर सहित भारतीय महिला क्रिकेटरों ने उनके काम की तारीफ की थी।

विराट कोहली के बाद रोहित शर्मा होंगे टीम इंडिया के कप्तान, ऊ20 वर्ल्ड कप के बाद बीसीसीआई करेगा ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ओमान में जारी टी-20 वर्ल्ड कप के बाद क्रिकेट के इस फॉर्मेट में कप्तानी करना छोड़ देंगे। बीसीसीआई ने अभी तक यह नहीं बताया है कि विराट के बाद कौन टीम इंडिया का अगला टी-20 कप्तान बनेगा। लेकिन सूत्रों ने कहा है कि कोहली के कप्तानी छोड़ने के रोहित शर्मा टी-20 क्रिकेट में भारतीय टीम की कमान संभालेंगे। रोहित इस समय व्हाइट बॉल क्रिकेट में टीम इंडिया के उपकप्तान हैं और बीसीसीआई के एक अधिकारी ने इनसाइड से कन्फर्म करते हुए कहा कि वह भारत के अगले टी-20 कप्तान होंगे।

बीसीसीआई के अधिकारी ने कहा, ' वर्ल्ड कप के बाद रोहित

शर्मा टी-20 फॉर्मेट में टीम इंडिया के अगले कप्तान होंगे। टी-20 वर्ल्ड कप के बाद इसकी औपचारिक घोषणा की जाएगी।'

कोहली 2017 में टीम इंडिया के टी-20 कप्तान बने थे। उन्होंने 45 टी-20 मैचों में भारत की कप्तानी की है, जिसमें टीम को 27 में जीत मिली है और उनका विनिंग पर्सेंटेज 65.11 का रहा है। कोहली की कप्तानी में भारत को 14 मैचों में हार का सामना करना पड़ रहा है और दो मैचों का कोई परिणाम नहीं आया है। रोहित अपनी कप्तानी में मुंबई इंडियंस को पांच बार चैंपियन बना चुके हैं जबकि कोहली की कप्तानी में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर एक बार भी खिताब नहीं जीत पाई है।

इंग्लैंड के इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा- भारत निश्चित रूप से फाइनल में जगह बनाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व स्पिनर मोंटी पनेसर ने यूएई और ओमान में जारी आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के फाइनल में पहुंचने के लिए विराट कोहली की कप्तानी वाली भारतीय टीम का सपोर्ट किया है। 2007 में दक्षिण अफ्रीका में हुए पहले आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद से भारत ने इस खिताब पर अपना कब्जा नहीं जमाया है। टीम इंडिया का लक्ष्य अब उस 14 साल के खिताबी सूखे को समाप्त करना है। टी-20 वर्ल्ड कप में भारत अपना पहला मैच 24 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ खेलेगा। मोंटी पनेसर का मानना ??है कि टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने का प्रबल दावेदार है। पनेसर ने द टाइम्स आफ इंडिया से कहा, ' भारत प्रबल दावेदार होने जा रहा है। वे खिताब के प्रबल दावेदार के रूप में टूर्नामेंट में प्रवेश

करेंगे। मुझे लगता है कि वे निश्चित रूप से फाइनल में पहुंचेंगे। विराट का लक्ष्य बतौर कप्तान आईसीसी खिताब जीतना है और वह इस मौके को आसानी से नहीं छोड़ेंगे। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में कप्तान के रूप में यह उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा और वह इस खिताब को जीतने के भूखे दिख रहे हैं।'

पाकिस्तान अभी तक किसी भी विश्व कप में भारत को नहीं हरा पाया है, चाहे वो 50-ओवर का हो या टी 20 फॉर्मेट का। भारतीय टीम अब वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 13-0 तक बढ़ाना चाहेगी। पनेसर का मानना ??है कि भारत अगर पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम को जल्दी आउट कर देता है, तो वे बाकी के बल्लेबाजी क्रम को आसानी से निपटा सकता है। उन्होंने साथ ही कहा कि आंकड़ों के लिहाज से दबाव पाकिस्तान पर होगा। पूर्व इंग्लिश स्पिनर ने कहा, ' अगर भारत के गेंदबाज बाबर आजम को जल्दी आउट कर देते हैं, तो वे ताश के पत्तों की तरह पाकिस्तान को ढेर कर सकते हैं।

पूर्व क्रिकेटर ने कहा- मैं हाथ जोड़कर बोलता हूं सूर्यकुमार और हार्दिक को बल्लेबाजी में ऊपर भेजो

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने टीम इंडिया से अनुरोध किया है कि सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पांड्या को इस क्रम में भेजा जाए कि दोनों की जोड़ी बीच में अच्छी हिट हो सके। टी20 वर्ल्ड कप के सुपर 12 के मुकाबलों से पहले सभी टीमें दो-दो वॉर्म-अप मैच खेलेगी। भारतीय टीम ने पहले प्रैक्टिस मैच में इंग्लैंड को सात विकेट से ?शिकस्त दी थी और अब टीम इंडिया को अपना दूसरा अभ्यास मैच आज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलना है। पहले अभ्यास मैच में सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पांड्या को बल्लेबाजी का ज्यादा मौका नहीं मिला था। आकाश ने टीम मैनेजमेंट से सूर्यकुमार तथा हार्दिक को

बल्लेबाजी के लिए ऊपर भेजे जाने का आग्रह किया है ताकि मुख्य मुकाबलों से पहले दोनों बल्लेबाज लय हासिल कर लें।

आकाश ने अपने यूट्यूब चैनल पर भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले वार्म-अप मैच से पहले कहा, ' मैच खत्म करने के लिए आपको लोगों की जरूरत है जो फॉर्म में हों और इसके लिए, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि उन दोनों (सूर्या और हार्दिक) को बल्लेबाजी के लिए ऊपर भेजें। आपने पिछले मैच में एक मौका गंवाया था और आपको हर बार यह मौका नहीं मिलेगा। अगर आप ऋषभ पंत को नंबर चार पर खिलाते हैं तो फिर नंबर पांच और छह पर बल्लेबाजी करने वाले बल्लेबाजों के पास फॉर्म नहीं है। सूर्यकुमार यादव ने बेशक मुंबई के लिए खेले गए आखिरी मैच में रन बनाए थे, लेकिन आईपीएल का उनका दूसरा लेग एक मैच के अलावा अच्छा नहीं रहा।'भारतीय टीम टी20 वर्ल्ड कप में सुपर 12 में अपना पहला मुकाबला 24 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ खेलेगी। पाकिस्तान अभी तक किसी भी विश्व कप में भारत को नहीं हरा पाया है, चाहे वो 50-ओवर का हो या टी 20 फॉर्मेट का। भारतीय टीम अब वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 13-0 तक बढ़ाना चाहेगी।

नेशनल हाईवे के लूट में शामिल इनामी बदमाश को पुलिस ने किया गिरफ्तार

गोपीगंज। नवनियुक्त पुलिस अधीक्षक डॉक्टर अनिल कुमार द्वारा अपराध पर अंकुश लगाने के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाने हेतु जनपद के सभी थानाध्यक्षों को सख्ती बरतने के आदेश दिए है । दिन बुधवार को कोतवाली गोपीगंज में ज्ञानपुर सदर क्षेत्राधिकारी अशोक कुमार सिंह ने अभियुक्तों को पेश करते हुए बताया कि नेशनल हाईवे पर हो रही अपराधिक घटनाओं नियंत्रण हेतु प्रभारी निरीक्षक थाना गोपीगंज के नेतृत्व में टीम गठित करके अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया था। आदेश के अनुपालन में अपर पुलिस अधीक्षक भदोही व क्षेत्राधिकारी अशोक कुमार सिंह के नेतृत्व में प्रभारी

निरीक्षक थाना गोपीगंज द्वारा नेशनल हाईवे पर लूट करने वाले 10,000 का इनामी अपराधी सहित 3 अभियुक्त गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो तमंचा मैं जिंदा चार जिंदा कारतूस 2 मोटरसाइकिल सुपर स्प्लेंडर व पल्सर लूटा हुआ माल तीन मंगलसूत्र, लाकेट बरामद करने में सफलता प्राप्त की है। अशोक कुमार सिंह ने बताया कि अभियुक्तों का एक संगठित गिरोह है। जो आए दिन नेशनल हाईवे पर आने जाने वाले यात्रियों व महिलाओं के जेवरात व नगद रुपया लूट लेते है, और उसको बेचने के बाद जो पैसा प्राप्त होता है वह अपने भौतिक सुख-सुविधाओं में खर्च करते है। गिरफ्तार अभियुक्त विपिन कुमार निषाद पुत्र मंगला प्रसाद निषाद निवासी मवैया थाना औद्योगिक क्षेत्र प्रयागराज उम्र 35 वर्ष, राजेश गौड़ पुत्र जवाहर लाल गौड़ निवासी केदारपुर थाना गोपीगंज जनपद भदोही उम्र 29 वर्ष। वही जेवरात खरीदने वाले दुकानदार धीरज जायसवाल पुत्र दयाशंकर निवासी वैदाखास थाना गोपीगंज जनपद भदोही उम्र 20 वर्ष को भी गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी करने वाली टीम में कोतवाल अभिनव कुमार वर्मा, उप निरीक्षक संतोष राय, हेड कांस्टेबल एजाज खान, हेड कांस्टेबल कुमार यादव, कांस्टेबल अश्वनी सिंह ,कांस्टेबल रामशरण, कांस्टेबल प्रशांत पांडे, कांस्टेबल अरविंद कुमार शामिल रहे।

पेट्रो मूल्य वृद्धि पर सरकार ने साध रखी है चुप्पी

भदोही। कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के पूर्व जिलाध्यक्ष परवेज अंसारी ने कहा कि 70 रु लीटर पेट्रोल व पांच सौ में मिलने वाला ईधन गैस जिसे महंगा लग रहा था। अब वह 101 रु लीटर पेट्रोल व एक हजार में मिल रहे ईधन गैस पर चुप्पी क्यों साधे है। जनहित में समर्पित नेताओं को दलीय बंधन तोड़ कर जन समस्या के लिए पुनः 2013 की तरह आंदोलन करना चाहिए। लेकिन लगता है जन सेवक सत्ता सुख में व्यस्त है। उनका जनता प्रेम स्वार्थ हित में दिखाई नही दे रहा है। पूर्व जिलाध्यक्ष ने कहा कि अच्छे दिन का जनता को सपना दिखा कर 2013 में महंगाई का रोने वाले 2014 में सत्ता हासिल कर अपना अच्छा दिन तो ला दिये। 2019 में पुनः अच्छे दिन आने के सपने दिखा कर जनता को वो हाल कर दिये की आजादी के बाद से इतने बुरे दिन जनता ने कभी नही देखे थे।

वाल्मीकि जयंती पर सजे मंदिर, हुआ रामायण का पाठ

अखंड भारत संदेश

भदोही। जनपद में आज महर्षि वाल्मिकी जयंती का आयोजन किया गया। जयंती समारोह के तहत जनपद के सभी प्रमुख राम-जानकी और हनुमान मंदिरों में रामायण का पाठ किया गया।

वाल्मीकि जयंती पर आयोजित रामचरित मानस के पाठ में स्थानीय लोगों ने भी बढ़-चढकर सहभागिता की। यह आयोजन जनपद के सीतामढ़ी, वाल्मीकि आश्रम, चकवा महावीर मंदिर, रामजानकी मंदिर एवं हरिहर नाथ आदि मंदिर में विशेष तौर पर रामायण पाठ का अयोजन किया गया। इसके अलावा वाल्मीकि जयंती के अवसर पर मंदिरों की साफ-सफाई, पेजयल व्यवस्था, साज-सज्जा का कार्य किया गया। इस आयोजन के लिए नोडल अधिकारी के साथ-साथ

पर्यवेक्षक भी तैनात किए गए थे। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी के निर्देश के क्रम में वाल्मीकि जयंती पर रामायण में निहित मानव मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, राष्ट्र मूल्यों के प्रचार-प्रसार व जनमानस को इससे जोडने पर भी बल दिया गया।

इस आयोजन के लिए मंदिरों पर साफ-सफाई, पेयजल के साथ ही अन्य व्यवस्थाएं की गई थीं। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने मीरजापुर में मंडलायुक्त के साथ महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। जनपद के सीतामढ़ी एवं वाल्मीकि आश्रम में भव्य पूजा अर्चना एवं रामायण पाठ किया गया।

राष्ट्रीय हलवाई संघ ने मुख्यमंत्री को भेजा पत्र

गोपीगंज। राष्ट्रीय हलवाई संघ की एक बैठक नगर अध्यक्ष डॉ. आनंद कुमार गुप्ता सभासद के आवास पर संपनन हुई जहां बीते दिनों फूलपुर नगर पंचायत के स्वजातीय बंधू गोपाल मोदनवाल के दुकान में मनबढ अपराधियों द्वारा तोड़फोड़ के साथ मारपीट की घटना की कड़ी निंदा की गई। इस संदर्भ में नगर अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश योगी आदित्यनाथ जी को संबोधित पत्र भेजकर अपराधियों के ऊपर कड़ी कार्यवाही की मांग किया है कहा कि अपराधी धनबल के जरिए स्थानीय प्रशासन पर दबाव बना रहे हैं जबकि राष्ट्रीय हलवाई संघ ने निष्पक्ष जांच कर अपराधियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग किया बैठक में प्रमुख रूप से धीरज मोदनवाल रतनेश मोदनवाल आशीष गुप्ता चंदन मोदनवाल रवि मोदनवाल अमित कुमार विजय कुमार सहित अन्य सजातीय बंधुओं मौजूद रहे।

बांग्लादेश में हिंदुओं के ऊपर हो रहे अत्याचार को लेकर विश्व हिंदू परिषद ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। बांग्लादेश में हिंदुओं के ऊपर हो रहे अत्याचार को लेकर विश्व हिंदू परिषद ने राष्ट्रीय राजमार्ग के चौराहे पर प्रदर्शन किए त् बांग्लादेशी सरकार से विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा बंग्लादेश में हिन्दुओं पर हमले लगातार बढ़ते जा रहे हैं,हिन्दू धर्मस्थलों, पूजा पांडालों को तहस नहस करने के पश्चात हिन्दू परिवारों पर लगातार आक्रमण हो रहे हैं। । बांग्लादेश में हिंदुओं के दुर्गा पूजा पंडाल और इस्कॉन मंदिर को आग के हवाले कर दिया गया। इतना सब होने के पश्चात भी बांग्लादेश की सरकार आँख बंद करके बैठी है।

हिन्दू परिषद बांग्लादेश सरकार से मांग करती है कि हिन्दुओं पर हो रहे आक्रमणों तथा अत्याचारों को रोकने हेतु कड़े कदम उठाए तथा भारत सरकार से निवेदन करती है वह बांग्लादेश से इन घटनाओं को रोकने हेतु दबाब बनाए। कृष्ण कुमार खटाई, संतोष वर्मा, वीरेंद्र पांडे, सभासद नरेंद्र दुबे, सतीश गुप्ता उर्फ फैकट, दीपक कौशल आदि उपस्थित रहे।

निहंग डेरा चीफ पर 5 केसः बाबा अमन पर तस्करी जैसे आरोप, लखबीर केस में आरोपी चारों निहंग इन्हीं के दल के

लुधियाना (एजेंसी)। हरियाणा में सिंघु बॉर्डर पर दशहरे वाली सुबह हुई पंजाबी युवक लखबीर सिंह की हत्या में जिन 4 निहंगों ने पुलिस के सामने सरेंडर किया है, वह चारों बाबा अमन सिंह के दल से ताल्लुक रखते हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के साथ फोटो सामने आने की वजह से सुर्खियों में आए निहंग बाबा अमन सिंह का विवादों से पुराना नाता रहा है। बाबा अमन सिंह के खिलाफ नशा तस्करी और मारपीट के आपराधिक केस दर्ज हैं और इनकी सुनवाई अदालतों में चल रही है। बाबा अमन सिंह कुछ समय के लिए कपूरथला की सेंट्रल जेल में बंद भी रह चुका है।

एक जांच पड़ताल में सामने आया कि पंजाब के बरनाला जिले में महलकलां थाने की पुलिस ने 14 जनवरी 2018 को चेकिंग के दौरान जरनैल सिंह निवासी रंगिया कोठे (बरनाला), रेशम सिंह निवासी गरचा रोड बरनाला,कुलविंदर सिंह हरजीत और बलकार सिंह से 9 क्विंटल गांजा बरामद किया। पुलिस ने गुप्त सूचना के बाद इन चारों को इलाके की एक ड्रेन के पास से पकड़ा तो उनसे यह गांजा मिला। जांच के दौरान पुलिस ने अमन सिंह उर्फ बाबा निवासी बबनपुर, धूरी (जिला संगरूर) को भी इसी केस में नामजद कर लिया। संगरूर की स्पेशल कोर्ट में इस मामले की सुनवाई चल रही है। बाबा अमन सिंह के खिलाफ जालंधर के रामामंडी थाने में भी मारपीट के 4 आपराधिक केस दर्ज हैं। रामामंडी थाने में पहला केस 30 मई 2013 को आईपीसी की धारा 325, 324 के तहत दर्ज किया गया। रामामंडी थाने में ही अमन सिंह पर जुलाई 2017 और अक्टूबर 2017 में भी आईपीसी की धाराओं 447/511 व 107/151 के तहत मामले दर्ज किए गए। इनमें से एक केस में वह कपूरथला सेंट्रल जेल में बंद भी रह चुका है।

सिंघु बॉर्डर पर 15 अक्टूबर की सुबह हुई तरनतारन जिले के चीमा गांव के लखबीर सिंह की हत्या के बाद बाबा अमन सिंह और उनका निहंग दल चर्चा में है। उनके दल के 4 निहंग पुलिस के सामने सरेंडर कर चुके हैं। इन चारों का कहना है कि लखबीर सिंह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी की और इसीलिए उन्होंने उसकी हत्या कर दी।

लखबीर की बर्बर हत्या के बाद तमाम लोग निहंग जत्थेबंदियों पर सवाल उठा रहे हैं। संयुक्त किसान मोर्चा तो स्पष्ट कह चुका है कि निहंग जत्थेबंदियों की । संघु बॉर्डर पर कोई जरूरत नहीं है और उन्हें यहां से चले जाना चाहिए।लखबीर की हत्या के पांचवें दिन, 19 अक्टूबर को निहंग बाबा अमन सिंह की केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर और कुछ अन्य भाजपा नेताओं के साथ फोटो वायरल हुई। यह फोटो 5 अगस्त 2021 को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी के घर ली गई।

बरनाला के महलकलां थाने 2018 में दर्ज गांजा तस्कारी के केस में नामजद

महलकलां पुलिस ने 14 जनवरी 2018 को जरनैल सिंह, रेशम सिंह, कुलविंदर सिंह, हरजीत और बलकार सिंह से 9 क्विंटल गांजा बरामद किया।

ये पांचो गांजा के साथ ड्रेन के पास पकड़े गए। जांच में अमन सिंह उर्फ बाबा निवासी बबनपुर, धूरी (जिला संगरूर) को इसी केसा में नामजद किया।

4 साल से जेल में कैद वकील को नहीं मिली जमानत, घ्घ्घ् से संबंध रखने का है आरोपी, एससी ने कहा- आरोप बेहद गंभीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने एक वकील पर प्रतिबंधित संगठन घ्घ्घ् से संबंध रखने के लगे आरोपों के मामले में आरोपी वकील को जमानत देने से इनकार कर दिया। चीफ जस्टिस एनवी रमनन की अध्यक्षता वाली बेंच ने इस बात पर भी गौर किया कि आरोपी उबेद अहमद 25 अक्टूबर, 2017 से जेल में है और यहां तक कि उसके खिलाफ चार्ज भी फ्रेम नहीं किया गया है और आदेश दिया कि एक साल में इस ट्रायल का निष्कर्ष निकाला जाए। बुधवार को इस मामले में अदालत में सुनवाई हुई और मुख्य न्यायाधीश ने सुनवाई के दौरान कहा कि आरोप बेहद गंभीर हैं। चीफ जस्टिस ने याचिकाकर्ता उबेद मिर्जा के वकील से कहा कि उनके क्लाइंट पर लगे आरोप काफी गंभीर हैं। चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली इस बेंच में जस्टिस सूर्य कांत और हिमा कोहली भी शामिल थे। उन्होंने याचिकाकर्ता के वकील सिद्धार्थ दवे से कहा, आपके खिलाफ सबूत हैं। इस स्टेज पर इसकी कोई वजह नहीं है कि हम इन सबूतों को ना मानें। आप आईएसआईएस के एजेंट

के तौर पर काम कर रहे थे। बेंच ने आगे कहा कि याचिकाकर्ता के व्हाट्सऐप चैट दूसरे समुदाय के लोगों की हत्या करने से संबंधित हैं।

सुनवाई के दौरान दवे ने अदालस से आग्रह किया कि उनके क्लाइंट, सूरत में वकील है और अभी प्रैक्टिस भी करते हैं। गुजरात पुलिस ने साल 2017 में उन्हें गिरफ्तार किया था। इसके बाद बिना चार्ज फ्रेम किये हुए वो करीब चार सालों से जेल में हैं। उन्होंने अदालत से कहा कि यह उनके क्लाइंट के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है।

याचिकाकर्ता के वकील ने अदालत में कहा कि उन्हें क्लाइंट पर सिर्फ यहीं आरोप है कि वो पैसों के लिए आईएसआईएस में लोगों की नियुक्ति करते थे। इसके बाद फेसबुक पोस्ट और व्हाट्सऐप चैट के आधार पर उनपर यूएपीए लगाया गया। उनके पास से एक भी पैसा बरामद नहीं हुआ और ना ही उन्होंने कभी सीरिया की यात्रा की है। हालांकि, अदालत में मौजूद जजों की खंडपीठ ने कहा कि ऐसा नहीं है कि यूएपीए लगने की वजह से उन्हें जमानत नहीं दी जा रही। बल्कि उनके खिलाफ लगाए गए आरोप काफी गंभीर हैं। गुजरात एटीएस की त?फ से अदालत में सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता मौजूद थे।

एक को मनाऊं तो दूजा रूठ जाता है... अब महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रवक्ता ने छोड़ दिया पद

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस के लिए पंजाब, छत्तीसगढ़, राजस्थान और यूपी से लेकर महाराष्ट्र तक में मुसीबत बनी हुई है। महाराष्ट्र कांग्रेस के तेजतर्रार प्रवक्ता सचिन सावंत ने पद से इस्तीफा दे दिया है। कहा जा रहा है कि प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले की ओर से मनमाने ढंग से पद बांटे जाने के खिलाफ सावंत ने इस्तीफा दिया है। नाना पटोले ने अतुल लोंधे को महाराष्ट्र में मुख्य प्रवक्ता की जिम्मेदारी है, जो 2016 में ही एनसीपी छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए थे। इस फैसले के विरोध में ही सावंत ने पद से इस्तीफा दिया है। सचिव सावंत को लोंधे के साथ सहायक प्रवक्ता की जिम्मेदारी दी गई थी। यह एक तरह से उनका डिमोशन था और इसके विरोध में ही उन्होंने पद छोड़ दिया।

सचिन सावंत करीब 10 साल से प्रवक्ता की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। सावंत ने अपने ट्विटर बायो से भी कांग्रेस प्रवक्ता के तौर पर

अपना परिचय हटा लिया है। सावंत ने अपने इस्तीफे के बारे में फिलहाल ज्यादा जानकारी नहीं दी है।

कहा जा रहा है कि तीन दशकों से कांग्रेसी रहे सचिव सावंत बाहर से आए नेता को खुद से आगे बढ़ाए जाने के बाद उपेक्षित महसूस कर रहे थे। इसके चलते ही उन्होंने पद से इस्तीफा दिया। पूर्व की देवेंद्र फडणवीस सरकार और भाजपा के विरोध में वह काफी मुखर नजर आते थे। ऐसे में कांग्रेस ने अपने एक मजबूत चेहरे को प्रवक्ता के तौर पर खो दिया है। सचिन सावंत की ओर से पद छोड़ने के साथ ही सोनिया गांधी को भी पत्र लिखे जाने की बात सामने आ रही है। सावंत ने सोनिया गांधी से मांग की है कि उन्हें कोई और जिम्मेदारी दी जाए। बीते कुछ दिनों में सचिन सावंत ने आने वाले चुनावों में कांग्रेस के अकेले जाने की भी वकालत की थी। उनका कहना था कि पार्टी को शिवसेना और एनसीपी से इतर चुनावी समर में उतरना चाहिए।

पंजाब को दहलाने की साजिश नाकाम

इंटरनेशनल बॉर्डर से हेरोइन के साथ 22 पिस्टल, 44 मैगजीन और 100 कारतूस बरामद, ड्रोन से भेजने की आशंका

अमृतसर त्योहारी सीजन में पंजाब को दहलाने की कोशिश को पंजाब पुलिस ने नाकाम कर दिया। बुधवार को पुलिस ने तरनतारन के साथ लगती भारत-पाक सीमा से हथियार और नशा बरामद किया है। पंजाब पुलिस और ँएइ ने यह सांझी कार्रवाई करते हुए बीओपी मियांवाली हिथार खेमकरण सेक्टर में की गई।

जॉइंट टीम ने 22 पिस्तौल, 44 मैगजीन, 100 जिंदा कारतूस और करीब एक किलो हेरोइन बरामद की है। पुलिस ने आशंका जताई है कि ड्रोन के जरिए यह खेप पाकिस्तान से भारत में पहुंचाई गई है। डीजीपी इकबालप्रीत सहोता ने बताया कि काउंटर इंटेलिजेंस को सूचना मिली थी कि बॉर्डर के पास हथियारों की खेप फेंकी गई है। इसके बाद पंजाब पुलिस के काउंटर इंटेलिजेंस ने ँएइ के अधिकारियों के साथ संपर्क साधा और सर्च ऑपरेशन शुरू किया। इस दौरान ँध्झ् मियांवाली हिथार की फेंसिंग के पास धान के खेत में काले रंग का किट बैग मिला। इसमें यह हथियारों और नशे की खेप रखी गई थी। बैग में 22 पिस्टल .30 एमएम, 44 मैग्जीन, 100 गोलियां 7.63 एमएम, एक किलोग्राम हेरोइन और अफीम का पैकेट मिला है।

डीजीपी सहोता ने जानकारी दी कि इस खेप को भारत भिजवाने के पीछे पाकिस्तानी तस्करों का हाथ है। जिसे भारत में उनके साथियों ने उठाना था। हालांकि इससे पहले ही पुलिस ने उसे बरामद कर लिया। पुलिस ने तस्करों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट, आर्म्स एक्ट और अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया है। अब पाक तस्करों के साथ भारत में इसे उठाने वाले तस्करों की भी पड़ताल की जा रही है।डीजीपी सहोता ने जानकारी दी कि यह

हरकतें पंजाब के माहौल को खराब करने के लिए की जा रही हैं। बीते दिनों बटाल के पूरियां कलां निवासी जगजीत सिंह जग्गू से 48 पिस्टल रिकवर की गई थी। वहीं एएध्ण् की टीम ने 39 पिस्टल मध्य प्रदेश के बड़वानी से जब्त की थी। अब जो 22 पिस्टल रिकवर किए गए हैं, उनका इस्तेमाल भी पंजाब के माहौल को खराब करने के लिए ही किया जाना था। फेंसिंग के पास गश्त कर रहे जवानों को रात राजाताल के पास भी ड्रोन की मूवमेंट की आवाज सुनने को मिली थी। जिसके बाद जवानों ने आवाज की तरफ हवाई फायर भी किए। फिर ड्रोन वापस चला गया। रात से ही बॉर्डर पर सर्च अभियान चलाया जा रहा है।

आशंका है कि यहां भी हथियार या नशे के पैकेट्स फेंके गए हों।इस बरामदगी के बावजूद पंजाब में गृह विभाग देख रहे डिप्टी सीएम सुखजिंदर रंधावा का दिलचस्प बयान सामने आया है। उन्होंने कहा कि पंजाब को पाकिस्तान या चाइना से खतरा नहीं है। इस बरामदगी के बावजूद वो पाकिस्तान की साजिश के बजाय बॉर्डर पर तैनात ँएइ पर सवाल उठा रहे हैं। उनका कहना है कि अगर बॉर्डर पर इतनी सख्ती है तो हथियार और नशा पंजाब के भीतर कैसे आ रहा है?। क्या कोई उनसे मिला हुआ है। पंजाब के पूर्व सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह ने इस बरामदगी के बहाने फिर से पंजाब में सुरक्षा के लेकर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने कहा कि पहले भी हथियारों और नशे की बरामदगी की गई है। अब फिर से यह बरामदगी स्पष्ट करती है कि पंजाब में सुरक्षा के लिहाज से हालात चिंताजनक हैं। इसी वजह से उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से मुलाकात कर पूरी स्थिति से अवगत करवाया था।

सिंघु बॉर्डर मर्डर में अब किसानों का एक्शन, किसान संगठनों ने बनाई फैक्ट फाइंडिंग कमेटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोनीपत के सिंघु बॉर्डर पर 15 अक्टूबर की सुबह पंजाब के युवक लखबीर सिंह की नृशंस हत्या से जुड़े मामले में किसान संगठन अब अपने लेवल पर तथ्यों की पड़ताल करेंगे। निहंगों के बेअदबी करने पर लखबीर को मारने के दावों के बीच किसान संगठनों ने अपनी अलग फैक्ट फाइंडिंग कमेटी गठित कर दी है। इस कमेटी में पांच किसान नेता शामिल किए गए हैं। यह कमेटी इस मामले से जुड़े सभी पहलुओं की अपने लेवल पर जांच करके रिपोर्ट किसान संगठनों के सामने पेश करेगी। किसान संगठनों ने अपनी फैक्ट फाइंडिंग कमेटी में कंवलप्रीत सिंह पन्नू, बलदेव सिंह सिरसा, काका सिंह कोटड़ा, परगट सिंह जामाराय और जतिंदर सिंह छीना को शामिल किया है। पढ़ें पूरी खबर...

झारखंड के धनबाद में जज की हत्या के मामले में ्रँघ् जल्द ही चार्जशीट पेश करेगी। सूत्रों के मुताबिक, जांच एजेंसी की चार्जशीट में गिरफ्तार दो लोगों पर मर्डर का चार्ज लगाया गया है। बता दें कि धनबाद के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश उत्तम आनंद मर्डर केस में 2 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस का कहना है कि इनमें से एक ने अपना गुनाह कबूल कर लिया है। झारखंड पुलिस के प्रवक्ता अमोल बी होमकर ने बताया कि

ऑटो चालक लखन वर्मा और उसके सहयोगी राहुल वर्मा को गिरफ्तार किया गया है। लखन ने स्वीकार किया है कि उसने ऑटो से जज को धक्का मारा था। लखबीर सिंह को गुरु ग्रंथ साहिब की कथित बेअदबी के मामले में मार दिया गया था। उसका शव पुलिस बैरिकेड से लटका मिला था। लखबीर सिंह को गुरु ग्रंथ साहिब की कथित बेअदबी के मामले में मार दिया गया था। उसका शव पुलिस बैरिकेड से लटका मिला था।

दिल्ली से सटे सिंघु बॉर्डर पर 15 अक्टूबर को हुई लखबीर सिंह की हत्या की जांच के लिए पंजाब सरकार ने 3 घ्झए अफसरों की एघ्ळ का गठन कर दिया है। एघ्ळ की अगुआईं 'ऊझ् करेंगे, जबकि इसमें एक घ्ठ और एक एएझ् शामिल होंगे। एघ्ळ लखबीर के सिंघु बॉर्डर पर पहुंचने और उसके बाद वहां हुए घटनाक्रम की जांच करेगी। लखबीर की सुबह 15 अक्टूबर हत्या कर दी गई थी। उसके बाद शव को पुलिस बैरिकेड से लटका दिया गया था। पुलिस ने इस मामले में 4 निहंगों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने अपना जुर्म कबूल भी कर लिया है। पुलिस उन्हें रिमांड पर लेकर पूछताछ कर रही है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के हर्षिल से 11 अक्टूबर को पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश के चितकुल के लिए रवाना हुआ ट्रैकिंग दल चीन सीमा के करीब लापता हो गया है। उत्तरकाशी के जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी देवेंद्र पटवाल ने बताया कि दल में 7 कोलकाता व एक दिल्ली का पर्यटक था, जबकि उत्तरकाशी के तीन स्थानीय पोर्टर शामिल थे। इन सभी को 19 अक्टूबर को चितकुल पहुंच जाना था। एसडीआरएफ ने बचाव दल भेजने के साथ ही हेलिकॉप्टर से भी तलाश शुरू करा दी है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के काफिले को पुलिस ने बुधवार को लखनऊ में रोक दिया। प्रियंका आगरा में 19 अक्टूबर को पुलिस हिरासत में हुई सफाई कर्मचारी की मौत के बाद उसके परिवार से मिलने जा रही थीं। आगरा जाने से रोके जाने पर प्रियंका ने कहा कि पुलिस की खुद स्थिति यह हो गई है कि वे कुछ कह नहीं पा रहे हैं। उनके अधिकारी भी जानते हैं कि ये गलत है, इसके पीछे कोई कानून व्यवस्था का मुद्दा नहीं है। हर जगह कहते हैं कि धारा-144 लागू है।प्रियंका ने कहा कि किसी की मौत पर उसके घर के परिजनों से मुलाकात करने दिए जाने से लॉ आर्डर कैसे बिगड़ सकता हैआप लोगों को खुश करने के लिए क्या मैं लखनऊ के गेस्ट हाउस में आराम से बैठी रहूं। किसी को पुलिस कस्टडी में पीट-पीटकर मार देना कहां का न्याय है?बिहार पंचायत चुनाव के चौथे चरण के लिए वोटिंग जारी है। बुधवार को 36 जिलों के 53 ब्लॉक में मतदान हो रहे हैं। कटिहार के सालेपुर में एक बूथ पर टेबल और कुर्सी तक नहीं है। यहां फर्श पर ंिश् रख वोटिंग कराई जा रही है। वहीं, खगडि़या में सुबह से हल्की बारिश हो रही है।

विपक्ष बंटेगा तो कैसे लड़ेगायूपी में कांग्रेस की मजबूती में भी भाजपा को कैसे मिल रहा फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में राजनीतिक रूप से सबसे अहम सूबे उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव अब बेहद नजदीक आ चुका है। ऐसे में सभी दल ताकत झोंकने के साथ खुद को सबसे मजबूत बताने में जुटे हुए हैं, जनता के बीच सबसे अधिक लोकप्रियता किसकी है यह तो मतगणना के बाद ही तय होगा, लेकिन इतना साफ है कि पिछले कुछ दिनों में जिस तरह कांग्रेस ने सक्रियता बढ़ाई है उससे सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) से अधिक समाजवादी पार्टी की बेचैनी बढ़ी है। राजनीतिक जानकार कहते हैं कि कांग्रेस जीतने की स्थिति में तो नहीं दिखती लेकिन वह सपा और बसपा जैसे दलों का कुछ वोट जरूर अपनी ओर खींच सकती है, जिससे बीजेपी को सीधा फायदा होगा। इसके अलावा ओवैसी जैसे नेता भी सत्ताविरोधी वोटों का बंटवारा करेंगे। 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने प्रचंड बहुमत के साथ 311 सीटों पर कब्जा किया था, जबकि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी गठबंधन के बावजूद महज 54 सीटें जीत पाई थीं। यूपी को

यह साथ पसंद है के नारे के साथ चुनावी मैदान में कूदे राहुल और अखिलेश का यह साथ करारी हार के बाद अधिक दिनों तक नहीं टिका। 2019 लोकसभा चुनाव में बसपा से पुरानी दुश्मनी भुलाकर साइकिल पर हाथी को बिठाने का अखिलेश का प्रयोग सफल नहीं रहा। ऐसे में बुआ और भतीजे का भी साथ एक दूसरे पर ठीकरा फोड़ने के साथ खत्म हो गया।

2014 से ही भगवा दल को रोकने के लिए विपक्षी एकजुटता का नारा देते आ रहे दल इस चुनाव में एक मंच पर आने की बात भी नहीं कर रहे हैं। ऐसे में किसान आंदोलन, लखीमपुरखीरी हिंसा, ब्राह्मणों की अनदेखी जैसे मुद्दों पर भले ही विपक्ष ने योगी सरकार की घेराबंदी तेज कर दी है, लेकिन वोटों के बिखराव की वजह से बीजेपी अधिक चिंता में दिखाई नहीं देती है। यूपी के वरिष्ठ पत्रकार गोविंद पंत राजू कहते हैं कि विपक्षी एकता नहीं होने की वजह से वोट बंटना तो तय है, भले ही किसी को अधिक और किसी को कम वोट मिलेंगे, लेकिन वोटों के बिखराव से बीजेपी का फायदा होना तय है।

यूएन में चीन के प्रोजेक्ट पर सवाल उठा रही थीं भारतीय राजनयिक, बीच में बंद हो गया माइक

बीजिंग (एजेंसी)। बीजिंग में संयुक्त राष्ट्र की बैठक में बुधवार को कुछ ऐसा हुआ कि सभी लोग हैरान रह गए। जैसे ही भारतीय राजनयिक ने चीन के 'बेल्ट एंड रोड इनिशएटिव' (ँघ) और इसकी महत्वाकांक्षी परियोजना सीपीईसी का कड़ा विरोध करते वक्त अचानक उनका माइक बंद हो गया। भारतीय राजनयिक इन विवादास्पद परियोजनाओं के खिलाफ नई दिल्ली की आपत्तियों के बारे में बता रहीं थीं। भारतीय राजनयिक के संबोधन के दौरान माइक में अचानक गड़बड़ी आ जाना इस लिए भी सवालों के घेरे में आ गया है क्योंकि इस बैठक की मेजबानी खुद चीन कर रहा। बैठक के बीच में अचानक माइक में गड़बड़ी आ जाने

से ऊहापोह की स्थिति उत्पनन्न हो गई और उसे ठीक करने में कई मिनट लगे। यहां तक कि अगले वक्ता का वीडियो स्क्रीन पर शुरू हो गया लेकिन इसे संयुक्त राष्ट्र अवर महासचिव लियू झेनमिन ने रोक दिया, जो चीन के पूर्व उप विदेश मंत्री हैं। झेनमिन ने भारतीय राजनयिक एवं यहां भारतीय दूतावास में द्वितीय सचिव प्रियंका सोहनी से अपना भाषण जारी रखने का आग्रह किया।

सम्मेलन कक्ष में माइक सिस्टम बहाल हो जाने के बाद झेनमिन ने कहा, 'प्रिय प्रतिभागियों, हमें खेद है। हम कुछ तकनीकी समस्याओं का सामना कर रहे थे और अगले स्पीकर का वीडियो शुरू कर दिया। इसके लिए मुझे खेद है और सोहनी से अपना भाषण बहाल करने को कहा।' उन्होंने सोहनी से कहा, 'आप भाग्यशाली हैं...आपका फिर से स्वागत है।

अफगानिस्तान को मानवीय सहायता भेजने के लिए तैयार हुआ भारततालिबान ने किया दावा- मॉस्को फॉर्मेट में भरी हामी

काबुल (एजेंसी)। तालिबान ने बुधवार को कहा कि भारत अफगानिस्तान को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए तैयार हो गया है। तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि भारत ने मॉस्को फॉर्मेट डायलॉग में अफगानिस्तान को मानवीय सहायता भेजने की बात कही है। हालांकि, मुजाहिद के इस दावे पर भारत की ओर से अभी तक कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। बता दें कि मॉस्को फॉर्मेट डायलॉग में भारत, चिन पाकिस्तान समेत कुल 10 देश शामिल हैं। तालिबान के प्रवक्ता ने ट्वीट किया, 'मॉस्को फॉर्मेट डायलॉग में भारतीय दूत ने

कहा कि अफगानिस्तान के लोगों को मानवीय सहायता की जरूरत है। अफगानिस्तान एक कठिन स्थिति से गुजर रहा है। भारत अफगानिस्तान को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए तैयार है।' विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी जेपी सिंह अफगानिस्तान पर मॉस्को फॉर्मेट डायलॉग में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मुजाहिद के अनुसार, इस्लामिक अमीरात के तालिबान प्रतिनिधिमंडल ने जेपी सिंह से मुलाकात भी की है।

मुजाहिद ने ट्वीट में कहा 'अफगानिस्तान के डिप्टी पीएम मौलवी अब्दुल सलाम हनफी के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान के लिए भारत के विशेष प्रतिनिधि जेपी सिंह और उनके साथ आए प्रतिनिधिमंडल के साथ मॉस्को फॉर्मेट बैठक के मौके पर मुलाकात की। मुजाहिद ने आगे कहा कि दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025